वैश्विक संवाद

8.2

17 भाषाओं में प्रति वर्ष में 3 अंक

जॉन होलोवे के साथ समाजशास्त्र पर बातचीत

लेबिनोत कुनुशेव्की

नवउदार थिंक टैंक

करीन फिशर
डाइटर प्लेहवे
इलेन मैकक्यून
हरनन रैमिरज
मेथियस किपिंग

संकट में देखभाल

हिडी गॉटफ्राइड
जेनेफर जिह्वे चुन
फियोना विलियम्स
क्रिस टिली
निक थियोडोर
सैबरीना मरचेती
हेलमा लुट्ज
यूयेन टिओ
पेइ चिया लेन
शर्मिला रूद्रप्पा
हेलन श्वेनकेन

सैद्धांतिक दृष्टिकोण

हार्टमुट रोजा
जैस्मिका लजन्जक

खुला अनुभाग

> चीन के रियल एस्टेट डेवलपर्स और किसान प्रतिरोध

> *वैश्विक संवाद* की रोमानियाई टीम का परिचय

पत्रिका

अंक 8 / क्रमांक 2 / अगस्त 2018
http://globaldialogue.isa-sociology.org/

GD

International Sociological Association

> संपादकीय

बाजारी रूढ़िवाद और नव उदारवाद दुनिया के कई हिस्सों में रोजमर्रा की जिंदगी और अनुभवों को प्रभावित कर रहा है। धन, बाजार और नवउदार विचार विभिन्न सुपरा–, अन्तर–, पार– और राष्ट्रीय संदर्भो की समकालीन राजनीति के केन्द्र में स्थित हैं। यह अंक अपने समय की इन प्रमुख प्रवृतियों पर दो चिन्तनों से प्रारम्भ होता है। एक साक्षात्कार में, पूंजीवाद के प्रेरक और गहन आलोचक जॉन होलोवे धन की विध्वंसक शक्ति, वित्तीय पूंजीवाद की गतिकी और यूरोपीय संघ के समस्यात्मक घटनाक्रमों पर चर्चा करते हैं। लेकिन फिर भी वे इस पर जोर देते हैं कि एक अन्य समाज संभव है। नवउदार थिंक टैंकों की प्रथम संगोष्ठी के लेखक हमें स्मरण करातें हैं कि नवउदारवाद स्व–नियामक बाजारों के उदार विचारों की शक्तिशाली परंपरा को दर्शाता है।यद्यपि हमें अपने दैनिक जीवन में इसके बारे में पता नहीं चलता, नवउदारवादी थिंक टैंक इस विचार के प्रभावी हिमायती हैं। अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ में इस प्रघटना पर शोध करने वाली समाजशास्त्री करीन फिशर ने लेखों का एक संग्रह तैयार किया है, जो यह दिखाता है कि कैसे ये थिंक टैंक कार्य करते हैं और समाज को प्रभावित करते हैं।

पिछले दशक में देखभाल और देखभाल कार्य ऐसा मुद्दा बन गया है जिसने समाजशास्त्रीयों का अधिकाधिक ध्यान आकर्षित किया है। हमारे द्वितीय संगोष्ठी के लिये इस क्षेत्र की जानी–मानी शोधकर्ता हेदी गॉटफ्राइड एवं जेनिफर जिह्ये चुन, ने दुनिया भर से इस क्षेत्र की जानीमानी शोधकर्ता देखभाल एवं देखभाल कार्य के होने वाले गहन एवं दूरगामी परिवर्तनों पर चिंतन करने वाले लेखों का एक संग्रह तैयार किया है। इस विषय के कई आयाम–नवीन देखभाल बाजार, देह का बाजारीकरण, परिवार एवं जेण्डर की बदली व्यवस्थाएँ, प्रवसन एवं वैश्विक देखरेख श्रंखलाएँ, समकालीन पूंजीवाद और जेण्डर, प्रजाति एवं वर्ग के सम्बन्धों के रूपान्तरण से आधारभूत रूप से जुड़े हुये हैं। इसके अतिरिक्त हम घरेलू अधिकार के शोध नेटवर्क जो इस क्षेत्र में बेहतर कार्यदशा के लिए सफलतापूर्वक संघर्ष कर रहे समाज वैज्ञानिकों एवं सक्रिय कार्यकर्ताओं का प्रभावी पारदेशीय प्रयास है, को भी प्रस्तुत कर रहे हैं।

गत वर्षों में, जर्मन समाजशास्त्री एवं सामाजिक दार्शनिक हार्टमूट रोसा ने आधुनिक पूंजीवादी समाजों का इनके कुछ मुख्य सिद्धान्तों जैसे लगातार तेजी से बढ़ने की आवश्कता, बढ़ने और प्रतिस्पर्धा करने की आवश्यकता की आलोचना की है। विशेष रूप से अनुनाद या अनुनाद के अभाव पर उनकी थीसिस की हमारे समय की एक बडी समस्या में से एक, के रूप में व्यापक चर्चा हुई है। इस अंक में वे अनुनाद की अपनी अवधारणा पर अन्तदृष्टि प्रदान करते हैं।

इसके अलावा, जैस्मिंका लजन्जक, जो क्रोएशियाई समाजशास्त्र संध की अध्यक्ष है, के साथ साक्षात्कार पूर्वी और दक्षिणपूर्वी यूरोप के घटनाक्रमों और समाजशास्त्र के समक्ष चुनौतियों पर प्रकाश डालता है। एक अन्य लेख चीन में नगरीकरण के इर्दगिर्द संघर्ष का विश्लेषण करता है। और अंत में लेकिन कमतर नहीं, रोमानियाई दल वैश्विक संवाद के लिए अपने कार्य को प्रदर्शित करता है। ■

ब्रिजिट ऑलेनबॉकर एवं **क्लॉस डोरे**,
वैश्विक संवाद के संपादक

- *वैश्विक संवाद* आई.एस.ए वेबसाइट पर 17 भाषाओं में देखा जा सकता है।
- प्रस्तुतियाँ <globaldialogue.isa@gmail.com> पर भेजी जा सकती है।

International Sociological Association

GLOBAL DIALOGUE

> संपादक मण्डल

संपादक : ब्रिजिट ऑलेनबॉकर, क्लॉस डोरे

सह–सम्पादक : जोहाना ग्रबनर, क्रिस्टीन शिकर्ट

सहयोगी सम्पादक : अर्पणा सुन्दर

प्रबंधन संपादक : लोला बुसुतिल, अगस्त बागा

सलाहकार : माइकल बुरावे

मीडिया सलाहकार : गुस्तावो तनीगुती

परामर्श संपादक :
मार्गरेट अब्राहम, मार्कस शुल्ज, साडी हनाफी, विनिता सिन्हा, बेंजामिन टीजेरीना, रोजमेरी बारबरे, इजाबेला बरलिंस्का, डिलेक सिंडोग्लू, फिलोमिन गुतिरेज, जॉन होल्मवुड, गुइलेरमिना जसो, कल्पना कन्नबीरन, मरीना कुर्कचियान, साइमन मैपडिमेंग, अब्दुल–मुमिन साद, आयसे सकतांबर, सेली स्कालोन, सावाको शिराहेस, ग्राज्येना स्काप्सका, इवेंजिलीया तस्तसोग्लू, चिन–चुन यी, ऐलेना ज्ड्रावोमीयस्लोवा

क्षेत्रीय संपादक

अरब दुनिया : साड़ी हनाफी, मौनीर सैदानी

अर्जेन्टीना : जुआन इग्नासियो पियोवानी, पिलर पी पुइग, मार्टिन उर्तासुन

बंग्लादेश : हबीबुल हक खोंडकर, हसन महमूद, जुवेल राणा, यूएस रोकेय अख्तर, तूफिका सुल्ताना, असिफ बिन अली, खैरून नाहर, काजी फदिया एशा, हेलल उदीन, मुहिमिन चौधरी

ब्राजील : गुस्तावो तनिगुती एंड्रेजा गली, लुकास अमरल ओलिविरा, बेनो वार्केन, एंजेलो मार्टिन्स जूनियर, दिमित्री सेर्बोनीनी फर्नाडीस।

फ्राँस / स्पेन : लोला बुसुतिल

भारत : रश्मि जैन, ज्योति सिडना, प्रज्ञा शर्मा, निधी बंसल।

इंडोनेशिया : कमांतो सुनार्तो , हरि नुग्रोहो, लूसिया रतीह, कुसुमादेवी, फिना इट्रियती, इंदेरा रत्ना इरावती पटि्टनसारानी, बेनेडिक्टस हरि जूलियावान, मोहम्मद शोहीबुद्दीन, डोमिंगगस एलसीड ली, एंटोनियस एरियो सेतो हार्डजाना, डायना तेरेसा पाकासी, नुरूल ऐनी, गेगर रियांतो, आदित्य प्रदान सेतियादी।

ईरान : रेयहाने जावदी, नियाश डॉलाती, सिना बस्तानी, सैयद मोहम्मद मुतालेबी, वाहिद लेन्जानगदे।

जापान : सतोमी यामामोतो, सारा मेहारा, मसातका एगुची, यूको मसुई, रिहो तनाका, मेरी यायामोतो, कओरी हाचिया, अयाना कानेयुकी, एरिका कुगा, काया ओजावा, त्सुकासा शिबागकी, मिचियाकी युआसा।

कजाकस्तान : अइगुल जाबिरोवा, बायन स्मागमबेट, आदिल रोदियोनोव, अल्माश त्लेसपयेवा, कुआनिश टेल

पौलैंड : जेकब बारस्जेवस्की, इवोना बोजादजिजेवा, कतार्जीना देवस्का, पोलिना दोमागलस्का, लुकास्ज दुलनियाक, करजिस्तोफ गुबांस्की, सारा हरस्जींस्का, जस्तिना कोसिंस्का, कैरोलीना मिकोलजेवस्का–जाजक, एडम मुलर, जोफिया पेन्जा–गेबलर, एलेक्सांड्रा सेन, अन्ना वांडजेल, जासेक जिच।

रोमानिया : कोसिमा रूधिनिस, राइसा–गेब्रियला जमीफिरेस्कू, मारिया लोरेडाना आर्सेन, देनिसा दान, डायना एलेक्सेंड्रा डुमित्रेस्कु, राडू डुमिस्ट्रेस्कू, युलिआन गेबर, डेन गितमान, अलीना होरे, एलेक्सांड्रा इरिमि–एना, क्रिस्टिआना लोट्रिया, एंडा–ओलिविया मारिन, बियांका मिहायला, एंड्रिया ऐलेना मोल्दोवीनु, ओना–एलेना नेग्रिया, मिओआरा पराशिव, कोद्रुत पिनजारू, सुसाना मरिया पोपा, एलेना ट्युडर।

रूस : ऐलेना ज्द्रावोम्यस्लोवा, अनास्तासिया दौर, वेलेंटीना इसाऐवा।

ताईवान : जिंग–माओ हो।

तुर्की : गुल कोरबासियोग्लू, इरमक एवरेन।

जॉन होलोवे, *अग्रणी मार्क्सवादी समाजशास्त्री और विचारक, मानव गरिमा की पारस्परिक अभिज्ञान पर आधारित समाज के निर्माण की संभावनाओं के बारे में चर्चा करते हैं और हमें अपनी रचनात्मक शक्ति को धन के प्रभुत्व से मुक्त कराने की याद दिलाते हैं।*

*(वैश्विक) राजनैतिक निर्णय लेने पर **नवउदार थिंक टैंकों** का प्रभाव बढ़ रहा है। यह परिचर्चा नवउदार थिंक टैंक नेटवर्कों की जड़ों एवं विकास का पीछा करती है और दुनिया भर में उनके राजनैतिक सामाजिक और आर्थिक प्रभावों की जाँच करती है।*

*यह परिचर्चा **देखरेख और घरेलू कार्य** के क्षेत्र में आवश्यक मुद्दों पर प्रकाश डालती है। दुनिया भर से विद्वान श्रम के इस क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों, सीमापार घरेलू श्रमिकों के संघटन और संतोषजनक कार्य स्थितियों के लिए वर्तमान संघर्ष के बारे में रिपोर्ट करते हैं।*

GD

सेज प्रकाशन की उदार ग्रांट से
वैश्विक संवाद का प्रकाशन संभव है।

> इस अंक में

संपादकीय 2

> समाजशास्त्र पर बातचीत

पूंजीवाद: मानवता का अनिश्चित भविष्य
जॉन होलोवे के साथ एक साक्षात्कार
लेबिनोत कुनुशेव्की द्वारा 5

> नवउदार थिंक टैंक

नवउदार थिंक टैंक नेटवर्क
करीन फिशर, आस्ट्रिया द्वारा 8

एटलस नेटवर्क : मुक्त बाजार थिंक टैंको से दुनिया को भरना
करेन फिशर, आस्ट्रिया द्वारा 10

जटिलता एवं सरलीकरण: यूरोपीय नीति थिंक टैंक
डाइटर प्लेहवे, जर्मनी द्वारा 12

जलवायु की उपेक्षा के कॉर्पोरेट मालिक
इलेन मैकक्यून, आस्ट्रेलिया द्वारा 14

ब्राजील में नव उदरवाद थिंक टैंक नेटवर्क
हरनन रैमिरज, ब्राजील द्वारा 16

परामर्शी थिंक टैंक : विपणन या आधिपत्य के एक साधन ?
मेथियस किपिंग, कनाडा द्वारा 18

> संकट में देखभाल

सीमापार देखरेख: देखरेख एवं देखरेख कार्य में रूपान्तरण
हिडी गॉटफ्राइड, यू.एस.ए. एव जेनेफर जिह्वे चुन, कनाडा द्वारा 20

देखभाल में एक वैश्विक संकट?
फियोना विलियम्स, यू.के. द्वारा 22

आई.एल.ओ. में घरेलू श्रमिकों के लिये सम्मानीय कार्य
पर मानक व्यवस्था
अडेले ब्लैकेट, कनाडा द्वारा 24

घरेलू श्रमिक आयोजन का अन्तर्निहित इतिहास
क्रिस टिली, यू.एस.ए., जॉर्जिना रोजास, मैक्सिको
और निक थियोडोर, यू.एस.ए द्वारा 26

वैतनिक घरेलू श्रम का वैश्विक शासन
सैबरीना मरचेती, इटली द्वारा 29

पुरूषत्व एवं पितृत्व: प्रवासी महिलाओं के पीछे रह गये साथी
हेलमा लुट्ज, जर्मनी द्वारा 31

सिंगापुर, बच्चों को बडा करने के लिये
एक बहुत अच्छी जगह... किसके लिये? 33
यूयेन टिओ, सिंगापुर द्वारा

जापान में प्रवासी देखभाल श्रमिकों की भर्ती और प्रशिक्षण
पेइ चिया लेन, ताइवान द्वारा 35

दैनिक श्रम के रूप में गर्भावस्था और प्रसव
शर्मिला रूद्रप्पा, यू.एस.ए. के द्वारा 37

घरेलू श्रमिकों के अधिकारों के लिये शोध नेटवर्क
सबरीना मरचेती, इटली और हेलन श्वेनकेन, जर्मनी द्वारा 39

> सैद्धांतिक दृष्टिकोण

समाजशास्त्रीय अवधारणा के रूप में अनुनाद का विचार
हार्टमुट रोजा, जेना विश्वविद्यालय, जर्मनी द्वारा 41

बाल्कनीकरण के विरूद्ध सहयोग का समाजशास्त्र :
जैस्मिंका लजन्जक के साथ एक साक्षात्कार
लेबिनोत कुनुशेव्की कोसोवा द्वारा 45

> खुला अनुभाग

शक्तिशाली बाहरी व्यक्ति:
चीन के रियल एस्टेट डेवलपर्स और किसान प्रतिरोध
युए दु, विसकंसिन. मैडिसन विश्वविद्यालय, यू.एस.ए. द्वारा 48

वैश्विक संवाद की रोमानियाई टीम का परिचय 50

"हमारे पास एकमात्र वैज्ञानिक प्रश्न बचा है : हम यहाँ से कैसे बाहर निकलें? मानवीय स्वविनाश की तरफ अंधाधुंध दौड़ को कैसे रोकें? मानवीय गरिमा की पारस्परिक अभिज्ञान पर आधारित समाज की रचना कैसे करें?"

जॉन होलोवे

> पूंजीवाद, मानवता का अनिश्चित भविष्य

जॉन होलोवे के साथ एक साक्षात्कार

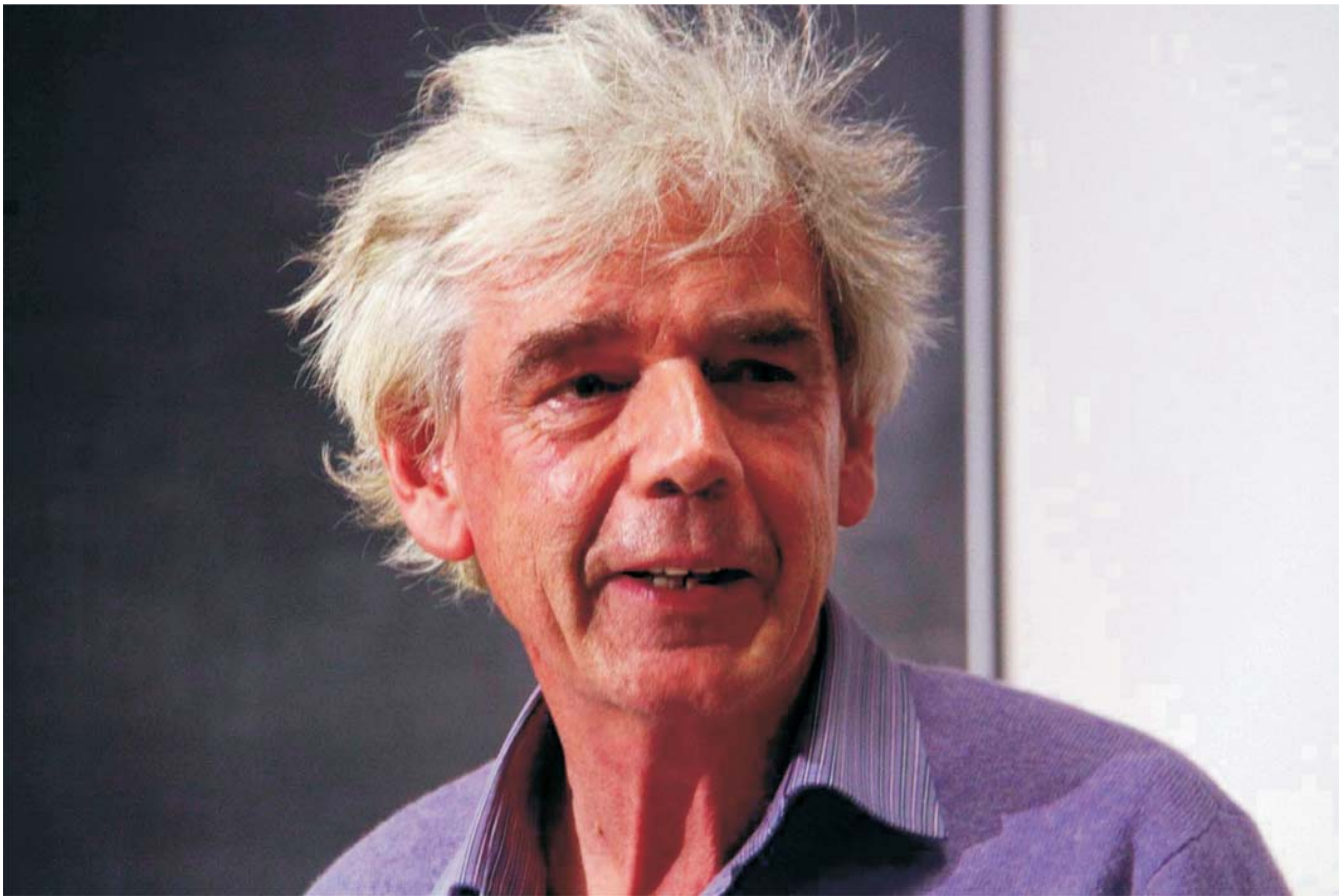

जॉन होलोवे

जॉन होलोवे स्वायत प्यबेलो विश्वविद्यालय, मैक्सिको में समाजशास्त्र के प्रोफेसर हैं। इन्होंने मार्क्सवादी सिद्धान्त, जापतिस्ता आन्दोलन एवं पूंजी विरोधी संघर्ष के नये स्वरूपों पर व्यापक रूप से लिखा है। उनकी पुस्तक चेंज द वर्ल्ड विदाउट टेकिंग पावर (2002 नवीन संस्करण 2010) का ग्यारह भाषाओं में अनुवाद किया गया है और उसने एक अन्तराष्ट्रीय बहस को छेड़ा है। उनकी नवीनतम पुस्तक क्रेक केपिटलिज्म (2010) यह सुझाव देते हुए इस तर्क को आगे ले जाती है कि हम आज आंदोलन की कल्पना सिर्फ पूंजीवाद वर्चस्व में दरारों के बनने, विस्तृत होने, गुणा और मेल होने के रूप में ही कर सकते हैं। यह साक्षात्कार प्रभावी सिद्धान्त पर प्रोजेक्ट, जिसका विख्यात समाजशास्त्रीयों के साथ संवाद कर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र के मध्य परस्परछेदन का पता करने का लक्ष्य है, का एक भाग है। इसे **लेबिनोत कुनुशेव्की**, आई एस ए जूनियर समाजशास्त्र नेटवर्क के सहयोगी सदस्य, जिनके पास प्रिस्टीना विश्वविद्यालय, कोसोवा से समाजशास्त्र में स्नात्तकोत्तर की डिग्री है,ने संचालित किया।

>>

एल.के. : विश्व के एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में और वैश्विक असामानता को अग्रेषित करने वाले घटनाक्रमों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने का प्रयास करने वाले अनेक सिद्धान्त हैं। आप आज के समय में मार्क्सवाद की भूमिका का आकलन कैसे करते हैं और मार्क्सवाद और मार्क्सवादियों का भविष्य क्या है?

जे.ए.: हमारे पास जो वैज्ञानिक प्रश्न बचा है वह है: हम यहाँ से कैसे बाहर निकले? हम मानवीय आत्म–विनाश की तरफ बढ़ने की होड़ को कैसे रोकें? हम मानवीय गरिमा के पारस्परिक मान्यता पर आधारित समाज की रचना कैसे करें?

अन्य शब्दों में, यह इस या अन्य विचारधारा का प्रश्न नहीं है। हमें यह कह कर प्रारम्भ करना होगा कि हमारे पास उत्तर नहीं है; हमें नहीं पता कि अत्यावश्यक समाजिक रूपान्तरण कैसे लाया जाये और वहाँ से सोचना होगा। मार्क्सवादी विचार परम्परा में भी उत्तर नहीं है लेकिन इसमें प्रश्न करने की योग्यता है, क्रांति का प्रश्न । और जहाँ तक भविष्य का सवाल है, मुझे नहीं पता। लेकिन दुनिया भर में सामाजिक आक्रोश बढ़ रहा है और यदि यह कट्टरवादी सामाजिक रूपान्तरण की तरफ अभिमुखित दिशा नहीं लेता है तो भविष्य वास्तव में अंधकारमय है। इस रूप में मार्क्सवाद (या किसी प्रकार का क्रांतिकारी सिद्धान्त) मानवता के भविष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

एल.के.: डेली–मेल के इस लेख के अनुसार,अनावरण किये गये नये दस्तावेज उजागर करते है कि चीनी उद्योग ने प्रख्यात हार्वर्ड वैज्ञानिकों को हृदय रोग का मुख्य कारण चीनी नहीं बल्कि वसा है, वाली शोध प्रकाशित करने के लिए भुगताग किया और उन्हें भ्रष्ट किया। पूंजीवादी लाभ के लिए अकादमिक जमीर के भ्रष्टचार को आप कैसे समझाते हैं?

जे.एच. : धन के प्रभुत्व वाली दुनिया में, व्यवस्था की कार्यप्रणाली में भ्रष्टाचार निहित होता है और उसमे अकादमिक कार्य भी सम्मिलित हैं। लेकिन समस्या आप जैसा बता रहें हैं उन भ्रष्टाचार के स्पष्ट मामलों की ही नहीं है, बल्कि उन सभी अकादमिक और सामाजिक ताकतों, अनुसारवाद जो हमें ऐसे समाज को स्वीकार करने के तरफ धकेलता है जो हमें मार रहा है, की है। शायद इस साक्षात्कार को पढ़ने वाले लगभग सभी लोग, छात्र या फिर प्राध्यापक के रूप में अकादमिक गतिविधीयों से जुड़े होगें। हमारे सामने जो चुनौती है वह इन गतिविधियों को इतनी अश्लील, इतनी विनाशकारी व्यवस्था के खिलाफ बदलना है। ऐसा हमें हमारे संगोष्ठी चर्चाओं में, हमारे द्वारा लिखे गये निबन्ध या लेखों में, सब में करना चाहिए।

एल.के.: मैं शक्ति की विभिन्न स्थितियों से जुड़े पुरुषत्व के प्रश्न में रूचि रखता हूँ। राइविन कॉनेल के साथ मेरे एक साक्षात्कार में उन्होनें कहा: इसकी व्याख्या करने के लिए आर्थिक शक्ति वाले लोगों और राज्य शक्ति वाले लोगों के कार्यकलापों में जेण्डर पक्ष को देखना महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार एंथोनी गिडिन्स ने मेरे द्वारा लिये गये एक साक्षात्कार में कहा: "वैश्विक वित्तीय संकट जो अभी भी पूरी तरह से हल होने से बहुत दूर है– कुछ विशेषताएँ दर्शाता है, जिसमें जेण्डर पक्ष भी सम्मिलित है। ऐसा विश्व पूंजी बाजार में खेलने वालों के आक्रामक व्यवहार में आवेशित पौरूष की भूमिका को देख कर पता चलता है।" विश्व पूंजी बाजार में खेलने वालों की भूमिका और आर्थिक शक्ति के साथ पुरूषत्व के सम्बन्ध के बारे में आप के क्या विचार हैं?

जे.एच.: यह एक रोचक प्रश्न है। मेरे विचार में, मैं इन प्राक्थ्थनों को विपरीत दिशा में पढूँगा। वित्तीय संकट में विश्व पूंजी बाजारों में खेलने वालों का आक्रामक व्यवहार कर्ताओ के जेण्डर का परिणाम नहीं अपितु उल्टा था। आक्रामक व्यवहार धन की प्रकृति और उसके निरन्तर, अनवरत स्व–विस्तार की मुहिम का परिणाम था। आक्रामकता इस बात की संभावना अधिक पैदा करती है कि उसके सबसे प्रभावी बाध्यकारी सेवक पुरूष होगें, सिर्फ इसलिए कि ऐतिहासिक रूप से हमारे समाज के संगठन ने इस प्रकार के व्यवहार को महिलाओं से अधिक पुरूषों में प्रोत्साहित किया है। जब तक धन अस्तिव में रहेगा, वे लोग जो इसके विस्तार मे अपना जीवन समर्पित करेंगे, उनका लिंग चाहे कोई भी हो, वे आक्रामक रहेगें। मर्दाना आक्रामकता के रूप में पहचाने जाने वाले व्यवहार से दुटकारा पाने के लिए अपने सामाजिक सम्बन्धों से भिन्न, अधिक समझदार आधार पर स्थापित धन से छुटकारा पाना होगा।

एल.के.: हम ऐसे जिम्मेदार पूंजीवाद के प्रकार को कैसे सृजित कर सकते हैं, जिसमें धन का सृजन सामाजिक जरूरतों के साथ जुड़ा हो?

जे.एच.: यह असंभव है। पूंजी मानवीय आवश्यकताओं द्वारा प्रेरित धन अर्जन की अस्वीकृति है। मूल्य के विस्तार अर्थात लाभ के द्वारा धन अर्जन पूंजी है। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि इस प्रकार धन अर्जन हमें आत्म–विनाश की तरफ ले जा रहा है।

एल.के.: रोनाल्ड इंगलहार्ट के वैश्विक मूल्य सर्वेक्षण के अनुसार, दो प्रकार की मूल्य प्रणालियाँ है: भौतिकवादी मूल्य व्यवस्था एवं पारंपरिक मूल्य व्यवस्था। आपकी पुस्तकों 'चेंज दी वर्ल्ड विदआउट टेकिंग पावर' एवं 'क्रेक कैपिटलिज्म' में व्यक्त विचार किस प्रकार इन दो मूल्य व्यवस्थओं मध्य उतार–चढाव की गतिशीलता की व्याख्या करते हैं और ये मूल्य व्यवस्था किस प्रकार पूंजीवाद निर्मित असमानता को प्रभावित करती हैं?

जे.एच.: मेरे विचार से यह मूल्य व्यवस्थाओं के मध्य संतुलन ढूढ़ने का प्रश्न नहीं है। हम एक ऐसी व्यवस्था में फँसे प्रतीत होते हैं जो अधिकाधिक हिंसक, अधिक शोषित अधिक असमान है। इसमें कोई मध्य मार्ग नहीं है, कोई सभ्य पूंजीवादी नहीं है, किसी प्रकार का समझौता नहीं है।

आपके करीबी पड़ोसी ग्रीकवासियों के अनुभव इसे पूर्ण रूप से स्पष्ट करते हैं। आपके द्वारा उल्लेखित पुस्तकों का तर्क यह है कि हमें पूंजीवाद को छोडना होगा, लेकिन हमें पता नहीं है कि यह कैसे करें, इसलिए हमें सोचना होगा और प्रयोग करना होगा। इसे राज्य के माध्यम से नहीं किया जा सकता है, जैसा कि युगोस्लाविया में आपके स्वयं के अनुभव और कई अन्य अनुभव स्पष्ट करते है। अतः हमें अन्य तरीके ढूढ़ने होगें। क्रैक कैपिटलिज्म में, मैं इन अन्य मार्गो को पूंजीवाद के बनावट में विद्यमान लाखों दरारों में,जीनवयापन के अन्य तरीकों के हजारों निर्माण के प्रयोग, चाहे वे जरूरत के कारण हो या फिर जीवन यापन के अन्य तरीके के निर्माण की जरूरत या सावचेत प्रयासों में ढूंढता हूँ और मैं इस निष्कर्ष पर आया हूँ कि हम

>>

अब इन दरारों के निमार्ण, विस्तार, गुणा और संगम के संदर्भ में ही क्रांति के बारे में सोच सकतें हैं।

एल.के.: क्या आप इस बात में विश्वास करते हैं कि एक समतावादी समाज संभव है?

जे.एच.: हाँ, लेकिन मैं इसे मुख्य मुद्दे के रूप में नहीं देखता हूँ। मुख्य मुद्दा यह है कि क्या हम अपनी गतिविधियों, अपनी सृजनशील शक्ति को धन के प्रभुत्व से मुक्त कर सकते है। क्या यह संभव है? मुझे आशा है ऐसा संभव है, क्योंकि मुझे मानवता के लिए और कोई भविष्य नहीं दिखाई देता है। शायद तुम्हें इस प्रश्न को अलग तरह से गढ़ कर इस तरह पूछना चाहिएः क्या आपको विश्वास है कि समाज के वर्तमान संयोजन के साथ बने रहना संभव है?जिस पर मेरा उत्तर होगाः शायद, लेकिनअल्पावधि के लिये ही, क्योकि यह संभावना है कि पूंजीवाद हमें खत्म करने में अधिक समय नहीं लेगा। दौड़ प्रारभ्म हैः क्या हम पूंजीवाद को उसके द्वारा हमारे खत्म से पहले अंत कर सकते है? मुझे इसका उत्तर नहीं पता है कि मैं किस तरफ हूँ।

एल.के. : यू.के. ने जनमत संग्रह द्वारा यूरोपीय संघ से बाहर निकलने के लिये मतदान किया है, जबकि यूरोप स्वंय कई चुनौतियो का सामना कर रहा है विशेष रूप से एक संरचनात्मक आर्थिक एवं राजनैतिक संकट। जोसफ स्टिगिलत्ज, अर्थशास्त्र के लिये नोबल पुरस्कार प्राप्त, ने इन चुनौतियों की बहुत अच्छी तरह व्याख्या की है। उन्होने कहा कि यू.एस.ए , आई.एम.एफ और विश्व बैंक के दबाब ने राष्ट्रों पर अपनी अर्थव्यवस्था का गैर उद्यौगीकरण कर सार्वजनिक संपत्तियों का निजीकरण करने की तरफ धकेला है और आसानी से नियन्त्रित होने वाले कुलीनतंत्र विकसित हुए हैं। वैश्विक सकंट के संदर्भ में यूरोप के अन्दर के और बाहर के देशों को यह कैसे प्रभावित करेगा?

जे.एच.: तुम्हारे आखिरी शब्द ''वैश्विक संकट'' महत्वपूर्ण है। जपातिस्तास ''तूफान'' (''ला तोरमेंटा'') के बारे में बात करते रहे हैं जो हमारे उपर है और आने वाले वर्षो में इसके और तीव्र होने की संभावना है। यह तूफान पूरे दुनिया में महसूस किया जा रहा है : ट्रम्प और ब्रेक्सिट इसका सिर्फ एक पक्ष है। हम इस से कैसे निपट सकते हैं? पूंजी के खिलाफ हमारे क्रोध को केन्द्रित करके और, अतिशीघ्र राष्ट्रवाद को अस्वीकार करने का हर संभव प्रयास करके। यूरोप में राष्ट्रवाद की वर्तमान वृद्धि डरावनी है। और इतिहास का सबक स्पष्ट हैः राष्ट्रवाद का अर्थ मृत्यु और मारकाट है और कुछ नहीं।

एल.के. : चूंकि कोसोवा एक छोटा देश है जो दस वर्ष पूर्व ही स्वतन्त्र हुआ था, हम सभी भी कई चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, विशेष रूप से वीसा उदारीकरण और इ.यू एकीकरण की प्रक्रिया में। यह पृथक्करण मुक्त गतिशीलता, अन्य यूरोपीय देशों एवं संस्कृतियों के साथ संपर्क, यूरोपीय बाजार के साथ एकीकरण, और यूरोपीय नौकरियों के अवसरों तक पहुॅच को बाधित कर रहा है, जबकि हमारी आबादी का 60 प्रतिशत 25 वर्ष की आयु से कम है। हमें यूरोपीय संघ के साथ एकीकरण और सम्बद्धता की आवश्यकता महसूस होती है। आप हमें क्या सुझाव दे सकते हैं कि कोसोवा को यूरोप के साथ एकीकृत करने के लिये हम क्या कर सकते हैं?

जे.एच.: ''यूरोपीय संघ से सम्बद्ध होना'' क्या ''यूरोप में एकीकृत होने'' के समान है? कदपि नहीं। यूरोपीय संघ नवउदारवाद द्वारा ढृढता से आकारित एक सत्तावादी संरचना है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि लोगों ने इसके खिलाफ प्रतिक्रिया की है, लेकिन इस अस्वीकृति का सबसे भयभीत करने वाला पक्ष है उसके साथ जुडा राष्ट्रवाद (उदाहरण के लिये ब्रेक्सिट में)। मेरे लिये यूरोपीय संघ का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है कि यह द्वितीय विश्व युद्ध के नरसंहार के बाद यह सीमाओं के विरूद्ध युद्ध से उपजा था। इसीलिये, यदि हमें यूरोपीय एकीकरण की श्रेष्ठता को जिन्दा रखना हैं हमें इसे बनाये रखना होगा। सरहदों के विरूद्ध युद्ध। कोसोवा के लिये इसका क्या अर्थ होगा? उसके अलावा, प्रवासियों के लिये, चाहे के यूरोप, मध्य पूर्व, अफ्रीका या कहीं से भी आयें, सरहदें खोलना। इस तरह आप अन्य देशों और संस्कृतियों के साथ संपर्क को प्रोत्साहित कर सकते हैं। इसी तरह आप जनसंख्या की 60 प्रतिशत आबादी जो 25 वर्ष की आयु से कम है के जीवन को समृद्ध कर सकते है। ■

सभी पत्राचार लेबिनोत कुनुशेव्की को <labinotkunushevci@gmail.com> और जॉन होलोवे को <johnholloway@prodigy.net.mx> पर प्रेषित करें।

> नवउदार थिंक टैंक नेटवर्क

करीन फिशर, जोहान्स केपलर विश्वविद्यालय, आस्ट्रिया द्वारा

नवउदार थिंक टैंक, सीमापार जुड़े हुए और संचालित

थिंक टैंक कई आकार और नाप में आते हैं। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि वे तादाद में बढ़ रहे हैं और उनका महत्व बढ़ रहा है। पूर्व में विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों के हित समूहों या सदस्यता संगठनों को पूरक करने वाले, वे आज राजनीति और नीति निर्माण में महत्वपूर्ण एजेंट बन गये हैं। थिंक टैंक मॉडल के उभार ने विश्वविद्यालयी बुद्धिजीवियों को सार्वजनिक राजनितिक बहसों में हाशिये पर धकेल दिया है। मीडिया में थिंक टैंक पेशेवरों ने विश्वविद्यालय प्रोफेसरों को विशेषज्ञ के रूप में प्रतिस्थापित कर दिया है।

थिंक टैंक पेशेवर स्वयं को तकनीकज्ञ संचालक, जो तटस्थ ज्ञान और सबूत आधारित दृष्टिकोंणों को समर्पित है, के रूप में

> >

प्रस्तुत करते हैं। इसके साथ ही थिंक टैंक की एक पारंपरिक अमरीकी समझ स्वतंत्र विशेषज्ञता और सार्वजनिक हित पर जोर देती है।

परन्तु प्रचार छवियों के विपरीत अधिकांश थिंक टैंक नीति उन्मुख होते हैं। नीति संबंधी दक्षता, परामर्श एवं प्रसार समर्पित संगठनों के रूप में, थिंक टैंक के रूप में कार्य करने की न्यूनतम आर्हता, और यह संपूर्ण परिभाषा नहीं है, वे चयनित ज्ञान को सुदृढ़, उत्पादित एवं चैनल करते है। क्रिटिकल थिंक टैंक (नेटवर्क) अध्ययनों की योग्यता इस बात को दर्शाने में रही है कि थिंक टैंक की दक्षता तटस्थ के बजाय राजनैतिक और तकनीकृत के बजाय विवादास्पद है। अकादमिक जगत, आर्थिक हितों, राजनीति और मीडिया के परस्परच्छेद पर स्थित थिंक टैकों को इस लिहाज से वरीयता, नागरिक समाज एवं वर्ग निमार्ण प्रक्रिया के भाग के रूप में देखा जा सकता है।

विशेष रूप से यह नवउदार पंथ दक्षिण की 'क्षमता निमार्ण' पर लागू होता है। 1970 के दशक की ''नवउदारवाद विरोधी क्रांति'' में मुक्त बाजार थिंक टैंक सामरिक रूप से अग्रिणी थे। तब से अच्छी तरह से विकसित नेटवर्को ने ''विचारों की लड़ाई'' में स्वयं को संलग्न किया है। और नवउदार पैराडाइम की सतत शक्ति में योगदान दिया है। सीमापार जुड़े एवं समन्वयित और अधिकांशतः अभिजन चरित्र के साथ, ये ज्यादा दर्शकों को जीतने का और राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शासकीय मुद्दों को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। वे कथानक को विकसित करने में काफी रचनात्मकता और कार्पोरेट धन को लगाते है और राजनीति को एक निश्चित दिशा में धकेलते हैं। सीमा पार राष्ट्रीय नवउदार वास्तुकला अभी तक प्रतिस्पर्धात्मक शक्तियों द्वारा बेजोड है, चूंकि शक्तिशाली कार्पोरेशन एवं अरबपति बडे पैमाने पर दक्षिणपंथी राजनीति की तरफ झुकाव वाले होते है। नवउदारवादी और नवरूढिवादी थिंक टैंक नेटर्वकों से उत्पन्न और जीवाश्म ईंधन, खनन एवं उर्जा उद्योग से वित्त पोषित मुक्त बाजार पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन, संदेहवाद इस का ज्वलंत उदाहरण है।

इस खण्ड में लेख थिंक टैंक प्रघटना के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हैं। करीन फिशर एटलस नेटवर्क के विकास को ट्रेस करती हैं और दिखाती हैं कि थिंक टैंक शोध को व्यक्तिगत संगठनों के अध्ययन के परे जाना चाहिए।

डाइटर प्लेहवे यूरोप में फैलते (नवउदार) थिंक टैंक परिदृश्य के अपने विश्लेषण में ''नेटवर्क उपागम'' (http://thinktanknetwork research.net/) को साझा करते हैं। प्लेहवे यूरोपीय संघ को नवउदारवादी और रूढ़िवादी लाइनों पर रूपान्तरित करने के प्रयासों में नीति थिंक टैंकों की राजनीति को प्रकाशित करतें हैं।

दो वैयक्तिक अध्ययन दिखाते है कि "विचारों के युद्ध" को किस तरह प्रचंड तरीके से पीछा किया जाता है। इलेन मैकक्यूवन आस्ट्रेलिया में जलवायु परिवर्तन खण्डन के क्षेत्र में एक नवउदारवादी थिंक टैंक के कार्य का वर्णन करते हैं। वे प्रभाव के व्यापक (कार्पोरेट) जाल को इंगित करती हैं और स्पष्ट करती हैं कि इनमें शामिल थिंक टैंकों संगठित नवउदार नेटवर्को में सदस्यथे। ब्राजील में, एटलस से सम्बद्ध "स्वतंत्रता संग्रामी" "वर्करस पार्टी" और दिलमा रूसेफ के राष्ट्रपति काल के खिलाफ मुख्य आयोजक बन गये थे। हरनान रमीरेज इन नये कर्त्ताओं की जड़ो को 1960 के दशक में खोजते हैं और ब्राजील एवं उसके आगे संगठित नवउदारवाद के नेटवर्को और पुराने थिंक टैंकों के साथ उनके संपर्क को दिखाते हैं।

अंत में, मैथियास किपिंग अपने लेख में थिंक टैंक मॉडल की चारित्रिक विशेषता, ज्ञान–हित साठ–गाँठ को छिपाने वाली एक चारित्रिक विशेषता का चतुर उदाहरण की चर्चा करते हैं। वाणिज्यिक वैश्विक सलाहकार फर्मे थिंक टैंको को बनाये रखने का खर्चा उठाती है। इस तरह वे प्रकट रूप से उनके गैर–लाभ चरित्र और वैध ''प्रमाण आधारित'' ज्ञान के दावे का लाभ उठाती है।

ये वैयक्तिक अध्ययन विवेचनात्मक थिंक टैंक शोध के लिए क्या सुझाव देते हैं? पहला, नीति या पक्षपातपूर्ण थिंक टैंको को व्यक्तियों, संगठनों और विचारों के पारदेशीय नेटवर्क के रूप में अध्ययन करना चाहिए। दूसरा, शोध को वैचारिक, वित्तीय, राजनीतिक एव अकादमिक प्रतिबद्धताओं के संदर्भ में नेटवर्क या थिंक टैंकों के पीछे प्रभाव और निर्वाचन क्षेत्रों के तर्क का पता करना चाहिये। तीसरा, इस विषय पर शोध को एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए एवं थिंक टैंकों को नागरिक समाज एवं वर्ग निर्माण प्रक्रियाओं में स्थित करना चाहिए। ■

> एटलस नेटवर्क

मुक्त बाजार थिंक टैंकों से दुनिया को भरना

करीन फिशर, जोहान्स केपलर विश्वविद्यालय, आस्ट्रिया द्वारा

लाभ अभिमुखन सिद्धान्तों द्वारा दुनिया के बारे में विचारों को परिवर्तित करते हुए।

एंटोनी फिशर, एक उच्चवर्ग परिवार से ब्रिटिश व्यवसायी, ने रीडर डाइजेस्ट में हायेक की "रोड टू सर्फडम" का सारांश पढ़ा और वह उसके प्रति उत्साहित थे। इस युद्धकालीन पुस्तक में एफ.ए. हायेक ने समाजवाद को फासीवाद के साथ जोडा है और सरकारी नियोजन, जो उनके विचार में अतः में दासता की तरफ ले जाता है, पर आक्रमण किया है। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात, फिशर राजनीति में जाना चाहते थे लेकिन हायेक ने उन्हें "राजनीति को भूलने के लिए मनाया। राजनेता सिर्फ मौजूदा विचारों का पालन करतें हैं। यदि आप घटनाओं को बदलना चाहते हैं, तो आपको विचारों को बदलना होगा।" अन्य शब्दों में अकादमिक लोगों, शिक्षकों, विचारकों, लेखकों पत्रकारों को राजी कर लें और राजनीतिज्ञ उसका अनुसरण करेगें। इस तरह से थिंक टैंक मॉडल का जन्म हुआ।

विधि के शासन तहत मुक्त बाजारों, सीमित सरकार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के विचार को फैलाने के उद्देश्य से एक संस्थान का निर्माण करने हेतु हायेक को इससे बेहतर साथी नहीं मिल सकता था। फिशर ने 1995 में लंदन में इंस्टीट्यूट ऑफ इकोनोमिक अफेयर्स (आई.ई.ए) की स्थापना की जिसने, जैसा कि उसके एक अध्यक्ष ने कहा, राजनैतिक प्रतिष्ठानों पर वैचारिक हमला बोल दिया। समय के साथ, आई.ई.ए. ने टोरी दल के सदस्यों को नवउदारवादियों में परिवर्तित कर दिया। इसने मार्गेट थैचर के चुनावी मंच को तैयार किया एवं विशेष रूप से निजीकरण एवं विनिमयन के क्षेत्र में उनकी आर्थिक नीतियों को आकार देने में मदद की।

आई.ई.ए. की सफल स्थापना के बाद फिशर–जो इस बीच मोंट पेलरिन सोसाइटी (एम.पी.एस.) जैसे नवउदार अभिजन समाज से अच्छी तरह से जुड़ गये थे, ने अपनी काफी उर्जा नवउदार थिंक टैंको के विकास पर लगाई। अमेरिका में मेनहेट्टन संस्थान और नीति विश्लेषण राष्ट्रीय केन्द्र, कनाडा में फ्रेजर संस्थान और आस्ट्रेलिया का स्वतंत्र अध्ययन केन्द्र इन सब में फिशर का हाथ था। 1980 के दशक के प्रारम्भ का समय एक और आक्रमण के लिए सही था।

एटलस आर्थिक शोध फाउंडेशन, जो एटसल नेटवर्क के रूप में जाना जाता है, का लक्ष्य "दुनिया को मुक्त बाजार थिंक टैंकों से भर देना था।" ऐसा एटलस के एम.पी.एस. सदस्य, जॉन ब्लन्डेल ने

>>

कहा। 1981 में अपनी स्थापना के बाद, एटलस ने चिली से हांगकांग और आइसलैंड से घाना तक दुनिया भर के 90 से अधिक देशों में लगभग 475 संस्थाओं को प्रारम्भ या पोषित किया है। अधिकांश संगठन अमेरीका और यूरोप में स्थित है लेकिन लेटिन अमेरिका में 78 और पूर्व एवं दक्षिण पूर्व एशिया में 37 से अधिक कटटरपंथी बाजार समर्थक (https://www.atlasnetwork.org/partners/global-directory) थिंक टैंक है।

फिशर की उघमी पृष्ठभूमि और एम.पी.एस. संपर्कों ने उन्हें व्यापार नेताओं तक अच्छी पहुँच प्रदान की। निवेशक जॉन टेम्पलटन, कई सारे अन्य बैंक और जनरल इलैक्ट्रिक प्रारंभिक दानदाताओ में सें थे। फाइजर, प्रोक्टर एण्ड गैम्बल, शैल, एक्सान मोबिल, ब्रिटिश अमेरिकन टोबेको और फिलीप मोरिस फोर्च्यन 500 कार्पोरेशन में से है जिन्होंने उदार दानदाता का रूख अपनाया। राष्ट्र–पार पूंजी और स्थानीय आर्थिक समूहों या पारिवारिक फर्मों दोनों दुनिया के प्रत्येक क्षेत्र में एटलस सम्बद्ध थिंक टैंकों के लिए पर्याप्त वित्तीय आधार सुनिश्चित करते हैं। उदाहरण के लिए, राज्य कोष से स्वतंत्रता के लगातार दावों के बावजूद एटल्स सदस्यों को यू.एस. स्टेट विभाग और नेशनल एंडोमेंट फॉर डेमोक्रेसी (एन.इ.डी.) से धन प्राप्त हुआ है।

> कूटनीतिक सामरिक प्रति कृति एवं राष्ट्र–पार आयोजन

एटलस एक अम्ब्रेला संगठन की तरह कार्य करता है। एक और यह थिंक टैंक उद्यमियों को काफी उल्लेखनीय स्टार्ट–अप धन और सलाह उपलब्ध कराता है और उन्हें दानदाताओं से जोड़ता है। दूसरी तरफ, एटलस अपने सदस्यों को संयुक्त कार्यक्रमों जैसे प्रादेशिक लिबर्टी फोरम, यात्रा अनुदान और पुरस्कार के द्वारा एकजुट करता है। नेतृत्व एकेडमी और प्रबंधकारी वर्ग के लिए एक एम.बी.ए. पाठ्यक्रम विकसित कर यह थिंक टैंक गतिविधियों और दुनिया भर में फैले कार्मिकों के पेशेवर चरित्र को परिष्कृत करता है।

एटलस परिवार में विविध प्रकार के सदस्य हैं। इसमे "शुद्ध सिद्धान्त" का उत्पादन एवं उसे लोकप्रिय बानने वाले और जो ठोस राजनीति से दूरी बना कर चलने वाले थिंक टैंक हैं। इसके अच्छे उदाहरण वे हैं जो हयेक की सोच एवं आस्ट्रियाई अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों पर अपने ''विचारों के युद्ध'' को आधारित करते हैं। अन्य अधिक सार्वजनिक नीति उन्मुख करने वाले ''डू टैंक'' है जो परामर्श में सलग्न होते हैं और कई अन्य बौद्धिक गतिविधियों के परे जा कर, घुसपैठ, नकली समाचार और दूसरी तरफ के व्यक्तियों की निंदा में संलग्न हो, प्रत्यक्ष कार्यवाही पर अपना ध्यान केद्रित करते हैं। ब्राजील में नवउभार वाले एटलस से सम्बद्ध समूह जिन्होंने वर्कर्स दल और उसके प्रतिनिधियों के विरूद्ध सांस्कृतिक युद्ध को बढ़ावा देने और जारी रखने के युद्ध को भड़काया, इसके अच्छे उदाहरण है।

प्रारम्भ से, नवउदारवादी संस्था निर्माताओं का वैश्विक दृष्टिकोण था। व्यापार और निवेश के विरूद्ध अवरोधों को हटाना "महानगरीय पूंजीवाद" के उनके दिव्य स्वपन के लिए महत्वपूर्ण था। अक्सर अनदेखा किया गया, अन्तराष्ट्रीय कार्य क्षेत्र भी हर जगह नवउदार राज्य हस्तक्षेप का मार्गदर्शन करने के लिए महत्वपूर्ण था। 1980 के दशक के मध्य में एटलस ने पूर्वी यूरोप के राज्य–समाजवादी देशों में मुक्त बाजार विचारधारा का प्रचार और समान विचारों वाले बुद्धिजीवी मंडलों का निमार्ण करना शुरू कर दिया। 1980 और 1990 के दशक लेटिन अमेरिका और एशिया में थिंक टैंक गतिविधियों के लिए निर्णायक काल रहें हैं। संरचनात्मक समायोजन नीतियों ने अन्तर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय ऋण संकटों का अनुसरण किया। जहाँ स्वतंत्र विश्वविद्यालय अनुसंधान केंन्द्रों को इस संकट से पीडित होना पड़ा, पर्याप्त कर्मचारियों वाले थिंक टैंक मित्तव्यत्ता सम्बन्धित आर्थिक और सामाजिक नीति सलाह में संलग्न थें। ऐसा वैश्विक उत्तर में भी हुआ जहाँ 2007–08 के वैश्विक वित्तिय संकट ने मुक्त बाजार थिंक टैंकों का मितव्यत्तता राजनीति की वकालत करने के लिए आह्वान किया। इससे हम देख सकते है कि सत्ता परिवर्तन, संकट और राजनीति अंशाति थिंक टैंको को संसाधन एकत्रित करने और एजेंडा निश्चित करने के लिए उत्कृष्ट अवसर प्रदान करते हैं।

> एक सन्देश, कई आवाजें

वे महत्वपूर्ण विषय कौन से हैं जिन पर संगठित नवउदारवाद विचारों के युद्ध में सलंग्न होता है? एटलस स्वतंत्रता सेनानियों ने कल्याणकारी राज्य के खिलाफ समेकित प्रयासों को आयोजित कर आवास, सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्रों में परिसम्पति आधारित, निजीकृत कल्याण को बढ़ावा दिया।

सार्वजनिक नीति सलाह व्यापार अनुकूल तरीके से विनिमयन और पुनः नियमन पर केन्द्रित है, कम कर हमेशा लोकप्रिय होते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय "ठोस धन" अभियान कठोर मुद्रावादी सिद्धान्तों पर आधारित मौद्रिक सुधारों की वकालत करता है। डोनाल्ड ट्रम्प के आर्थिक सलाहकार के रूप में अभियान नेता जूडी शेल्टन की नियुक्ति (और उनके एन.ई.डी. के अध्यक्ष पद पर मनोनयन) से इन नीतिगत हस्तक्षेपों की मजबूत होने की संभावना है। वैश्विक दक्षिण में स्वामित्व अधिकारों को सुदृढ़ करने पर ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। निर्धन को नवाचारी उद्यमी के रूप में देखा जाता है जो आय के विभिन्न स्त्रोतों का शोषण करने के लिए प्रशिक्षित है। सिर्फ एक ही कार्य करना है वह है : नियमों का हटाना और सम्पति अधिकारों को बहाल करना। एटलस को गर्व है कि विश्व बैंक ने इस दृष्टिकोण को अपनाया है। बैंक का डूईंग बिजनेस इंडेक्स पूर्ण रूप से एटलस की नीति सिफारिशों का पालन करता है।

नवउदार नीति विवादास्पद है और स्वतंत्रता सेनानियों को प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है। एटलस परिवार के भीतर भी प्रतिरोध है लेकिन एटलस द्वारा निर्मित अन्तर्राष्ट्रीय नवउदार वास्तुकला फिशर के सामरिक प्रतिकृति के संस्थापक सिद्धान्त को पूरा करता है: एक संस्थान की आवाज एकत्व गायक की तरह प्रतीत होती है: एक तरह का राग जाने वाले कई संस्थानें जनमत और अंततः जन नीति प्रभावित करने वाले आवश्यक सहगान हैं। ■

सभी पत्राचार करीन फिशर को <Karin.Fischer@jku.at> पर प्रेषित करें।

> जटिलता एवं सरलीकरण

यूरोपीय नीति थिंक टैंक

डाइटर प्लेहवे, बर्लिन समाज विज्ञान केन्द्र (डब्लूजेडबी), जर्मनी द्वारा

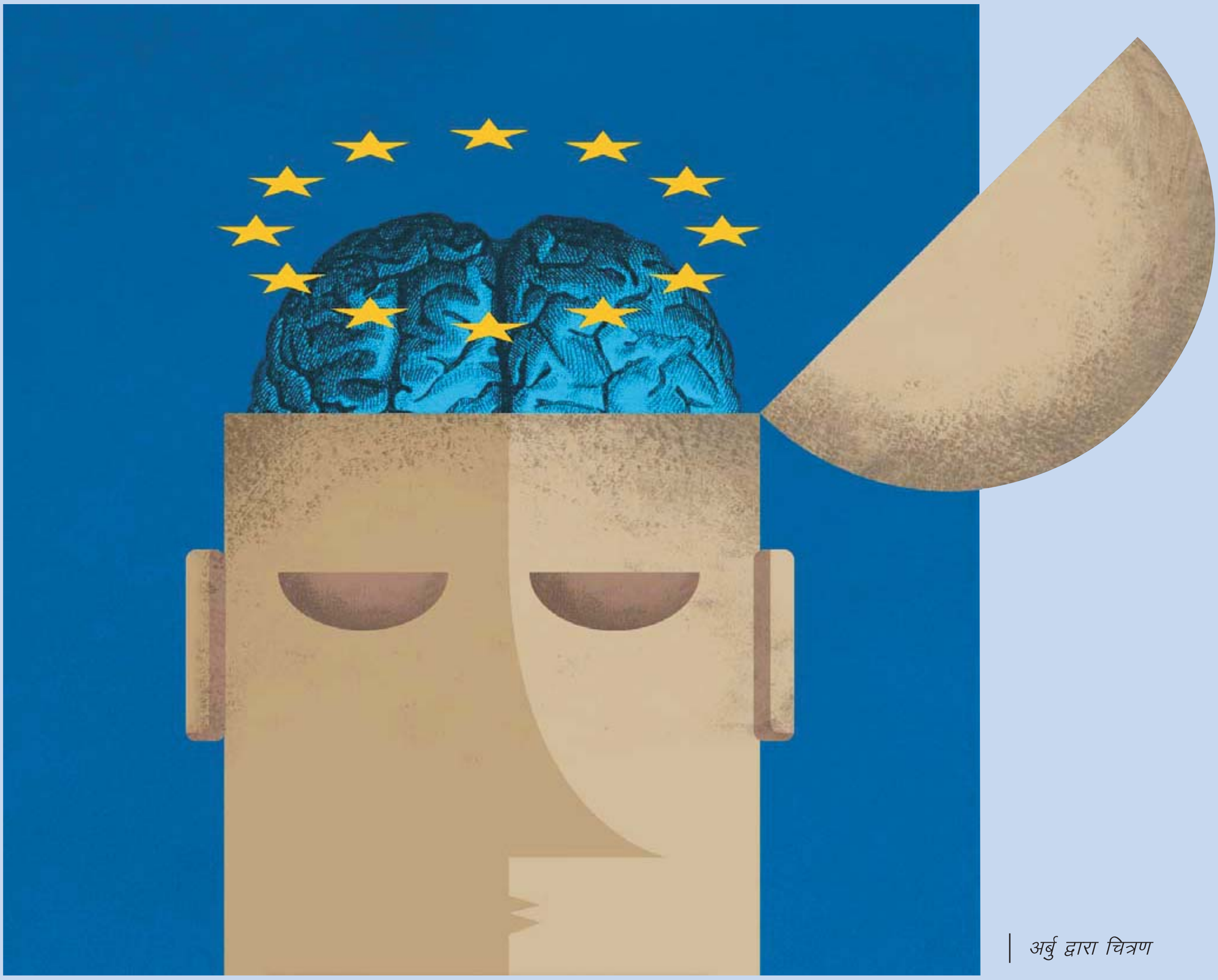

| *अर्बु द्वारा चित्रण*

नीति निर्माण की बढ़ती जटिलता को प्रमाणित करना सामान्य ज्ञान बन गया है। यह यूरोपीय संघ और अन्तर एवं पार –राष्ट्रीय समन्वय एवं सहयोग के अन्य क्षेत्रों के साझे एवं अतः स्थापित क्षेत्रोधिकारों के लिए विशेष रूप से सत्य है। बढती जटिलता अपना विपरीत : सरलीकरण चाहती है। समीकरण के निवेश पक्ष पर सार्थक प्रासंगिक ज्ञान को कैसे प्राप्त किया जाए और प्रासंगिक ज्ञान के प्रसार को कैसे दिशा दिखाई जा सकती है? यह कौन परिभाषित करेगा कि क्या एजेण्डा निर्माण के पात्र मे जायेगा और क्या रद्दी की टोकरी में जाएगा?

उसी समय, विशेषज्ञता पर बढ़ती निर्भरता ने विशेषज्ञता के राजनीतिकरण को बढ़ावा दिया है। यदि विवादस्पद मुद्दे विशेषज्ञता के स्तर पर निपटाये जायेगें, तो विवाद में निश्चित रूप प्रतिस्पर्धात्मक विशेषज्ञता सम्मिलित होगी, जो सरलीकरण के प्रयासों को जटिल बनाता है और उसमें प्रासांगिक अन्तर की छँटाई की आवश्यकता होगी।

यह स्पष्ट है : व्यापक रूप से फैली प्रचार छवियों के विपरीत, थिंक–टैंक सिर्फ, या फिर प्राथमिक तौर पर सबूत प्रदान करने के

> >

लिए अस्तित्व में नहीं हैं। प्रतिस्पर्धा थिंक टैंक नीति सम्बन्धी सबूत विभिन्न और अधिकतर विरोधी विषयों प्रोजेक्ट एवं विश्व दर्शन के लिए नीति सम्बन्धी सबूत प्रदान करते है।

> इ.यू. स्तर की प्रासंगिकता निर्माण

यूरोप सुपरानेशनल सौदेबाजी, निर्णय लेने और लॉबिंग के सहविकास के लिए जाना जाता है। लेकिन यूरोपीय संघ अकादमिक और नीति सम्बन्धी दोनों प्रकार की विशेषज्ञता बेचने का भी एक बड़ा क्षेत्र है। यूरोपीय परिषद मे बहुमत के मतदान और यूरोपीय संसद का सह–निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी के प्रभाव के बढ़ने से यूरोपीय संघ के साथ काउसिंल और यूरोपीय संसद दोनों ही प्रभाव के – बेचने के मुख्य क्षेत्र में बन गये हैं और सामान्य तौर पर कमजोर संस्थागत ढांचे और विशेष रूप से दक्षता के अभाव में यूरोपीय नीति क्षेत्र ज्ञान के बाह्य स्त्रोतों के लिए पूरी तरह से खुला है। उदाहरण के लिए, सैकडों यूरोपीय संघ स्तर के समूह स्थायी या अस्थायी तौर पर अस्तित्व में हैं।

इसमें कोई आश्चार्य नहीं है कि यूरोपीय हित समूह और थिंक टैंक दोनों की संख्या तेजी से बढ़ी है। वाणिज्यिक लॉबी के विपरीत, कई थिंक टैंकों के पास गैर लाभ चरित्र का और ज्ञान वैधता का दावे का लाभ भी है। जहां परिभाषा के तौर पर हित समूह के ज्ञान को पक्षपातपूर्ण माना जा सकता है, थिंक टैंक द्वारा उपार्जित ज्ञान को निष्पक्ष के रूप मे प्रस्तुत किया जा सकता है, चाहे वह अध्ययन किसी ग्राहक द्वारा स्पष्ट हित परिपेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए करवाया गया हो। थिंक टैंकों की सकारात्मक छवि और लॉबी समूहों की नकारात्मक छवि दोनों ने थिंक टैंकों की वृद्धि में सशक्त रूप से योगदान दिया है। ऐसा थिंक टैंकों कार्य और विस्तृत लॉबिंग के मध्य अतंरग सम्बन्ध होने के बावजूद हुआ है।

यदि यूरोपीय संघ के सदस्य देशों मे अधिकांश थिंक टैंकों को यूरोपीय एकीकरण के परिणामस्वरूप यूरोपीय नीति से मुद्दों पर काम करना पडता है, इयू मुद्दों को पूर्ण रूप से समर्पित थिंक टैंकों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। ऐसे संगठन का एक उदाहरण ब्रिटानी थिंक टैंक ओपन यूरोप है। लंदन, ब्रसल्स और बर्लिन मे अपने कार्यालय से यह यूरोपीय संघ को एकमात्र आर्थिक संघ के रूप में बढ़ावा देता है। ओपन यूरोप कई ब्रितानी व्यवसायों एवं टोरी राजनेताओं द्वारा समर्थित है। कई बाजार समर्थित थिंक टैंकों की तरह यह स्टोकहोल्म नेटवर्क, जो मध्य 1990 के दशक से 2009 तक, सौ से अधिक सदस्यों के साथ सबसे बड़े नवउदारवादी यूरोपीय थिंक टैंक नेटवर्क का ब्रितानी केन्द्र था, का भाग था। तबसे यह न्यू डायरेक्शन फॉउडेशन और उससे सम्बन्धित थिंक टैंक नेटवर्क अलायन्स ऑफ यूरोपीय कंजरवेटिव्स एण्ड रिर्फोमिस्ट द्वारा अनुगामित हुआ है। ब्रेक्सिट से दोनों पार्टी परिवार और फाउण्डेशन को नुकसान होगा, लेकिन ओपन यूरोप एवं न्यू डायरेक्शन फाउण्डेशन द्वारा यूरोपीय संघ को नवउदारवादी एवं रूढिवादी लाइन्स पर बदलने के लिये काम करने को जारी रखना संभावित है। ब्रेक्सिट के बाद चूंकि ब्रितानी हित समूहों की यूरोपीय निर्णय समूहों तक पहुंच खत्म हो जायेगी, उनके द्वारा वैकल्पिक चैनलों के उपयोग में वृद्धि होने की संभावना है जिसमें थिंक टैंक प्रमुख रूप से होगें।

विशिष्ट कार्यों को समर्पित कई अन्तर्राष्ट्रीय साझेदारी निष्क्रिय स्टाकहोल्म नेटवर्क से निकली है। उदाहरण के लिये राजकीय नियमन का विरोध करने और ''उपभोक्ता स्वतंत्रता'' को बढावा देने को लिए स्वीडिश थिंक टैंक टिम्ब्रों द्वारा प्रोत्साहित ''नैनी स्टेट सूचकांक का प्रभारी एपिसेंटर नेटवर्क। टिम्ब्रो 1970 के दशक के अंत से स्वीडिश व्यापार संघो द्वारा वित्तपोषित एक शक्तिशाली संगठन है और वह स्वीडन एवं यूरोप में उग्र नवउदारवादी वकालत के लिए जाना जाता है। टिम्ब्रों ने मित्तव्ययता, लचीलापन और सामान्य रूप में कल्याण राज्य के नवउदारवादी रूपांतरण के पीछे अपनी काफी शक्ति लगाई है।

> यूरोपीय एकीकृत ज्ञान को आकारित और चयन करना

यूरोपीय एकीकरण को बढ़ावा देने वाले बडे यूरोपीय थिंक टैंकों में एक जर्मन सेन्टर फॉर अपलाइड पोलिसी रिसर्च है। यह जर्मनी के सबसे बड़े निजी कार्पोरेट फाउण्डेशन बर्टलसमॉन फाउण्डेशन के वित्तीय एवं संगठनात्मक संसाधनों से लाभान्वित है लेकिन यह म्यूनिख की लुडविग मेक्सीमिलियन विश्वविघालय के संसाधनो का भी उपयोग करता है। एक अन्य उदाहरण फ्रांस के नोर्टे यूरोप है। इसे यूरोपीय संघ के पूर्व राष्ट्रपति जेक्यूस डेलर्स द्वारा स्थापित किया गया था। पेरिस और बर्लिन में स्थित, यह ''रिवोलविंग डोर'' का कार्य करने वाले थिंक टैंकों का उत्तम उदाहरण है : ब्रसल्स के पूर्व अदरूनी सूत्रों द्वारा स्थापित, यह युवा पेशेवरों को रोजगार के अवसर प्रदान कराता है।

अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र एवं यूरोपीय आर्थिक नीति क्षेत्र में सर्वाधिक प्रख्यात थिंक टैंक ब्रुगेल पर कुछ कह कर खत्म करना पर्याप्त प्रतीत होता है। इसे 2005 में जर्मन और फ्रांस हितों के द्वारा बनाया गया था। इसमें 30 कर्मचारी हैं और इसे विभिन्न सदस्य राज्यों और कार्पोरेशन से वित्त कोष प्राप्त होता है जो इसे यूरोपीय संघ से दूरी बनाये रखने में मदद करता है। अपनी अकादमिक और नीति सम्बन्धी प्रोफाइल और गुणवत्ता के लिए व्यापक रूप से प्रशंसनीय ब्रुगेल को वित्तीय संकट से उबरने के लिए यूरो बांड की वकालत करने के लिए मुश्किलों का समाना करना पड़ा। जर्मन फण्डिंग वित्त एवं अर्थशास्त्र मंत्रालय से आती है और जब फ्रेंच और जर्मन अर्थशास्त्रियों का सामान्य लोकतंत्र से जुड़े प्रस्ताव को राजनीतिक गति मिली तो अर्थशास्त्र के मंत्री गुस्सा हो गये। ब्रुगेल के अधिकारियों ने जर्मनी द्वारा सोने के ऋण के एकीकरण के जिद्दी विरोध को कमतर करने के चेतावनी दी जब तक कि एंजला मर्कल ने इस बहस का 2012 में अंत नही किया (''सिर्फ मेरे मृत शरीर के ऊपर'') वित्त पोषण करने वाले एवं थिंक टैंक के मध्य सुलह कराने के प्रयासों में ब्रुगेल के सलाहकार निकाय में जर्मन पद मर्कल के निकटतम अर्थिक सलाहकार लारस हेडरिख रोलर को दिया गया। बहस के तौर पर ज्ञान और शक्ति के घरेलू यूरोपीय सम्बन्धों से ज्यादा महत्वपूर्ण ब्रुगेल के कार्य का ट्रांसएटलोण्टिक पक्ष है। इसे वाशिंगटन डीसी में स्थित पीटरसन इस्टीटयूट फॉर इंटरनेशनल इकोनोमिक्स के सामरिक साझेदार और संबंधित संस्था के रूप में काम करने के लिए स्थापित किया गया था। उदाहरण के लिए जब यूएस मीडिया में यूरो बॉण्डस पर चर्चा हुई तो ब्रुगेल का बल्यू बाण्ड प्रोपोजल मुख्य संदर्भ बिन्दु था। जटिलता के सामने, ज्ञान नदानुक्रम स्थापित कर बुद्धिजीवी पत्रकारों और निर्णय निर्माताओं के जीवन को सरल बनाया जाता है, चाहे वह सरलीकरण कितना भी राजनैतिक क्यों न हो। ■

सभी पत्राचार डायटर प्लेहवे को <dieter.plehwe@wzb.eu> पर प्रेषित करें।

> जलवायु की उपेक्षा कॉर्पोरेट मालिक

इलेन मैकक्यून, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय सिडनी, आस्ट्रेलिया

रोक्को फजारी द्वारा चित्रण

पोस्ट ट्रूथ राजनीति और 'विशेषज्ञता की समाप्ति' से बहुत पहले से ही जलवायु एक उपेक्षित विषय था। संयुक्त राज्य अमेरिका और आस्ट्रेलिया में पिछले 30 वर्षों से हमने देखा है कि इन छद्म घटनाओं ने अपनी जड़े जमा ली है और सार्वजनिक चर्चा का विषय बन गयी है। समाचार मीडिया में एक झूठे वैज्ञानिक विवाद का निर्माण (संक्षेप में, नकली विशेषज्ञों की गवाही पर आधारित नकली समाचार), विज्ञान आधारित ज्ञान पर एक पक्षपातपूर्ण युद्ध, ज्ञान के अकादमिक और वैज्ञानिक उत्पादन की अवमानना और वैज्ञानिकों को तिरस्कृत करने, विज्ञान में सार्वजनिक विश्वास को नष्ट करने तथा विज्ञान विरोधी सामाजिक आंदोलन को अधिक हिंसक व प्रतिरोधी बनाने के लिए षडयंत्रकारी सिद्धांतों को तैयार किया गया है जिसके कारण जलवायु शमन नीतियां असंभव लगने लगती हैं।

जलवायु की उपेक्षा अमेरिका और आस्ट्रेलिया में सबसे तीव्र और सफल रहा है जहाँ जीवाश्म ईंधन, खनन व ऊर्जा उपयोग द्वारा वित्त पोषित नवउदारवादी थिंक टैंक समाचार मीडिया में राजनीतिक उद्यमियों के रूप में प्रस्तुत किये जाते हैं जहाँ ज्यादातर लोगों को विज्ञान के बारे में उनसे ही जानकारी प्राप्त होती है। आस्ट्रेलिया मं जलवायु उपेक्षा को मेलबर्न स्थित एक नवउदारवादी प्रबुद्ध वर्ग, इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक अफेयर्स (आईपीए) के माध्यम से जाना जा सकता है। एक निष्क्रिय रूढ़िवादी थिंक टैंक द्वारा राजनीतिक रूप से लिबरल पार्टी का समर्थन करने के लिए धन जुटाने के बाद, 1970 के दशक के अंत में आई.पी.ए. का उद्देश्य विरोधी कॉर्पोरेट को अधिग्रहण करने का था, जिसका नेतृत्व खनन अधिकारी और नवउदारवादी उत्साही ह्युग मार्गन ने किया था। तख्तापलट के बाद आई.पी.ए. को एक नए स्वरूप वाले कट्टरपंथी नवउदारवादी थिंक टैंक के रूप में फिर से प्रारम्भ किया गया था, जिसने अपने दानकर्त्ताओं के अनुकूल नीतिगत परिणामों को प्राप्त करने के लिए समाचार मीडिया में सार्वजनिक लड़ाई लड़ी। 1980 के दशक के बाद से, आई.पी.ए. जलवायु विज्ञान, जलवायु परिवर्तन शमन और आस्ट्रेलिया में नवीकरणीय ऊर्जा उद्योग का सबसे बड़ा प्रतिद्वंद्वी बन गया।

> वैज्ञानिक क्षेत्र में अमेरिका–निर्देशित अवांछनीय हस्तक्षेप

आई.पी.ए. एक नवउदारवादी नेटवर्क का भी हिस्सा है जिसमें अमरीकी थिंक टेंक का अत्यधिक संकेद्रण देखा जा सकता है। 1998 में, मॉर्गन के प्रमुख सहयोगी रे इंवास ने ग्लोबल क्लाइमेट साइंस कम्युनिकेशन एक्शन प्लान के मसौदे में मदद के लिए अमेरिकी पैट्रोलियम संस्थान और ग्लोबल क्लाइमेट संघ (जी.सी.सी) की एक महत्त्वपूर्ण बैठक में भाग लिया। रणनीति में जनसंपर्क विशेषज्ञों को शामिल करने, मीडिया आउटरीच मे 'सहभागिता के लिए जलवायु परिवर्तन पर वैज्ञानिक सर्वसम्मति को अस्वीकार करने वाले वैज्ञानिकों की भर्ती करने तथा जलवायु विज्ञान पर विवाद के संदर्भ में प्रेस विज्ञप्ति, विभिन्न मतों और संपादक के नाम पत्रों का नियमित छपना तथा ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को कम करने वाली नीतियों के परिचय का विरोध इत्यादि पर बल दिया गया।

अगले वर्ष, आईपीए ने जीसीसी के जन संपर्क संस्थान के एक वरिष्ठ प्रतिनिधि बर्सन मार्स्टेलर को निदेशक मंडल में सम्मिलित किया। इसके तुरंत बाद, आईपीए ने एक नए कार्यकारी निर्देशक के लिए विज्ञप्ति जारी की, जो नीतिगत परिणामों को प्रभावित करने के लिए आईपीए की सार्वजनिक प्रोफाइल को राष्ट्रीय बहस में एक प्रमुख प्रतिभागी के रूप में उभारेगा, व्यक्तिगत रूप से समाचार मीडिया में एक प्रेरक सार्वजनिक उपस्थिति के रूप में सम्मिलित होगा और संभावित

>>

विज्ञान के लिए पोर्टलैंड मार्च, पोर्टलैंड, यू.एस.ए., 2017

प्रायोजकों को पहचान करके वित्त पोषण में वृद्धि के प्रयास करेगा।

इन गतिविधियों से लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि मीडिया की संलग्नता और फंड जुटाने के महत्वपूर्ण संकेत मिले तो सफल आवेदक 140000$ के मूल वेतन के अलावा 50 प्रतिशत बोनस की उम्मीद कर सकता है।

2004 में आईपीए के कार्यकारी निदेशक के रूप में नियुक्त जॉन रोस्कम ने इससे पूर्व बड़े खनन समूह रियो टिंटों में कॉर्पोरेट संचार निदेशक के रूप में तथा लिबरल पार्टी के एक कर्मचारी और अभियान प्रबंधक के रूप में काम किया था। रोस्कम ने आईपीए की सार्वजनिक प्रोफाइल को न केवल आस्ट्रेलियाई समाचार मीडिया में नियमित रूप से उठाया अपितु उन्होंने आईपीए को एक गैर पक्षपातपूर्ण, गैर–लाभकारी शोध संस्थान के रूप में भी सफलतापूर्वक पंजीकृत किया, जिसके गुप्त प्रायोजक अपने दान का कर कटौती के रूप में दावा कर सकते थे।

इस बीच, रोस्कम ने ऑस्ट्रेलियाई जलवायु विज्ञान संघ (ए.सी.एस.सी.) सहित आईपीए के फ्रंट ग्रुप की स्थापना की, जिसे अमेरिका में हार्टलैंड इंस्टीट्युट के माध्यम से वित्तीय सहायता प्राप्त हो रही थी। ए.सी.एस.सी. का मिशन जलवायु परिवर्तन पर वैश्विक वैज्ञानिक सर्वसम्मति के लिए लड़ना था और आस्ट्रेलियाई ग्रीनहाउस गैस उत्र्सजन को व्यय करने और जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए तैयार नीतियों की शुरूआत को रोकना था।

> जलवायु विज्ञान पर मीडिया द्वारा प्रहार

निकटता से परीक्षण करने पर एसीएससी के ''वैज्ञानिक सलाहकारों'' ने जलवायु परिवर्तन पर वैज्ञानिक सर्वसम्मति के विरूद्ध विज्ञान–आधारित तर्क नहीं मढ़ा। इसके विपरीत, आईपीए के दीर्घकालिक सहयोगी और आईपीए परीक्षा के नियमित योगदानकर्ताओं के रूप में वे उन विचारधारा केन्द्रित कथाओं पर भरोसा करते रहे जो वामपंथी रणनीति के आधार पर जलवायु परिवर्तन की रूपरेखा तैयार करती थीं। वही कथाएं आईपीए से आम जनता तक प्रेस के दक्षिणपंथी सदस्यों के माध्यम से फैली, जो आईपीए और उसके फ्रंट समूहों को बौद्धिक और विचारधारायी रोल मॉडल मानते थे। इस प्रकार आईपीए के शब्दाडंबरपूर्ण भाषा ने दक्षिणपंथी पत्रकारों और संपादकों को उन कथाओं को प्रस्तुत किया जो जलवायु वैज्ञानिकों और राजनीतिक वामपंथी विचारधारा को खलनायक के रूप में प्रस्तुत करते थे।

2009 में आस्ट्रेलिया में उत्सर्जन व्यापार योजना (इटीएस) शुरू करने पर पहली संसदीय बहस में इसे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। एसीएससी के वैज्ञानिक सलाहकारों में से एक खनन भूवैज्ञानिक और खनन कंपनी के निदेशक इयान प्लीमर ने आईपीए की सहयोगी प्रेस के माध्यम से एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें तर्क दिया मानवजनित जलवायु परिवर्तन असंभव था। उन्होंने आगे दावा किया कि जलवायु परिवर्तन वैज्ञानिकों और राजनीतिक वामपंथ के बीच षडयंत्र है और उसका उपहास बनाया जिसने जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए नीतियों का समर्थन किया।

प्लीमर ने अपनी पुस्तक के प्रकाशन में अमेरिकी थिंक टैंक की भाँति पैटर्न का प्रयोग किया, जो कि प्रमुख नीति चर्चा के नेतृत्व में पर्यावरणीय ''संदेहजनक'' किताबें प्रकाशित करने के लिए जाने जाते हैं। अमेरिका में प्लीमर ने आस्ट्रेलियाई समाचार पत्रों में 219 लेख तैयार करते हुए एक प्रकाशन यात्रा शुरू की। विशेष रूप से आईपीए के साथ उनके सहयोग का कभी उल्लेख नहीं किया था।

जबकि जलवायु परिवर्तन पर वैज्ञानिक सर्वसम्मति के दृष्टिकोण के विरूद्ध दक्षिण–पंथी पत्रकारों और संपादकों ने एक गैर अनुपस्थित विरोधी तर्क के रूप में प्लीमर की पुस्तक की सराहना की, वैज्ञानिक समीक्षकों ने सार्वभौमिक रूप से इसकी उत्तेजित करने वाले सस्ते अपन्यास के रूप में इसकी आलोचना की। इस बीच प्लीमर के सार्वजनिक वक्तव्य ने जलवायु वैज्ञानिकों और जलवायु परिवर्तन शमन नीतियों का समर्थन करने वाले किसी भी व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से अपमानित किया। एक मीडिया साक्षात्कार में उन्होंने टिप्पणी की कि ''कुछ कठोर पर्यावरणविदों के कारण, मानव प्रेरित ग्लोबल वार्मिंग (वैश्विक ताप वृद्धि) एक धार्मिक विश्वास प्रणाली के रूप में विकसित हुई है (...) इसलिए मैं सृजनवादियों के तरीके और जिस तरह से कुछ पर्यावरणविद और ग्लोबल वामर्स संचालित होते हैं, उनके बीच बड़ा अंतर करता हूँ।''

जलवायु विज्ञान में विशेषज्ञता की कमी और जलवायु परिवर्तन पर वैज्ञानिक सर्वसम्मति को सार्थक चुनौती देने में उनकी अक्षमता के बावजूद प्लीमर ने उनके साथ एक संबंध जोड़ा। उनकी पुस्तक के प्रकाशन के बाद, जलवायु विज्ञान में सार्वजनिक विश्वास कम हो गया, ईटीएस हार गया और दक्षिणपंथी नेताओं ने प्लीमर को आधुनिक गैलीलियों के रूप में अपनाया। ■

सभी पत्राचार ईलेन मैकक्यूवन को
<elaine.mckewon@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> ब्राजील में नव उदारवाद थिंक टैंक नेटवर्क

हरनन रैमिरज, यूनिवर्सिडाड डॉ. वेल डॉ रियो डाज साइनज (यूनिसिनाज) (यूनिवर्सिटी ऑफ द सिनोस रिवर वैली) एवं शोधकर्ता, नेशनल काउसिंल फॉर साइंटिफिक एंड टैक्नोलॉजिकल डेवलपमेंट (सीएनपीक्यू), ब्राजील।

'मेनिफेस्ट्रोचे'' : साओ पाउलो के बुर्जुआ द्वारा साम्बा स्कूल पैराइसो दो तूइति के कार्निवल के रेखा चित्र में हेरफेर करना, ब्राजील कार्निवल, 2018.

सन् 2013 के विद्रोह के उपरांत, ब्राजील में बड़े पैमाने पर राजनीतिक उतार–चढ़ाव एवं उथल–पुथल वाले विचारधारायी परिवर्तन हुए हैं जिसके कारण नव–विकासात्मक नीतियों से नवीन नव उदारवादी एजेण्डे की तरफ अग्रसरता हुई है जो राष्ट्रपति डिलमा राजफ को दूसरी बार मिली सत्ता से ही शुरू हो चुकी थी। यह परिवर्तन एक स्वाभाविक बदलाव नहीं था अपितु बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं की सक्रिय क्रियाएं व अनेक कारणों का परिणाम था। कुछ कार्यकर्त्ता व कारण सबके सम्मुख थे जबकि अन्य अनेक कारकों के संबंधों से उभरी स्थितियों से उत्पन्न एवं मजबूत हुए। इस कारण, हमारी बहस इन नवीन स्थितियों के विवेचन पर केन्द्रित होगी, परंतु पहले से अस्तित्व में आयी स्थितियों का भी ध्यान रखा जायेगा।

इस बदलाव वाली प्रघटना की एक मुख्य वजह निर्विवाद रूप से वे उभरते आंदोलन हैं जिनमें बड़ी संख्या में युवा शामिल थे और जो दक्षिणपंथी नव उदारवादी विमर्श से प्रभावित थे। मुख्य रूप से उभरे ऐसे ही आंदोलनों का नाम मूविमैण्टों ब्राजील लिव्रे (फ्री ब्राजील मूवमेंट), एसटूडेंट्स पेले लिबरडेड (स्टूडेंट्स फॉर लिबर्टी) एवं वेम प्रा रूडा (टेक टु द स्ट्रीट्स) हैं। हालांकि हम अभी भी इन सबके बारे में बहुत कम जानते हैं, परंतु इसके प्रमाण हैं कि इनके प्रयासों का संबंध व्यापक स्तर पर हुए विचारधारायी परिवर्तन एवं उससे जुड़े थिंक टैंक से है। इन्होंने अपने विचारों को प्राथमिक तौर पर सामाजिक नेटवर्क के व्यापक उपयोग से फैलाया जिसमें उन्होंने नवउदार जड़ों वाले अन्य केन्द्रों से जुड़े विभिन्न अन्तः सम्बन्धित चैनलों को काम में लिया।

बहुत कम समय में इन समूहों की क्रियाओं ने बड़ी संख्या में ऐसे व्यक्तियों को सदस्य बनाया है अर्थात् इन समूहों से जोड़ा है और उन्हें सतही किस्म का विमर्श प्रदान किया है या उसे इन व्यक्तियों की चेतना का हिस्सा बनाया है। ऐसे व्यक्तियों की सक्रियता व्यापक रूप में नेटवर्क एवं मास मीडिया (जन संचार) से निर्देशित होती है ये व्यक्ति भी नेटवर्क एवं मास मीडिया का व्यापक पैमाने पर प्रयोग करते हैं और इससे निर्मित विमर्श व चेतना को शहरों की सड़कों व चौराहों पर व्यक्त करते हैं। जन सभाओं में वे संस्थागत कर्ताओं के पक्ष में स्थितियों को पैदा करते हैं। इन्हीं संस्थागत कर्ताओं ने हाल में पुनः निर्वाचित राष्ट्रपति को अपदस्थ कर दिया।

संरचनात्मक संगठन जो कि सावयवी ढाँचों की प्रकृति के हैं और जिनमें क्रियाओं की निश्चित प्रकृति व कार्यशैली होती है, के स्थान पर स्पष्टतः नेटवर्क के प्रभुत्व को देखा जा सकता है, जो निर्धारित औपचारिक ढाँचे की कार्यशैली से स्वतंत्र है और संसाधनों को नयी दृष्टि से देखता है। यह नेटवर्क आंतरिक जटिलता से भी जुड़ा है और इस तथ्य को सामने लाता है कि ब्राजील एक ऐसा देश है जहाँ राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व वाले संगठन सीमित हैं। विशेष रूप से पूंजीपतियों के लिए यह तर्क सही है जिन्हें उन क्षेत्रीय समूहों एवं राजनीतिक दलों का समर्थन करना है जो उनके हितों के पक्षधर हैं।

>>

यह पक्षधरता व्यापक रूप से स्थानीय राजनीतिक नेताओं पर आधारित है पर इन प्रभुत्वशाली स्थानीय नेताओं की चेतना में एक समन्वित कार्यक्रम की रूपरेखाओं का अभाव है।

> हमारे उद्देश्यों का एक संक्षिप्त ऐतिहासिकीकरण

नवउदारवादी थिंक टैंकों का नेटवर्क आज जिस तरह क्रियाशील है, को समझने के लिए कुछ मूल ऐतिहासिक संवाद/समन्वय की स्थितियों को समझना आवश्यक है। 1950 के दशक के मध्य में नवउदारवादी चिन्तन से सम्बद्ध विचारों ने प्रवेश किया और फिर वे फैलने लगे। संस्थागत रूप से इस दशक के अंत तक इन विचारों को थिंक टैंकों के माध्यम से जड़े प्राप्त हुईं। द इंस्टीट्यूटो ब्राजीलियरो ड एकाओ डैमोक्रेटिका (आई बीएडी) एवं द इंस्टीट्युटो ड पैस्क्यूसस इ एसटूडोस सोश्यस (आईपीइ एस) जैसी संस्थाओं की चर्चा इस संदर्भ में कर सकते हैं। श्रमिक दल से सम्बद्ध राष्ट्रपति जुओ गुलार्ट के राजनीतिक विरोधियों को सार्वजनिक नीतियों को प्रारूप बना कर देना इन संस्थानों का प्रथम योगदान था। इन तत्वों को बाद में तानाशाही के प्रथम चरण में भी लागू किया या जारी रखा पर 1960 के दशक के अंत तक आते–आते इनका प्रभव क्षेत्र बहुत कमजोर हो गया।

उपरोक्त श्रृंखला–बिखराव (अनिरंतरता) एक अन्य विशेषता है जिसने ब्राजील में नवउदारवाद के संस्थागत विकास को निर्मित किया। क्षेत्रीय गुटों के अतिरिक्त ऊपर उल्लेखित दोनों संस्थानों ने नीति–निर्माण के कार्यक्रमों को न करके नव उदरवाद के पक्ष में जमकर प्रचार किया। दूसरे प्रकार का कार्य निजी शिक्षा संस्थानों के शीर्ष समूह जैसे फण्डाकाओं गैटिलियो वरगाज एवं पोटिफिसिया युनिवर्सिडाड कैटालिका डि रियो डि जैनिरियो (पीयूसी–रियो) को सौंप दिये गये। ठीक इसी दौर में इन संस्थानों द्वारा भर्ती किए गये तकनीकी स्टाफ को प्रशिक्षण देने में मुख्य ध्यान नहीं दिया गया। भर्ती किए गए ये लोग उद्यमी वर्ग की पृष्ठभूमि समान पृष्ठभूमि से आते हैं जो इन दो क्षेत्रों के माध्यम तरल गतिविधि की अनुमति देती है।

सन् 1980 के दशक में लोकतांत्रिक प्रणाली के उभार के उपरांत नवउदारवादी थिंक टैंक के उभार की दूसरी लहर अस्तित्व में आयी। इस दौरान इंस्टीट्योटज लिबेरिस (आइएलएस) सक्रिय हुआ। एंटनी फिशर, जो कि इंटस्टीट्युट ऑफ इकनॉमिक अफेयर्स एवं एल्टास नेटवर्क के संस्थापक एवं प्रोत्साहक थे एवं इसी समान दृष्टिकोण व विचार के साथ रियो डि जैनेरियो साओ पाउलो एवं अन्य राजधानियों में सक्रिय थे, ने इन वर्षों में इस संस्थान को स्थापित किया। द पोर्टो एल्गिर मुख्यालय ने इंस्टीट्योटो लिबिरडाडेण्ड के नाम को अपनाया और उसे पृथक नियंत्रण में रखा।

इस पूरे संदर्भ से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि फरनेन्डो एच. कारडोसो प्रशासन ने ब्राजीली नव उदारवाद के स्वर्णिम युग के दौरान उन लोगों को आर्थिक नीतियों में स्थान दिया जो पीयूसी–रियो से आये थे। बाद में इन लोगों को बैंकर्स, निवेश फंड के मालिकों एवं राजनीतिक दल के सलाहकारों के रूप में बड़े पैमाने पर सफलता मिली। सरकार से बाहर होने पर एक बार इन्हें कासा डास गरकाज (अथवा इंस्टीट्योटो ड एस्ट्यूडोस डे पोलिटिका इकनोमिका), शायद सर्वाधिक महत्वपूर्ण थिंक टैंक जो सक्रिय रूप से अपनी विचार प्रक्रिया से निर्देशिन था, में शरण भी दी गयी। इनमें से अनेक इंस्टीट्योटो मिलेनियम, जिसकी स्थापना पोर्टो एल्गर के एक दार्शनिक एवं पीयूसी–रियो के एक अर्थशास्त्री ने संयुक्त रूप से की थी, के भी सदस्य हैं। ये दोनों लोग एकाधिकारवादी मीडिया कारपोरेशंस से भी सम्बद्ध हैं जो बदले में हिमायती थिंक टैंक होने का दावा करते हैं। द फोरम द लिबरडाड इस समूह का सर्वाधिक महत्वपूर्ण विचार स्थल बन गया है। यह एक शीर्ष संगठन के रूप में सक्रिय है जो वर्ष में एक बार पोर्टो एल्गर में अपने पक्ष अर्थात् नव–उदारवाद के पक्षधरों का सम्मेलन करता है। ये सभी संगठन एक–दूसरे के सदस्यों के साथ खुले माहौल में समय–समय पर विमर्श करते हैं जो अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है।

> क्या इस सुरंग के अंत में कोई रोशनी है?

यह अत्यंत परेशान करने वाली स्थिति है। नेटवर्क के विस्तार, इससे सम्बद्ध विमर्श एवं क्रियाएँ तथा उनकी निरंतरता ने डिलमा की आर्थिक नीतियों में नव उदारवादी एजेण्डे को प्रविष्ट कर दिया है। इस स्थिति ने डिलमा द्वारा नियुक्त किये गये लोगों के ह्रास को नहीं रोका और बाद में उन्हें महाभियोग का सामना करना पड़ा। मिचेल टेमर एवं उनकी अर्थशास्त्रियों की टीम को सत्ता मिली और सन् 2013 तक ब्राजील में जो नीतियाँ लागू की गयी थी, को वापस लिया गया।

पर इसके बावजूद ऐसा लगता है कि वर्तमान प्रवृत्तियाँ एक निश्चित प्रकार की थकान का सामना कर रही हे। शासन एवं सत्ता के परिवर्तन हेतु जिन आरापों को उपयुक्त अथवा सही कहा गया था अभी उस सामान्य चेतना के एक स्वरूप के बाहर नहीं जा सके हैं जिस अंतर्राष्ट्रीय लहर ने स्थापित किया गया था और उन्हें एक विशिष्ट दायरे के बाहर एकमत्यता को स्थापित करने में सफलता नहीं मिल रही है। साथ ही नव उदारवाद की तीसरी लहर की सक्रियता के दौर में जिन सार्वजनिक नीतियों को लागू किया गया वे भी असफलता हो रही है तथा वे प्रत्याशी जो इन नीतियों के समर्थक थे मतदाताओं के मध्य अपनी पकड़ खा रहे हैं में प्रतिबिंबित हो रही है। पूर्व राष्ट्रपति लुई इनासियों लुला ड दिल्वा की लोकप्रियता की निरंतरता के यह ठीक विपरीत है। इस तीव्र परिवर्तन के तूफानी दौर में इनकी व्यापक लोकप्रियता मजबूती के साथ विद्यमान है। ■

सभी पत्राचार हरनन रैमिरज को <hramirez1967@yahoo.com> पर प्रेषित करें।

> परामर्शी थिंक टैंक

विपणन या आधिपत्य के एक साधन

मेथियस किपिंग, योर्क विश्वविद्यालय, कनाडा द्वारा

विश्व को जोड़ना एवं सबका उपनिवेशीकरण करना?

कारोबारी प्रेस में नवीनतम रूझानों जैसे बड़े डाटा, कृत्रिम बुद्धि या विनिर्माण के भविष्य पर बहस को देखते समय अक्सर विश्व के मुख्य सलाहकार फर्मों के थिंक टैंक द्वारा जारी रिर्पोटें सामने आती हैं। इनमें से सर्वाधिक उल्लेखित शायद मेकेन्सी ग्लोबल इंस्टीट्यूट (एमजीआइ) है लेकिन अन्य के साथ एक्सेंचर इस्टीट्यूट फार हाई परफोर्मेंस, आईबीएम इस्टीटयूट फार बिजनेस वेल्यू याबोस्टन कंसलटिंग समूह की हैंडर्सन इंस्टीट्यूट का भी उल्लेख होता है। उनके अधिकांश प्रकाशन कारोबार सम्बन्धित मुद्दों पर होते हैं लेकिन कुछ व्यापक आर्थिक विकास पर टिप्पणी और वैश्वीकरण का भविष्य या लैंगिक समानता जैसे व्यापक प्रश्नों को सम्बोधित करते हैं। इन ''संस्थाओं'' और उनकी ''अर्न्तदृष्टि'' के प्रभाव की अत्यधिक प्रयोग में आने वाली थिंक टैंक रैंकिग के द्वारा पुष्टि की जाती है। रैंकिग में "लाभ के लिए सर्वश्रेष्ठ 25 थिंक टैंकों" में 14 ऐसे हैं जो परामर्शी फर्म से सम्बन्धित हैं जिसमें एमजीआई शीर्ष स्थान पर है। यद्यपि 'लाभ हेतु' एक भ्रामक निरूपण है चूंकि अन्य परामर्श सेवाओं के विपरीत यह अंतदृष्टि मुफ्त मे आती हैं। फिर प्रश्न उठता है कि परामर्शी फर्मों ने इन्हें पहले स्थापित क्यों किया?

> विचार नेतृत्व या भय विक्रेता?

1990 में एम जी आई अग्रणी थी जिसका जल्द ही दूसरों ने अनुसरण किया। इनके निर्माण के तर्क का सरल उत्तर है कि ये प्रबन्धन सलाह के लिए तेजी से बढ़ते हुए प्रतिस्पर्धी बाजार में एक विपणन उपकरण का कार्य करते हैं। प्रबन्धक "श्रेष्ठ ज्ञान" पर आधारित परामर्श सेवाएँ खरीदतें हैं या कम से कम इस तरह उन्हें

>>

अन्य हितधारको को परामर्शी फर्मों के सहारे को उचित ठहराना पड़ता है। इस परिपेक्ष्य में, परामर्शी फर्में अपने चिंतन नेतृत्व को दर्शाने हेतु थिंक टैंक स्थापित करती है। और इस तरह वे अक्सर अपने उद्देश्यों का वर्णन करती है। परामर्श का अध्ययन करने वाले शिक्षाविदों ने इनके थिंक टैकों का प्रत्यक्ष रूप से जिक्र न करते हुए इस तथाकथित चिंतन नेतृत्व का कुछ हद तक आत्म सेवा के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। वे सुझाव देते हैं कि परामर्शदाताओं द्वारा लगातार प्रचारित प्रबंधन विचार या फैशन जैसा कि वे उसकी अल्पकालिक प्रकृति को उजागर करने के लिए कहते हैं– प्रबंधको के मध्य एक बेहद अनिश्चित यदि खतरनाक नहीं, भविष्य का डर पैदा करने का कार्य करते हैं जो उन्हें सलाहकारों को आरामदेह कंबल के रूप में न लेकर (एक मार्गदर्शक के रूप मे) नियुक्ति देते हैं। इन थिंक टैकों द्वारा उत्पादित रिपोर्टों का पठन वास्तव में उनके द्वारा भविष्यवाणी किय गये खतरनाक नही ंतो चुनौतीपूर्ण घटनाओं से कैसे निपटा जाए पर चिंता जाग्रत करता है। इस चिंता पर रिपोर्ट स्वयं भी सामान्य उत्तर प्रदान करती है अतः तर्क व्यर्थ हो जाता है जिससे प्रबंधक इन अशुभ प्रवृतियों के प्रति सतर्क करने वाले थिंक टैंकों की तरफ प्रेरित होते हैं।

> शैक्षणिक समुदाय की नकल या उसकी जगह लेना?

और अधिक आगे बढ़ते हुए, ये रिपोर्ट सलाहकारों को उनकी सेवाओं के लिए नये बाजार खोलने में मदद करती हैं चाहे वे उनके कार्यात्मक क्षेत्रों, विभिन्न क्षेत्रों या उभरती अर्थव्यवस्थाओं में हो। वे अपने संभावित ग्राहकों के मध्य रूचि जागृत करने और अंततः इनके द्वारा प्रस्तावित समाधानों की वैद्यता के लिए, इन विषयों में से किसी पर भी गहन "अंतदृष्टि" प्रदान करके अपनी प्रासंगिक क्षमता का संकेत देते हैं। यह हमें इन थिंक टैंकों के पीछे दूसरी व्यापक अभिप्रेरणा की तरफ ले जाता है। यह "प्रबंधन पर अधिकारियों", जैसा कुछ ने कहा, जिसमें बिजनेस स्कूल और प्रबन्धन मीडिया भी शामिल है से सम्बन्धित है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि अधिकांश संस्थान शैक्षणिक समुदाय की भाषा का प्रयोग अपनी गतिविधियों का वर्णन करने के लिए करते हैं। ऐसा वे रिपार्ट तैयार करने वाले सलाहकारों को "शोध कर्ता" या "शोध–फैलो" का नाम कर और नोबल पुरस्कार विजेता को सलाहकार के रूप में भर्ती कर के करते हैं। वे अपने निष्कर्षों को सुविख्यात प्रबंधन मीडिया में या निशुल्क है या फिर भुगतान करने वाल अनुभागों में प्रसारित करते हैं।

इस संगठन में संभवतः अपनी 'डेलोइट विश्वविद्यालय प्रेस' की स्थापना कर डेलोइट सबसे आगे है। इस बार फिर इसे आसानी से स्मार्ट विपणन के रूप में समझा जा सकता है जो सलाहकारों द्वारा कही जाने वाली बात को अधिक विश्वसनीयता प्रदान करता है। लेकिन यह प्रबंधन ज्ञान उद्योग के भीतर अधिक जगह बनाने के प्रयास को भी प्रतिबिंबित कर सकता है। प्रबन्धन शिक्षाविदों स्वयं ने शोध के प्राकृतिक विज्ञान पैराडाइम की दिशा में आगे बढ़कर उस अवसर को बनाया होगा–जो आंशिक रूप से इन्हीं मैट्रिक्स द्वारा प्रोत्साहित है। औपचारिक रूप से इसकी प्रासंगिता बताते हुए, आज का अधिकांश प्रबंधन शोध, पेशेवर प्रबंधकों के लिए काफी हद तक अस्पष्ट और अरूचिकर होता है। अतः ये परामर्शी थिंक टैंकों द्वारा प्रदान 'शोध' पर भरोसा करने में काफी खुश हैं। प्रश्न यह है कि सलाहकार कब तक शैक्षणिक सामग्री से अपनी वैद्यता को आगे बढ़ायेगें। कई बिजनेस स्कूलों के प्रोफेसर अभी से ही अपने परामर्शी प्रमाण पत्र को दर्शा कर पेशेवरों और छात्रों के मध्य अपनी विश्वसनीयता को मजबूत करने का प्रयास करते हैं।

> सब का औपनिवेशीकरण

सर्वोतम रीतियों को परिभाषित करने की सलाहकारों की यह सभांवित इच्छा हमें अब एक व्यापक तर्काधार की तरफ और कुछ हद तक साजिश सिद्धान्त के क्षेत्र में अग्रेषित करती है। क्या इन थिंक टैंको का सृजन केवल कारोबार के विकास पर बल्कि वैश्विक स्तर पर ही नहीं अर्थव्यवस्था, समाज और यहाँ तक कि राजनीति पर हावी होने की साजिश का एक भाग हो सकता है?यह कम विचित्र लगता है जब हम इन फर्मों में कई जो आजकल न सिर्फ कम्पनियों को बल्कि कैथोलिक चर्च के साथ सभी प्रकार सरकारों सहित कई अन्य संगठनों को परामर्श देती है, के आकार और पहुँच को देखते हैं।

यह और भी अधिक विश्वसनीयता लगता है कि जब हम उनके पूर्व छात्रों की असाधारण संख्या को देखते है, जिनमें से कई कारोबार और अन्य, जिसमें शैक्षणिक जगत सम्मिलित है में शीर्ष पर हैं। अपने अधिष्ठाता की पृष्ठभूमि को जाँचे और इन थिंक टैंको द्वारा प्रदत्त अंतदृष्टि और भविष्य की सामान्य दृष्टिकोण के प्रमुख दर्शक कौन है।

उपर्युक्त में से कोई भी भयावह नही होना चाहिए। यह उत्पन्न और प्रसारित किये जा रहे विचारों पर निर्भर करता है।ये थिंक टैंक एवं परामर्शी फर्में जिन्होनें इनका निमार्ण किया, 'अच्छे' के एक बल के रूप में कार्य कर सकती हैं। यानि कि अपने भागीदारों और शेयरधारकों की जेबें भरने का नहीं बल्कि बड़े हित के लिए काम करती हैं। और वास्तव में कई संकेत हैं कि इन में कुछ संस्थाएँ ऐसा कर रही हैं, उदाहरण के लिए लैंगिक समानता या दीर्घकालिक उन्मुख पूंजीवाद की आवश्यकता के संबंध में। हालांकि प्रबंधन परामर्श उद्योग का इतिहास और इसका अब तक क्या प्रभाव हुआ है चिंता की नहीं तो कम से कम रूकने के कारण प्रदान करता है। ■

सभी पत्राचार मैथियस किपिंग को <mkipping@schulich.yorkn.ca> पर प्रेषित करें।

> सीमापार देखरेख :
देखरेख एवं देखरेख में रूपान्तरण

हिडी गॉटफ्राइड, वेन राज्य विश्वविद्यालय, यू.एस.ए., आर्थिकी एवं समाज (आर सी 02) पर आई.एस.ए शोध समिति के अध्यक्ष एवं श्रम आन्दोलनों (आर सी 44) पर एवं समाज में महिला (आर सी 32) पर आई.एस.ए की शोध समिति के सदस्य, एवं जेनेफर **जिहवे चुन**, टोरोंटो विश्वविद्यालय, कनाडा एवं आर सी 44 एवं आर सी 32 की सदस्य

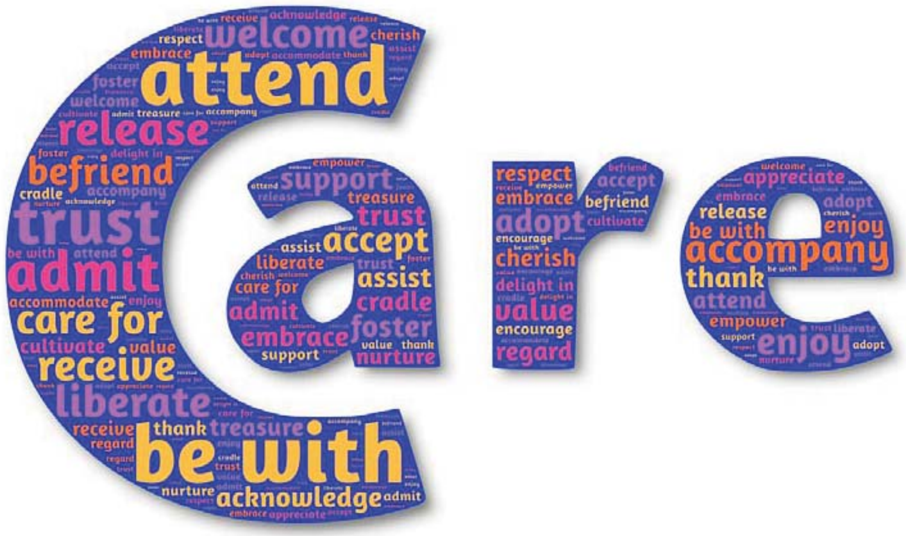

देखरेख का अध्ययन, समसामयिक चर्चाओं का केन्द्र बन रहा है। ये चर्चाये वर्तमान में विश्व में हो रहे सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तन से सम्बन्धित है। काम की खोज में सीमा पार करने वाली महिलाओं की अप्रत्याशित संख्या ने वर्ग, लिंग, प्रजाति एवं राष्ट्रीय रेखाओं पर असमानता के एक नये पैटर्न को निर्मित किया है। "विपदा में सेवा" मुख्य रूप से निर्धन, प्रवासी जाति भेद से त्रस्त महिलाओं के लिए जो दूसरों की देखरेख की असंगत जिम्मेंदारियों को निभाती है के बारे में चिंता व्यक्त करती है। यह बालकों, बुजुर्गो एवं निजी घरों के देखरेख वाले, कम आय वाले, अनौपचारिक व्यवसायों की प्रधानता को भी चिन्हित करता है। यह देखरेख के उन सिद्धान्तों को भी चिन्हित करता है जो खाना पकाने एवं सफाई करने की क्रियाओं से लेकर सेक्स, अंतरंगता एवं जैविक प्रजनन में निहित श्रम को कम आंकते है एवं उसे छुपा देते है। हमारा विश्लेषणात्मक लेंस जो प्रतिच्छेदन के नारीवादी विश्लेषण एवं वैश्विक राजनीतिक आर्थिकी को महत्वपूर्ण शुरूआती बिन्दु मानता है, देखरेख के अक्सर अदृश्य श्रम एवं रोजमर्रा के जीवन को सुचारू रूप से चलाने में उसके महत्व को आवर्धित करता है।

बाजार हस्तक्षेप एवं देखरेख कार्य के अन्तराष्ट्रीय नेटवर्क ने गर्भधारण के पल से जीवन के अंतिम क्षण के अनुभवों तक सामाजिक रिश्ते एवं अपनेपन के साधनों में बदलाव किया हैं। हम देखरेख कार्य के सम्बन्ध में क्या सोचते है एवं देखरेख कार्य को श्रम के प्रेम रूप में अवधारित करते हैं, उलझाते हैं। हमारा सामान्य ज्ञान अपेक्षा करता है कि देखरेख को मुक्त रूप से श्रम के प्रेम के रूप में जिसे उसके असीम महत्व के कारण पुरस्कृत करना चाहिये न कि उसका मुआवजा धन के "अपवित्र" माध्यम या नागरिकता के अमूर्त अधिकार के रूप में किया जाना चाहिये। जहाँ हर प्रकार की देखरेख एवं अन्तरंग श्रम को मूल्यहीन आंका गया है, सरोगेट माताओं, जिनके श्रम

>>

को सामाजिक, राजनीतिक एवं विधिक पहचान नहीं मिली का अध्ययन अनवेषण का एक उभरता क्षेत्र है । किराये की कोख वाली माताओं का मातृत्व वस्तु एवं उपहार लेने देने के मध्य रेखा धूमिल होने से कम स्पष्ट है। अभीष्ट माता–पिता अपने आप को अव्यैक्तिक शोषण वाले सामाजिक संबंधों में बंधे अंतरंगता एवं प्रजनन श्रम के बढ़ते वस्तुकरण में बंधने के बजाय उपहार लेने देने की परोपकारी भावना में शरण ले सकतें हैं।

कर्ताओं एवं संस्थाओं का विविध समूह रोजमर्रा के जीवन में देखभाल को पूंजीवाद में सामाजिक आवश्यकता और महत्व को प्रभावित करता है। देखरेख कर्ताओं को वर्तमान विधिक सरंक्षणों से वंचित करना, चाहे अस्थायी प्रवासी स्वैच्छिक कोख देने वाली के रूप में या अवैतनिक श्रम क्रियाओं के रूप में, देखरेख कार्य को प्रेम एवं निष्ठा के रूप में और कम कर आँकता हैं। अपनी नीति प्राथमिकताओं को स्थानांन्तरित करते हुये, राज्य ने देखरेख की जिम्मेदारियों को वापस ले लिया एवं न्यायगत कर लिया। यही नही राज्य ने सुधार की नीति अपनाई, जिसने सेवा एवं अन्तरंग श्रम के बाजारीकरण को अग्रसर किया। सिंगापुर का केस लीजिएः राज्य ने देखरेख आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये विदेशी घरेलू श्रमिक कार्यक्रम के द्वारा उच्च बाजारीकृत एवं निजी विकल्प प्रदान किये। इस प्रकार राज्य अपनी भूमिका में, कामकाजी वर्ग के परिवारों की अपेक्षा मध्यम वर्ग एवं उच्च वर्ग परिवारों को लाभ देने पर बल देता है। देखरेख में बाजारीकरण एवं निजीकरण की द्वि प्रक्रियाएं सेवाकर्मियों के असुरक्षित, कम आय वाले व्यवसायों से संबद्ध है ।

प्रेम एवं देखभाल, वैश्विक देखभाल शृंखलाओं के साथ परिवर्तित एव स्थानांतरित होते है। वैश्विक देखभाल शृंखला की छवि का आवहान, उस कैनवास को बड़ा करता है जिस पर हम स्थानिक शक्ति संबन्धों को देख सकते है। प्रवासी श्रमिकों के घरों में पीछे रह जाने वाले परिवार के सदस्य, अपने बच्चों एवं घर की भौतिक एवं भावनात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये जद्दोजहद करते है। पूर्व यूरोप के उत्तर समाजवादी देशों से साक्ष्य बताते हैं कि "मातृत्व प्रेम" के श्रम का आलिंगन एकल पिताओ द्वारा समान रूप से नहीं किया जाता है जो पुरूषत्व के रक्षात्मक प्रकारों का निमार्ण करते है जो उनको उपहास एवं बहिष्कार से कवच प्रदान करते हैं। सीमा पार आदान प्रदान में प्राप्तकर्ताओं एवं नियोक्ताओं की देखभाल करने हेतु लम्बी दूरियाँ तय करने मैचिंग श्रमिक निजी श्रमिक दलालों से लेकर द्विपक्षीय राष्ट्रीय संधियों जैसे बहु मध्यस्थो को संलग्न करते है। जापान में, तेजी से बढ़ती हुयी वृद्ध जनसंख्या के लिए सरकार द्वारा संचालित देखभाल कार्यक्रम व्यवसायिक रूप से प्रशिक्षित प्रवासियों पर जो सांस्कृतिक "सेतुकार्य" से संलग्न हो सके ताकि उनकी संजाति "मित्रता" एवं जापानी देखभाल प्राप्तकर्ताओं के मध्य सेतु हो सके पर अप्रत्याशित प्रभाव उत्पन्न करते हैं। वैश्विक देखभाल शृंखलाएं विश्व आर्थिकी के एक प्रदेश के परिवारो को दूसरे प्रदेश के परिवारों से जोड़ती हैं और परिवार, सिविल सोसाइटी, राज्य एवं आर्थिक संस्थाओं के अन्दर एवं मध्य में सरकारी एवं निजी शक्ति संबंधों की पुनः संचरना को परावर्तित करती हैं।

जहाँ एक तरफ ऐसी रीतियाँ, अन्तरानुभागीय उत्पीड़न के शक्तिशाली व्यवस्था की छवि उत्पन्न करती है, यह प्रवृतियाँ बिना विरोधियों के नही है। कुछ मामलों में हम श्रम संगठनों एवं सिविल सोसाइटी संस्थानों, को नवीन नीति चुनौतियों को अनुकूलित करते हुये देखते है; अन्य मामले में, देखभाल करने वाले कार्यकर्ताओं एवं उनके न्यायिक व्यवहार के समर्थन में हम अनुपेक्षित परंतु आलोचनात्मक गठबंधन एवं समन्वयता के विकास को देखते है। चाहे निजी घर हो या सरकार के गलियारे, देखभाल कार्यकर्ता सक्रिय रूप से असमानता एवं अधिनता के संबंधो पर संघर्ष करते है, कभी–कभी श्रम के लैंगिक एवं प्रजातिय विभाजनों को जन्म देते हुये, एवं कभी कभी समन्वयित सर्वसमिका एवं आत्मवाद को गढ़ते हुये।

एक नवीन राजनीतिक विषय को बीच में डालते हुये, वृहद स्तर पर फैले हुये एवं देखभाल के बढ़ते हुये वस्तुकरण ने सामूहिक एंजेसी के नवीन प्रकारो का आधार कूटरचित किया है। वैश्विक स्तर पर, घरेलू श्रमिक संघ एवं उनके साथियों के लम्बे आन्दोलनों ने अन्तराष्ट्रीय श्रमिक संघ (आई.एल.ओ.) पर दबाव डाला कि वो 2011 मे घरेलू श्रमिको के अन्तर्राष्ट्रीय मानको के प्रथम संग्रह (कन्वेनशन न. 189) को अपनाये। घरेलू दासता, औपनिवेशिक दासतव एवं मालिक–नौकर संबन्ध से संपर्क के कारण ऐतिहासिक अपवर्जन के उपरान्त, यह कन्वेनशन घरेलु श्रमिको को एक समान शब्दकोश एवं वैश्विक मंच प्रदान किया जिससे वो श्रमिकों के रूप में अपने अधिकरों के लिए दावा कर सके । साथ ही मानव अधिकारो पर राष्ट्रीय नीति एवं अन्तर्राष्ट्रीय वैधिक मानक बनाने पर भी बल दिया, जिसने श्रमिको के लिये काम की बेहतर स्थिति एवं घरेलू श्रमिको के लिये "सम्मानजनक कार्य" के विस्तार का समर्थन किया।

ऐतिहासिक वसीयत एवं राष्ट्रीय राजनीतिक संदर्भों ने भी सामाजिक आन्दोलन कर्ताओं के लिए जो साधन सुलभ थे उनको आकार दिया। घरेलु श्रमिको का संगठित होना 21वीं शताब्दी से शुरू हुआ, ऐसा काल जो राजनीतिक एवं आर्थिक उथल–पुथल वाला था। यू.एस. एवं मैक्सिको में सामयिक सक्रियवाद के लक्षण है, नवाचार सामातिक आन्दोलन व्यूहरचना जो बहु सर्वसमिका की रचना करती हैए जिससे सदस्यो एवं सहयोगी भर्ती किये जाते है। भारत में, गतिशील फ्रेम मानव अधिकारों पर केन्द्रित रहता है एवं राष्ट्रीय सरकार को लक्षित करने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय एकता (क्षेत्रीय एकता की अपेक्षा) को पोषण करता है। जबकि एक्यूडोर में, गतिशील फ्रेम समान श्रमिक अधिकारों पर केन्द्रित रहता है एवं वैश्विक एकता की अपेक्षा क्षेत्रीय एकता पर बल देता है। नवीन राजनीतिक अवसर संरचना का लाभ लेते हुये, देखभाल की बदली हुयी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक आर्थिकी ने न केवल नियमित देखभाल के संलग्न सामाजिक कर्ताओं के प्रकारों को प्रभावित किया परन्तु सामुहिक कार्य के राजनीतिक क्षितिज को भी परिवर्तित किया। ■

सभी पत्राचार
हिडी गॉटफ्राइड को <ag0921@wayne.edu> एवं जेनिफर जिहवे चुन <jj.chun@utoronto.ca> को प्रेषित करें।

>देखरेख में एक वैश्विक संकट?

फियोना विलियम्स, लीड्स विश्वविद्यालय और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, यू.के. और गरीबी, सामाजिक कल्याण और सामाजिक नीति पर आई.एस.ए. शोध समिति (आर.सी. 19) की सदस्य

© अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन
लगभग प्रत्येक पाँच में से एक घरेलू श्रमिक अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासी होता है।

प्रवास में वृद्धि – जिसमें दुनिया के 223 मिलियन प्रवासियों में आधी अब महिलायें हैं – विभिन्न तरीकों से इंगित करती है कि देखभाल एक वैश्विक और अतंर्राष्ट्रीय मुद्दा बन गया है। कई महिलायें जो गरीब और कमजोर राज्यों से पलायन करती हैं, को अमीर देशों में सवेतन देखभाल, सफाई, या घरेलू सेवा, बच्चों, वृद्धों और घर की देखभाल के कार्य मिलते हैं। वे वैश्विक दक्षिण से उत्तर की ओर और साथ ही उत्तर और दक्षिण में आती जाती हैं। इन वैश्विक देखभाल श्रृंखलाओं के समानांतर, अमीर दुनिया के संरक्षण घरों और अस्पतालों में स्वास्थ्य सेवाओं में कार्य करने के लिये निम्न और मध्यम आय वाले देशों से निजी और राज्य एजेंसीयों द्वारा नर्सों और डॉक्टरों की अंतर्राष्ट्रीय भर्तीयां बढ़ गयी। इस प्रक्रिया में, उन प्रवासी श्रमिकों की उनके माता–पिता और बच्चों के प्रति देखभाल की जिम्मेदारियां महाद्वीपों तक फैल गयी। साथ ही, जैसा कि निजी देखभाल प्रदाताओं ने अपने कार्य दुनियाभर में चलाये, देखभाल उद्योग एक बडा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार बन गया है। एक अलग कदम में, वितीय संगठन प्रवासियों के प्रेषित धन उनके घर पर स्थानांतरित कर देते हैं। कुछ निम्न–मध्यम आय वाले देशों के लिये, जैसे कि फिलीपींस, नर्स और देखभाल श्रमिक प्रमुख राज्य–प्रेरित ''निर्यात'' और उनके देश के लिये विदेशी मुद्रा के सबसे बडे स्त्रोत का निर्माण करते हैं।

देखभाल की यह अंतर्राष्ट्रीय राजनैतिक अर्थव्यवस्था, सामाजिक, आर्थिक और भू–राजनीतिक असमानताओं को प्रभावित करने वाले परिवर्तनों और संकटों के संचय को प्रतिबिंबित और मजबूत करती है। प्रथम, श्रम बाजार में महिलाओं की भागीदारी में वैश्विक वृद्धिहै। विकसित देशों में, यह "आजीविका कमाने वाले पुरूष" मॉडल से दूर एक ऐसे मॉडल की ओर बदलाव है जिसमें यह माना जाता है कि सभी व्यस्क, पुरूष और महिलायें सवेतन कार्य में लगे हैं। दुनिया के गरीब क्षेत्रों में, स्थानीय अर्थव्यवस्था का विनाश, बेरोजगारी, और गरीबी ने महिलाओं पर आजीविका कमाने वाली भूमिकाओं को निभाने का दवाब डाला है।

> बदलती देखभाल जरूरतों की गत्यात्मकता

विकसित कल्याणकारी राज्यों में देखभाल एक केंद्रीय सामाजिक, राजनीतिक और राजकोषीय मुददा बन चुका है जैसा कि वृद्ध होते समाज और घटती प्रजनन क्षमता ने सहायता की जरूरत वाले लोगों के अनुपात में बढोतरी की है। हालांकि, देखभाल संकट के ये संकेतक विकासशील देशों में भी कोई कम दवाब नहीं डाल रहे, जहां अपने चरम पर– विभिन्न देया विभिन्न रूपों में इसका अनुभव करते हैं – अफ्रीका में, एड्स, गंभीर बीमारियां, प्राकृतिक आपदायें, और एक उच्च बाल निर्भरता अनुपात ने महिलाओं पर अत्यधिक भार डाला है जिनसे बहुत कम बुनियादी ढांचे के साथ देखभाल करने और कमाने की आशा की जाती है। प्रवास, घरेलू और देखभाल कार्य में अक्सर, एक तरीका है जिससे महिलायें कमाने के अवसर ढूंढ सकती है जबकि यह पीछे रह गये व्यक्तियों की देखभाल की जिम्मेदारियां को अधिक बढा देता है।

>>

साथ ही, विकसित राज्य अपने सामाजिक व्यय मे कटौती कर रहें हैं और अपनी देखभाल जरूरतों को पूरा करने के लिये लागत – प्रभावी तरीकों की तलाश कर रहे हैं। स्वीडन जैसे देखभाल में उच्च सार्वजनिक निवेश वाले कल्याणकारी देशों में भी निजी बाजार देखभाल प्रावधानों की एक केंद्रीय विशेषता बन गया है। इसमें राज्य और स्थानीय प्राधिकरण सेवाओं को निजी क्षेत्र से अनुबंधित करना और परिवारों, विकलांग और वृद्ध लोगों को देखभाल श्रम बाजार से सहायता के लिये भुगतान करने में मदद करने के लिये कर क्रेडिट, वाउचर या लाभ उपलब्ध कराना शामिल है। जहां यह अनियमित या खराब तरीके से नियमित है, और निजी घरों में काम के लिये विशेष रूप से, जिनके पास सौदेबाजी की सबसे कम शक्ति है, वे इस खालीपन को भर देते हैं: स्थानीय कामकाजी वर्ग महिलायें, ग्रामीण क्षेत्रों से प्रवासी (जैसा कि चीन में) और बढ़ते हुये, अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी महिला श्रमिक। वे अधिकतर अधिक योग्य होते हैं – यूरोपीय संघ में, प्रवासीयों की अपने समकक्ष मूल रूप से जन्में लोगों की तुलना में अधिक योग्यता वाले होने की संभावना दुगुनी है। आवास और सामाजिक सुरक्षा के कम नागरिकता अधिकारों के साथ, वे अनिश्चित, कम भुगतान और घर – आधारित काम के लिये अधिक संभाव्यता लिये हुये होते हैं।

हालांकि, यह अपेक्षाकृत नयी प्रघटना भी ऐतिहासिक असमानताओं पर थोपी गयी है, अर्थात, महिलाओं के "अकुशल" कार्य और सतत नस्लीय दासता को मिलाकर देखभाल श्रम का चल रहा अवमूल्यन जिसमें अल्पसंख्यक नृजातीय महिलायें निजी तौर पर या कल्याणकारी राज्य द्वारा पारंपरिक रूप से घरेलू और देखभाल कार्य में भर्ती की जाती रही हैं। जबकि कई महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली काम/जीवन के संतुलन की समस्या गरीब वर्गों या देशों की महिलाओं से देखभाल और सफाई कार्य की आउटसोर्सिंग द्वारा हल की जा सकती है, यह घरों में स्थायी लैंगिक श्रम विभाजन में बदलाव के लिये बहुत कम काम करता है।

> अन्य वैश्विक संकटों का देखभाल से प्रतिच्छेदन

देखभाल श्रमिकों का अंतर्राष्ट्रीय आवागमन अन्य वैश्विक संकटों के साथ प्रतिच्छेद करता है। पहला, वैश्विक वित्तिय संकट के बाद की मितव्ययता के प्रभावों ने अधिक लागत – प्रभावी देखभाल प्रावधानों की खोज को तीव्र कर दिया। स्पेन में, जहां दो – तिहाई देखभाल श्रमिक प्रवासी हैं, घरेलू आय पर मितव्ययता के दवाब ने प्रवासी श्रमिकों के वेतन और काम के घंटों में कमी कर दी। घर भेजे जाने वाला प्रेषित धन आधा हो गया। दूसरा, उच्च आय वाले देशों की प्रवासी श्रमिकों पर निर्भरता एक प्रवासी – विरोधी जेनाफोबिया में वृद्धि के साथ अस्तित्व में है। शरणार्थी संकट के बारे में राजनीतिक बहस आप्रावासन नीतियों में बदलाव को आकार दे रही हैं, जो प्रवासी देखभाल श्रमिकों को प्रभावित कर रही हैं। ये नीतियां ना सिर्फ "अकुशल" श्रमिकों (जिस श्रेणी में देखभाल श्रमिक आते हैं) के प्रति बल्कि प्रवासीयों की बुनियादी कल्याणकारी प्रावधानों के लिये पात्रता को भी सीमित करने में अधिक प्रतिबंधी बन रही हैं। कई राजनीतिक बहसो ने राज्य संप्रभुता और आर्थिक लागत को मानवाधिकारों और मानवीयता के खिलाफ रखा हैं। वास्तव में, पोलानियन अर्थों में, ये सभी संकट – वित्त के, देखभाल के, और वो जिनका प्रवासी और शरणार्थी सामना करते हैं – अपने विषयों को फर्जी वस्तुओं के रूप में प्रस्तुत करते हैं और सुरक्षा, एकजुटता और संवहनीयता को खतरे में डाल देते हैं।

क्या करें? जमीनी घरेलू श्रमिक संगठनों के द्वारा पारदेशीय और अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक सक्रियता 2011 में अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के कन्वेंशन फॉर द राइटस ऑफ डॉमेस्टिक वर्करस तक ले गयी। अन्य वैश्विक रणनीतियों में विश्व स्वास्थ्य संगठन के 2010 के देशों के लिये उनकी प्रवासी स्वास्थ्य श्रमिकों की भर्ती में उपयोग के लिये एक एथिकल कोड का समर्थन शामिल है। ये महत्वपूर्ण हैं, परंतु प्रवासी देखभाल कार्य के मुददे के इससे कहीं आगे जाने की जरूरत है। देखभाल और प्रवास दोनों मुददे मानवाधिकार और संवहनीयता के हैं। हिंसा से भागने वालों के लिये मुक्त आवाजाही, नागरिकता के अधिकार, साथ ही आतिथ्य भी आवश्यक है। देखभाल के लिये इस मान्यता की आवश्यकता होती है कि देखभाल प्राप्त करना और प्रदान करना एक मौलिक मानवाधिकार है। नीति निर्माण का मुख्य तक उत्पादकता, बाजारों की सुविधा, और महिलाओं को श्रम बाजार में लाने पर ध्यान केंद्रित करता है जहां देखभाल के सवेतन काम के आसपास व्यवस्थित किये जाने की जरूरत है। देखभाल के दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य में वैश्विक सामाजिक न्याय की रणनीतियों में केंद्र में रख जाने, सामूहिक सामाजिक अच्छे, और प्रवासी श्रमिक के रूप में पहचाने जाने, राष्ट्रीय और वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के, कल्याण के, परस्पर निर्भरता और मानव संवहनीयता के केंद्र में रखे जाने की जरूरत है। ■

सभी पत्राचार फियोना विलियम्स को <J.F.Williams@leeds.ac.uk> पर प्रेषित करें।

> आई.एल.ओ. में घरेलू श्रमिकों के लिए सम्मानीय कार्य पर मानक व्यवस्था

अडेले ब्लैकेट, मैकगिल यूनिवर्सिटी, कनाडा के द्वारा

मार्च 2008 के अंत में, मुझे संयुक्त राष्ट्र की श्रम पर विशेष एजेंसी, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आई. एल.ओ.) से एक अतिआवश्यक कॉल आया। कई लोंगों के आश्चर्य तक, आई.एल.ओ. की गवर्निंग बॉडी ने घरेलू श्रमिकों सम्मानीय कार्य पर एक नयी अंतर्राष्ट्रीय संधि को तय करने के लिये तैयारी करने की जरूरत वाले एक प्रस्ताव को हाल ही में अपनाया था। मुझे घरेलू कार्य को दृश्य बनाने की प्रक्रिया के एक हिस्से के रूप में, आई.एल.ओ. के प्रमुख विशेषज्ञ के रूप में कार्य करने के लिये कहा गया था।

> घरेलू कार्य की "अदृश्यता"

दूसरों की देखभाल करने वाले लोगों के रूप में, घरेलू श्रमिक वास्तव में नहीं दिखने, और वास्तव में नहीं सुनाई देने के आदी हो चुके हैं। ऐतिहासिक वर्णन हमें घरेलू दासता और औपनिवेशिक दासता की कडियां, और मालिक और नौकर के प्रस्थिति – आधारित संबंधों के "सामान्य ज्ञान" में पाये जाने वाले चल रहे अवशेषों की याद दिलाते हैं। उत्तर – औपनिवेशिक और उत्तर – नस्लवादी राज्यों में घरेलू कार्य के कई मर्मभेदी समाजशास्त्रीय वर्णन जोर देते हैं कि कैसे घरेलू श्रमिक सामाजिक प्रजनन से जुडे हुये कठिन और गंदे कार्य करने के बावजूद "अदृश्य" बने रहते हैं। राजनीतिक अर्थव्यवस्था साहित्य उस सीमा तक जोर डालता है जहां पर घरेलू श्रमिक – अक्सर उच्च शिक्षित और अपनी देखभाल की जिम्मेदारी सहित – अपने परिवार को छोड़कर विदेश में देखभाल प्रदान करने के लिये जाते हैं। साहित्य उस मात्रा की सीमा को भी दिखाता है जहां यह लडखड़ाता अंतर्राष्ट्रीय, परंपरागत रूप से स्त्रीकृत देखभाल कार्य आर्थिक और सामाजिक रूप से कम मूल्यांकित बना हुआ है।

सम्मेलन संख्या 189 के लिए आईएलओ संगोष्ठी समिति, 2011

आई.एल.ओ. मानता है कि कम से कम 67 मिलियन महिलायें और पुरूष घरेलू कार्य में हैं; दुनियाभर में प्रत्येक 25 महिला श्रमिकों में एक घरेलू श्रमिक है। निजीकृत देखभाल में मांग में वृद्धि के बावजूद, वैश्विक अर्थव्यवस्था में घरेलू श्रमिकों का योगदान कम आंका जाता है। कुछ लोग वैश्विक देखभाल श्रृंखलाओं के बारे में बात करते हैं; रॉकेल पैरोनॉस इसके बजाय देखभाल संसाधनों के निष्कर्षण यह ध्यान रखते हुये कि वैश्विक दक्षिण के भेजने वाले देश वैश्विक दक्षिण को सब्सिडी वाले अक्सर अच्छे शिक्षित श्रमिकों देते हैं जो कि वैश्विक दक्षिण के प्रवासियों के पीठ परवैश्विक उत्तर के बाजार का निर्माण करने में सक्षम बनाती है। घरेलू श्रमिकों का

>>

सम्मेलन संख्या 189 के लिए आइएलओ संगोष्ठी समिति, 2011

सीमा पार गमनागमन अस्थायी प्रवास पर आधारित नवउदार दृष्टिकोण के साथ जुडी आर्थिक विकास की प्रेषण – आधारित रणनीति है।

घरेलू श्रमिकों ने अंतर्राष्ट्रीय मानक व्यवस्था में मान्यता की मांग की। वे दशकों से क्षेत्रीय तौर पर आयोजन करते आ रहे थे, और एक अद्वितीय अंतर्राष्ट्रीय फोरम में अपने अधिकारों की रक्षा के लिये एक अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क और ट्रेड यूनियन फेडरेशन के माध्यम से एकत्रित हो गये। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, सरकार के साथ श्रमिकों और नियोक्ताओं का प्रतिनिधित्व करते हुये, एक त्रिपक्षीय सस्था के रूप में, लगभग एक शताब्दी पहले, 1919 में, स्थापित किया गया था।उसके संविधान में पहले शब्दों में कहा गया है कि "सार्वभौमिक और स्थायी शांति केवल तभी स्थापित की जा सकती है जब वह सामाजिक न्याय पर आधारित हो", और 1944 के फिलाडेल्फिया के घोषणापत्र ने जोडा कि "श्रम एक वस्तु नहीं है"। 1936 से घरेलू श्रमिकों पर एक प्रपत्र को अपनाने की अतिआवश्यक मांगों के बावजूद, घरेलू श्रमिकों पर सम्मानीय कार्य पर मानक व्यवस्था ने तब तक इंतजार किया जब तक मानक व्यवस्था आई.एल.ओ. में फैशन के बाहर नहीं हो गयी। नये मानकों को अपनाने के जोखिम काफी अधिक थे।

> घरेलू श्रमिकों के लिये सम्मानीय कार्य को विनियमित करना

मुख्यधारा श्रम कानून, नवउदार मितव्ययता उपायों में और इसकी अंकित सीमा जो उत्तरोत्तर हाशियाकृत और अनौपचारिक अर्थव्यवस्था के श्रमिकों को अपमार्जित करती है, दोनों के तहत चुनौती पूर्ण है। घरेलू श्रमिकों के लिये सम्मानीय कार्य श्रम कानूनों की सीमाओं को स्वीकार करने और चुनौती देने का एक अभ्यास था। मैनें आई.एल.ओ. के कानून और अभ्यास रिपोर्ट को समावेश को पोषित करने वाले अधिकारों पर चर्चा का रणनीतिक रूप से चित्रण करते हुये : एक आलोचनात्मक स्थिति से तैयार किया, यानि कि, घरेलू श्रमिक श्रम कानून में शामिल होने के अधिकार का दावा करते हैं। दावा महत्वपूर्ण था क्योंकि कन्वेंशन और सिफारिशों का इरादा सिर्फ एक प्रतीकात्मक साधन और एक अमूर्त अधिकारों का "चार्टर" बनना नहीं था : वे विस्तृत और व्यापक थे।

पारंपरिक परिप्रेष्य से कानूनी प्रत्यारोपण तक एक बदलाव जिसके वैश्विक उत्तर से बाकी दुनिया में फैलने की कल्पना की जा रही है, विनियामक प्रयोगों पर बने उपकरण जो फ्रांस जैसे देशों के साथ अधिकतर दक्षिण अफ्रीका और उरूग्वे जैसे वैश्विक दक्षिण के देशों से उभरे हैं। ये मानक सम्मानीय कार्य की विचार को विस्तारित करने को उद्देश्य रखते थे जिसका आई.एल.ओ. 1999 में "सभी के लिये सम्मानीय कार्य" तक विस्तारित करने से ही अब तक समर्थन करता रहा है। कन्वेंशन संख्या 189 और सिफारिश संख्या 201 के तहत, सम्मानीय कार्य का मतलब सम्मानीय कार्य परिस्थितियां, और बहुत कुछ था। यह घरेलू कार्य के समानता के अधिकारों और संघ की स्वतंत्रता को मान्यता देता है और बेगार और बाल श्रम के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करता है। इसमें मातृत्व अवकाश, व्यवसायिक सुरक्षा और स्वास्थ्य एवं सामाजिक सुरक्षा बचावों सहित सामाजिक सुरक्षा तक पंहुच शामिल है – भले ही वहां कुछ यथार्थवादी पहचान है कि इन्हें प्रगतिशील रूप से प्रदान करने की जरूरत हो सकती है। परंतु वहां अभी और भी है। यह सुनिश्चित करने के लिये एक प्रीमियम रखा गया था कि निरीक्षण और विवाद समाधान के लिये तंत्र सक्रियता से उपलब्ध थे। सम्मानीय कार्य का यह भी मतलब था कि शोषण प्रथाओं में सुधार के लिये प्रवास की गलतियों के आसपास विशेष ध्यान देने की आवश्यकता थी।

कन्वेंशन संख्या 189 और इसके साथ–साथ पूरक अनुशंसा संख्या 201 घरेलू कार्य को नियंत्रित करने वाले ढांचे को बदलने से कम नहीं चाहता हैं जो विघटन करने वाले की असममित असममित शक्ति को अधीनस्थता को दर्शाता है। वे एक वैकल्पिक प्रधानता विरोधी और नियम भंग करने वाले अंतरराष्ट्रीय कानूनी व्यवस्था बनाने का हिस्सा रहे हैं, और उन्होंने इस व्यवस्था को स्थापित होने और प्रसारित होने, दोनों के लिये अनुमति दी है।

यह प्रक्रिया बिना जोखिमों के नहीं है। मुझे विशेष रूप से डर है कि घरेलू कार्य को विनियमित करने वाले अधीनस्थता और दासता के स्थानिक स्थरिकरण को बनाये रखेंगे – बल्कि इसके बजाय – नये अंतर्राष्ट्रीय मानकों के मद्देनजर श्रम कानून सुधार पहलों बावजूद, जैसा कि तथाकथित तृतीयक सेवा अर्थव्यवस्था के प्रति नवउदारवादी दृष्टिकोण के रूप में, और नस्लीय और अपवर्जित महिलाओं के द्वारा अंगभूत है। फिर भी यह महत्वपूर्ण है कि नये मानकों के अपनाये जाने के बाद से सात सालों से भी कम में वैश्विक दक्षिण और वैश्विक उत्तर से 25 देशों ने कन्वेंशन संख्या 189 की पुष्टि की है। यह भी महत्वपूर्ण है कि अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता के माध्यम से घरेलू श्रमिकों के लिये सम्मानीय कार्य को बढ़ावा देने और अनुभवों को साझा करने के लिये सीखने वाले समुदाय उभरे हैं। सबसे ज्यादा, यह महत्वपूर्ण है कि घरेलू श्रमिक सगठित हुये हैं और इस बात पर जोर देते हैं कि घरेलू श्रमिकों के लिये सम्मानीय कार्य में "हमारे बिना हमारे लिये कुछ भी नहीं" है। ■

सभी पत्राचार अडेले ब्लैकेट को <adelle.blackett@mcgill.ca> पर प्रेषित करें।

> घरेलू श्रमिक आयोजन का अन्तर्निहित इतिहास

क्रिस टिली, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजिल्स, यू.एस.ए एव कार्य का समाजशास्त्र (आर सी 30), श्रम आन्दोलन (आर सी 44) एवं सामाजिक वर्ग और सामाजिक आन्दोलन (आर सी 47) पर शोध समिति के सदस्य, **जॉर्जिना रोजास**, सेंट्रो डे इनवेस्टिगौसिओन्स वाई एस्टूडियो सुपरियोरेस एन इन्ट्रोंपोलोजिया सोशल (सी.आइ.ई.एस.ए.एस) मैक्सिको और **निक थियोडोर**, इलिनोइस विश्वविद्यालय, शिकागो, यू.एस.ए.।

राष्ट्रीय घरेलू श्रमिक गठबंधन (एनडीडब्ल्यूए) : अध्याय नेता, दिसम्बर 2015. फोटो : एनडीडब्ल्यूए

हाल ही में अनौपचारिक कामगारों पर शोध सिर्फ यह दर्शाने की बजाय कि अनौपचारिक रूप से नियोजित कामगार सफलतापूर्वक संगठित हो सकते हैं, ये संस्थाए कैसे सफल हो सकती हैं का विश्लेषण करने की तरफ बढ गया है। यद्यपि कई वैयक्तिक अध्ययनों ने एक ही ऐतिहासिक अवधि में एक ही देश में एक ही क्षेत्र में (और अक्सर एक ही संगठन के भीतर) अनौपचारिक कामगारों की लामबंदी की जाँच की है। कुछ अध्ययनों ने अनौपचारिक कामगारों की सफलता के स्वरूप, रणनीतियों और डिग्री की व्यख्या करने के लिए राष्ट्र–पार या ऐतिहासिक तुलना का लाभ उठाने का प्रयास किया है।

अनौपचारिक कामगार संगठन किस प्रकार कार्य करते हैं को उजागर करने के लिए राष्ट्र–पार और ऐतिहासिक विश्लेषण करने के लिए जबरदस्त संभावना है। मैक्सिको और संयुक्त राज्य अमेरिका में घरेलू श्रमिकों का हमारा तुलनात्मक विश्लेषण, इतिहास और राष्ट्रों के पार देखता है, जो सच में तुलना का एक जटिल समूह है। यह आलेख हमारे प्रगति कार्य के एक भाग का सारांश प्रस्तुत करता है।

इन श्रमिक संगठनों के कार्यो को सिद्धातित करने के लिए, हम अन्य के मध्य, नोर्मा अलार्सन एवं जेनिफर चुन द्वारा सामाजिक आन्दोलन में अंतःप्रतिच्छेदन के विश्लेषण से आकर्षित होते है। चुंकि घरेलू श्रमिकों का (अब से डी.डबल्यू) कई अधिनस्थ पहचानों : महिला के रूप में, निम्न प्रस्थिति श्रमिक और हाशिये पर नस्लीय एवं

>>

राष्ट्रीय घरेलू श्रमिक गठबंधन (एनडीडब्ल्यूए) : पोप तक तीर्थयात्रा, सितम्बर 2015। फोटो : एनडीडब्ल्यूए

जातीय समूहों के सदस्य के रूप में चरित्र चित्रण होता है। इसके अतिरिक्त, हम संसाधनों के संघटन, राजनैतिक अवसर सरचनाओं, पहचान और फ्रेमिंग की जाँच करने वाले कई आधारभूत सामाजिक आन्दोलन साहित्य की तरफ भी आकर्षित होते है।

दोनों देशो में आयोजन और वकालत के प्रक्षेपवक के उद्विकास के चरित्र को दर्शाने वाली सक्रियतावाद की तीन धाराएँ है। पहली दो धाराएँ एक प्रतिच्छेदन "कार्यशील महिला" की पहचान पर निर्मित होती है। एक धारा ने कुलीन श्रमिक नारीवादियों को संगठित किया है; दूसरी में श्रम संगठन सम्मिलित है। तीसरी धारा, जिसे हम "नवीन सामाजिक आन्दोलन" कहते हैं, में महिला, जातिय समूह सदस्यों या प्रवासियों (वास्तव में इन में से कोई भी नई पहचान नही है) के रूप में पहचान के ईर्द गिर्द विभिन्न अभिनव जमीनी आंदोलन सम्मिलित है। हमारे द्वारा यहां वर्णित इतिहास बहुल स्त्रोतों जिसमें हमारा हाल, का क्षेत्रीय कार्य भी सम्मिलित है, के अलावा मैक्सिको की मेरी गोल्डस्मिथ के ऐतिहासिक शोध और अमेरिका में प्रेमिला नडासेन और एलिन बोरिस के शोध पर विशेष रूप से मेहरबान है।

> मेक्सिकन एवं अमेरीकी इतिहास की तुलना

मेक्सिको में, सक्रियता की पहली लहर लगभग 1900 और 1950 के मध्य में क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़ी कुलीन नारीवादियों द्वारा और बाद में लंबे समय से शासन कर रहे संस्थागत क्रांतिकारी दल (पीआरआई) द्वारा उकसायी गई थी। घरेलू श्रमिक इसमें बाद में सम्मिलित हुए और उन्होनें 1920 से 1940 के दशक तक दर्जनों यूनियन (पीआरआई से जुडे.) का संयोजन किया। इसी अवधि के दौरान अमरीका का घटनाक्रम समान था यद्यपि इस जैसा दीर्घायु नहीं था : कुलीन श्रम नारीवादियों ने 1920 से 1940 के दशक तक और फिर 1960 के दशक में घरेलू कामगार अधिकारों के लिए मुखर वकालत की। अपनी मेक्सिकन बहनों की तरह, अमेरीकी घरेलू कामगारों ने 1930 और 1940 के दशक के दौरान यूनियनों का निर्माण किया, इस मामले में औद्योगिक संगठनों की कांग्रेस के तत्वाधान में।

1970 के दशक से प्रारम्भ हो, नये सामाजिक आंदोलनों ने एक विशेष भूमिका निभाई जिससे अतीत के कुछ फूटन भी सम्मिलित हैं। मेक्सिको में उदार धर्मशास्त्र

>>

संगठनों और नारीवादी बुद्धिजीवी जो पीआरआई से असम्बद्ध और अक्सर उसके आलोचक थे, के समर्थन से नये डी डब्लयू संगठनों का गठन हुआ। उन्होनें मेक्सिकन घरेलू कामगारों की अनुपातहीन रूप से (अंतर–राष्ट्रीय) राष्ट्रीय प्रवासी और स्वदेशी पहचानों को चिन्हांकित करा। अमेरीका में 1920 के दशक से कभी–कभी सक्रिय कुलीन श्रम नारीवादी वकालत के एक वाहन के रूप में कार्य करने वाली घरेलू रोजगार पर राष्ट्रीय समिति का नियंत्रण 1972 में एडिथ बार्क्सडेल स्लोन के हाथों में आया। बार्क्सडेल–स्लोन, एक अश्वेत नारीवादी जिन्होंने अफ्रीकी–अमरीकी नागरिक अधिकार आंदोलन का साथ दिया, ने 1970 के दशक के प्रारम्भ में फलने फूलने वाले लेकिन बाद में जिनका अस्तगमन हो गया अश्वेत महिला घरेलू कामगारों के दर्जनों संगठनों का समर्थन किया। 1990 के दशक में, अमरीकी अप्रवासी कार्यकर्त्ताओं और अश्वेत नारीवादियों ने घरेलू कार्य के अफ्रीकी–अमेरीकी से अधिकाधिक प्रवासी महिलाओं की तरफ जनसांख्यिकीय बदलाव का प्रत्युत्तर दिया। ऐसा उन्होनें प्रवासी समुदायों पर मुख्य रूप से आधारित नये संगठनों का आयोजन कर के किया, जो 2000 के दशक में राष्ट्रीय घरेलू श्रमिक गठबन्धन के गठन पर समाप्त हुआ ।

लेकिन डीडबल्यू यूनियनों ने दोनों देशों में पुनरूत्थान का भी आनंद लिया जो उन्हीं नये सामाजिक आंदोलन की उर्जा से प्रेरित था। अमरीका में, बुजुर्ग और विकलांग व्यक्तियों की देखभाल करने वाले सरकार द्वारा वित पोषित होमकेयर कामगारों की बड़ी संख्या को प्रभावित करने वाले राज्य कानून में हुए बदलाव का लाभ उठाते हुए, अन्य वर्णों और महिलाओं के समुदायों में मजबूत आधार वाले प्रगतिशील सार्वजनिक क्षेत्र के श्रम संघों ने 1980 के दशक में और इसके बाद अधिक आबादी वाले राज्यों में होमकेयर श्रम संघों का गठन किया। मैक्सिको में, सबसे बड़े और प्रभावशाली घरेलू कामगार संघ, घरेलू कर्मचारियों के समर्थन और प्रशिक्षण केन्द्र (सीएसीईइच) ने 2015 में पुरूष महिला घरेलू कामगार राष्ट्रीय संघ (सिनाक्ट्राहो) नामक ट्रेड यूनियन बनाया। यह 1940 के दशक से पहला सक्रिय घरेलू कामगार यूनियन था जिसने मैक्सिको सिटी, जिसका मैक्सिको से अलग क्षेत्राधिकार है, में राजनैतिक अवसरों के खुलने का लाभ उठाया। सीएसीइएच और सिनाक्ट्राओ के मुख्य नेता, मार्सेलिना बोटीस्ता, कुछ तरीको से मेक्सिकन डीडबल्यू आंदोलन के पूरे उद्विकास की परिचायक है। निर्धन, भारी रूप से स्वदेशी ओक्साका राज्य की एक प्रवासी, वे पहले एक उदार धर्मविज्ञान समूह में सक्रिय हो गई, फिर उन्होनें मध्यम वर्ग के नारीवादी समर्थकों के साथ कार्य किया। बाद में उन्होनें कामगार नेतृत्व वाले संगठन बनाने के लिए उनका साथ छोड दिया और फिर पुनः मध्यमवर्ग श्रम नारीवादियों की सलाह पर उन्होनें एक यूनियन की स्थापना की।

> विषयपरकता का फैलाव

तीनों आयोजन धाराओं के पार और कुछ हद तक समय के साथ प्रत्येक धारा के भीतर, अमरीका और मैक्सिको के संगठनों ने नये आधारों को तैयार करने और बाह्य सहयोगियों के साथ गठबंधन बनाने के लिए डीडबल्यू प्रतिच्छेदन पहचानों के विभिन्न पक्षों पर जोर दिया है। इन धाराओं में डीडबल्यू के आयोजन को बनाये रखने हेतु प्रतिच्छेदन का प्रयोग करने वाली पहचानें, पहली महिला, दूसरी कामगार और तीसरी हाशिये पर एवं नस्लीय अल्पसंख्यक है। ये क्रम उदविकासीय नहीं है। इन आंदोलनों ने, जिसे चेला सैंडोवल ने सामरिक विषयपरकता कहा, को फैलाया है। उनकी अग्रगति कई गतिमान अक्ष फ्रेम और सहयोगियों तक पहुँच को शक्ति के स्थानांतरित के अनुकूल राजनैतिक अवसर संरचना में बदलाव से मजबूत हुई है जिसने बदले में डी डब्ल्यू संगठनों को नागरिक समाज के प्रतिनिधियों से न सिर्फ सार्वजनिक पहचान और समर्थन करने में मदद की है बल्कि नीति निमार्ण समूहों में उनकी राष्ट्रीय उपस्थिति में भी इजाफा हुआ है। फिर, इन देशों के घरेलू कामगारों के लिए प्रतिच्छेदित पहचान सदस्यों को आकर्षित करने एवं संगठनात्मक एकता का निर्माण करने और सफल रणनीतियाँ का सूत्रित करने में बुनयादी रही हैं। ■

सभी पत्राचार क्रिस टिली को
<tilly@ucla.edu>,
जॉर्जिना रोजास को
<georgina@ciesas.edu.mx> और
निक थियोडोर को
<theodore@uic.edu> पर प्रेषित करें।

>वैतनिक घरेलू श्रम का वैश्विक शासन

सैबरीना मरचेती, का फोसकेरी वेनिस विश्वविद्यालय, इटली

इस प्रोजेक्ट को यूरोपीय संघ के होराइजन 2020 शोध एवं नवाचार कार्यक्रम के तहत यूरोपीय शोध संघ से धन मिला है। (अनुदान समझौता संख्या 678783, डोम इक्वल)

जून 16, 2011 को जेनेवा में दुनिया भर के लाखों घरेलू श्रमिकों की तालियों की गडगडाहट एवं गीतों के मध्य, अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक संगठन (आई.एल.ओ.) ने कन्वेनशन न. 189 जो "घरेलू श्रमिकों के सम्मानजनक कार्य" से सम्बन्धित था एवं उससे सम्बन्धित सिफारिश न. 201 को पारित किया। उसकी तुलना में जब पुरातन तौर पर श्रमिकों की उस श्रेणी को अधिकारो से वंचित रखा जा रहा था, जो विभिन्न सामाजिक संदर्भ में, आधिकतर सामाजिक रूप से वंचित समूह में आते थे (गरीब महिला एवं बालक, दस्तावेज विहीन प्रवासी, प्रजाति अल्पसंख्यक आदि) यह एक अद्भूत उपलब्धी थी। काफी देशों में घरेलू श्रम "श्रम" के रूप में नहीं पहचाना जाता है और इसलिए श्रम सुरक्षा से वंचित रहता है। घरेलू श्रमिक अधिकतर धन रूपी वेतन से वंचित रहते है एवं उसकी भरपाई केवल खाने एवं रहने से की जाती है। साथ ही, उन देशों में जहाँ घरेलू श्रम, श्रम कानूनों से नियमित होता है, वहाँ भी नियम अन्य रोजगार से महत्वपूर्ण रूप से भिन्न होते है। यह भिन्नता कम वेतन एवं कम सामाजिक सुरक्षा के रूप में होती है।

हालाँकि, कुछ वर्षो से, "वैतनिक घरेलू श्रम के वैश्विक शासन" में क्रमिक विकास हुआ है: घरेलू श्रमिक अधिकारों में सुधार के लिए एक (बहु–स्तरीय एवं उच्च विजातीय फ्रेंमवर्क) जिसमें विभिन्न प्रकार के वैश्विक और स्थानीय कर्ताओं के मध्य अन्तसम्बन्ध देखा जाता है। इस प्रक्रिया में घरेलू श्रमिकों की स्थिति–उनकी खराब परिस्थितियाँ और विश्व के विभिन्न भागों में भोगे जाने वाला भेदभाव को एक वैश्विक समस्या के रूप में देखा जाने लगा है, जिसका शासन एक चुनौती है और जिसने राष्ट्रीय सीमाओं को पार किया है। संस्थागत तौर पर, न केवल आई.एल.ओ. ने बल्कि यूनाइटेड नेशनस (यू.एन.) वुमेन, प्रवास का अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, प्रवास एव विकास का वैश्विक फोरम, यूरोपियन मौलिक अधिकार एजेंसी, महिला प्रस्थिति पर संयुक्त राष्ट्र आयोग एवं कई अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक संघों ने कुछ वर्षो में घरेलू श्रमिकों के अधिकारों को प्रोत्साहित करने के लिए कदम उठाये हैं। उसी समय, 2012 में मोन्टीवीडियो में अन्तर्राष्ट्रीय घरेलू श्रमिक फेडरेशन (आई.डी.डब्ल्यू.एफ.) की स्थापना ने इस श्रमिक आन्दोलन का वैश्विक स्तर पर विस्तार कर दिया। यह आन्दोलन वर्तमान राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय संगठनों, जिनमें (सिर्फ) घरेलू श्रमिक है के नवीन संबन्धों पर निर्मित है।

इस परिदृश्य में, विभिन्न राष्ट्रीय संदर्भो में घरेलू श्रमिक अधिकारों के समर्थन के अभियानों पर सी189 के प्रभाव को ध्यान में रखना आवश्यक है। वास्तव में, जब हम हर देश की विशिष्टता को नजदीक से देखते हैं, इस मुद्दे पर सामाजिक आन्दोलन, राज्य एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के व्यवहार में महत्वपूर्ण अन्तर दिखता है। राज्य एवं गैर राज्य संगठन में इस विषय के संदर्भ में काफी विपरीत स्थिती देखी जा सकती है। यह दर्शाता है कि घरेलू श्रमिक अधिकारों का सन्दर्भ निर्भर चरित्र सी189 की प्रत्येक सन्दर्भ में कैसे कर्ताओं को लामबंद करने की क्षमता को अंततः निर्धारित करता है। यह विभिन्न प्रश्न उठाते है जैसेः किस प्रकार विभिन्न क्षेत्रीय कर्ता सी189 को घरेलू श्रमिक अधिकारों के लिए "वैश्विक शासन" प्रदान करने पर प्रतिक्रिया करते हैं? राज्य की इस प्रक्रिया में क्या भूमिका रहती है?इस तरह की प्रक्रियाएँ वृहद राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तरों पर हो रहे राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्तनों से कैसे संबन्धित होती हैं?

इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए, जो कि प्रोजेक्ट डोम इक्वल की अनुसंधान टीम

>>

“ वैज्ञानिक घरेलू श्रमिकों की प्रस्थिति एक ‘वैश्विक समस्या’ के रूप में देशी जाने लगी है जिसका शासन एक ऐसी चुनौती है जो राष्ट्रीय सीमाओं का पार करती है ”

के आंकड़ों पर आधारित है, मै भारत एवं इक्यूडोर के केस लेता हूँ जो स्थानीय (राज्य एवं गैर राज्य) कर्त्ताओं द्वारा सी189 को घरेलू श्रमिक अधिकारों के लिए गतिशील करने के एक अवसर के रूप में लेने, के विरोधी उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

राज्य के स्तर पर, इक्यूडोर एवं भारत ने दो विपरीत प्रवृतियाँ दर्शायी इक्यूडोर की सरकार ने सक्रियतापूर्वक अपने वृहद सामाजिक आर्थिक सुधार के दायरे में घरेलू श्रमिक अधिकारों को प्रोत्साहित किया। जबकि भारतीय सरकार, सिविल सोसाइटी समूहों के दबाव के बावजूद, प्रश्न को राजनीतिक एजेंडा में रखने से बचती है। इस प्रकार के राष्ट्रीय अन्तर घरेलू श्रमिक अधिकार आन्दोलनों को एक अलग ही आकार देते है। इसके परिणामस्वरूप मुख्य सामाजिक कर्ताओं के लिए भिन्न भूमिका, उद्देश्य एवं कार्य का क्षेत्र निर्धारित होता है।

भारत एवं इक्यूडोर के मध्य भिन्नता, उनके भूगौलिक क्षेत्र की भिन्नता को भी दर्शाती है। इक्यूडोर का केस, कैरिबियन एवं लेटिन अमेरिकन क्षेत्र की प्रवृति को दर्शाता है। ब्राजील, बोलीविया, इक्यूडोर एवं वेनेज्यूला में वामपंथी सरकार के समय में, गरीब एवं हाशिये पर सामाजिक समूहों जिनमें घरेलू श्रम में महिलाएँ भी शामिल है की स्थिति को सुधारने के प्रयास हुए थे। यहाँ अनुकरण प्रभाव प्रतीत होता है जहाँ लेटिन अमेरिकी एवं केरिबियन सरकारें एक दूसरे के बाद अनुममर्थन क्रिया से जुड़तें है। वर्तमान में, उस क्षेत्र सबसे अधिक अनुममर्थन केंद्रित है जिसमें लेख लिखे जाने तक चौदह हस्ताक्षर करने वाले थे। इसके विपरीत भारत में, इसको एक ऐसे क्षेत्र के रूप में अवधारित किया जाता है जहाँ लेटिन अमेरिका की तुलना में महिला एवं प्रवासियों के मौलिक अधिकार को सुधारने में कम सुधारों को अपनाया गया है। सम्पूर्ण एशिया में, सिर्फ फिलिपिंस ने अभी तक सी189 की पुष्टि की है। इसका घरेलू श्रमिक अधिकारों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।'' इन कारणों से भारत एवं इक्यूडोर, इस संदर्भ में भी भिन्न प्रवृति दिखातें है कि, कौन उस कर्ता की भूमिका निभाता है जिसने घरेलू श्रमिक अधिकारों में नवीन मानक एवं विधिक उन्नति को प्रेरित किया है। जहाँ एक ओर इक्यूडोर में, राष्ट्रीय सरकार ने नवीन मानक फ्रेमवर्क को अग्रसर किया, भारत में ऐसा नहीं था, जहाँ विधान सिर्फ कुछ स्थानीय राज्यों (जैसे केरल) के स्तर पर ही हैं; बाकी देश के लिए आई.एल. ओ., मुख्य कर्ता की तरह रहता है जो घरेलू श्रमिकों की विधिक सुरक्षा को अग्रसर करता है। मैं तर्क देता हूँ कि भारत में राष्ट्र राज्य का वास्तव में क्षेत्र के अन्दर विरोधी के रूप में विवरण किया जा सकता है।

निष्कर्ष में, हम यह परिकल्पना बना सकते है कि इन दो देशों में कर्ताओं के मध्य अंतसंबन्धों में अन्तर विभिन्न विचारों के ईर्दगिर्द घूमता है: भारत में घरेलू श्रमिकों के अधिकारों में सुधार, जो कि इक्यूडोर में उनकी श्रमिक परिस्थितियों में विशिष्ट सुधार से भिन्न है। अभियान के उद्देश्य के ये दो भिन्न विन्यास, भिन्न प्रकार के कर्ता से संबन्धित होते है, जो, घरेलू श्रमिक संगठनों के साथ,अभियान को समर्थन एवं प्रोत्साहित करते हैं। भारत में आन्दोलन के वृहद फ्रेम को देखते हुये, ऐसा कर्त्ता जो समानता एवं मानव अधिकारों के मुद्दे पर कार्य करने वाला हो एवं जो घरेलू श्रमिक अधिकार आन्दोलन से जुड़ा न हो का ढूंढना कठिन था। यह स्थिति इक्यूडोर में नहीं थी जहाँ पारंपरिक नारीवादी, देशज एवं श्रमिक आन्दोलन से स्टेकहोल्डर, आन्दोलन से जुड़नें में अनिच्छुक रहे। ऐसा इसलिये था क्योंकि वे इसे अपने उद्देश्यों से अलग देखतें है। ■

सभी पत्राचार सैबरीना मरचेती को <sabrina.marchetti@unive.it> पर प्रेषित करें।

> पुरुषत्व एवं पितृत्व

प्रवासी महिलाओं के पीछे रह गये साथी

हेलमा लुट्ज, गोथ विश्वविद्यालय, फ्रेंकफर्ट, जर्मनी 1990 से आई.एस.ए सदस्य, रेसिज्म, नेश्नेलिज्म इनडिजनती एड़ इथनिसिटी पर शोध समिति (आरसी 05), वुमेन इन सोसाइटी पर शोध समिति (आरसी 32), बॉयोग्राफी एंड सोसाइटी पर शोध समिति (आरसी 38) के सदस्य एवं आरसी 05 के चयनित अध्यक्ष (2018–22)

देखरेख कार्य सम्पादन पर बातचीत करना?

पिछले पंद्रह वर्षो से, अध्ययनों ने अपने परिवारों के लिये विशेष रूप से अपने गैर–प्रवासित बच्चों के लिये एकल महिला प्रवासन के परिणामों पर, ध्यान केन्द्रित किया है। यद्यपि पीछे रह गये पिताओं के लैंगिक अनुभव एवं रीतियों पर विरले ही अनुसंधान किया गया। पूर्वी यूरोप से महिला प्रवासी देखभाल श्रमिकों पर मेरे अध्ययन में, मैं उत्तर–समाजवाद स्थिति में पीछे रहे पिताओं की पितृत्व रीतियों एवं एकल परवरिश के अनुभव को देखता हूँ। जहाँ पहले से अलग, पुरुष को अर्जक पुरुषत्व का प्रदर्शन करना आवयश्यक है।

अधिकांश पूर्वी यूरोप में ''समाजवादी'' से ''मुक्त बाजार'' अर्थव्यवस्था की तरफ परिवर्तन के दौरान, राज्य द्वारा गारण्टीकृत और वित्त पोषित सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था के कवच को समाप्त कर दिया गया या काफी कम कर दिया गया। आर्थिक व्यवस्था में सुधारों के परिणामस्वरूप लाखों लोगों ने अपनी नौकरी खो दी। आर्थिक परिवर्तनों में देखभाल क्षेत्र में राज्य प्रावधान का समापन करना भी शामिल है : कई बाल विहार एवं विद्यालय बन्द हो गये या उनका निजीकरण हो गया। एक नई राजनीतिक व्यवस्था को ग्रहण करने के साथ ''समाजवादी मातृसत्ता'' को अस्वीकार कर दिया गया एवं पारंपरिक पुरुष प्रधानता का पुनःप्रवेश हुआ, जो एकल पुरुष कमाने वाला के आदर्श पर आधारित था। आर्थिक दबाव के तहत इस आदर्श को प्राप्त करना काफी

कठिन हो गया एवं पुरुषों के बडे पैमाने पर प्रवास को पुरुषत्व के नवीन मानको को पूरा करने के प्रयासों के रूप में समझा जा सकता है। उसी समय में, महिलाओं उनमें से कई माँ थीं, ने बडी संख्या में प्रवास करना शुरू कर दिया और जिसे उनकी पुरानी सह–अर्जक वाली पहचान के विस्तार के रूप में देखा जा सकता है। इन मामलों में, उनके पति/साथी अपनी पत्नियों की अनुपस्थिति का किस प्रकार अनुभव करते है?क्या ये पिता अपनी पुरुष प्रधानता को खोने के भय के साये से जुडे रहते हैं?इन परिवारों में रोजमर्रा की व्यवहारिक देखभाल किस प्रकार व्यवस्थित होती है?

> पीछे रहे पितृत्व के प्रकार

अध्ययन में पीछे रहे पिताओं की तीन प्रकार की देखभाल रीतियो का वर्णन किया गया है : ''एकल पेरेंट'' ''कमांडर पिता'' एवं ''भागीदार पिता''। पहला केस कोस्टिका, एक एकल पेरेंट'' का है। कोस्टिका मोल्दाविया में एक सुशिक्षित किसान है जो ''एकल पेरेंट'' के रूप में अपने तीन बच्चों की देखभाल करता है। उसकी पत्नी ने परिवार को कई वर्षो पहले परिवार को पीछे छोड गई थी, जब से वो एक इतालवी परिवार में बिना दस्तावेज वाली देखभाल कार्यकर्ता के रूप में कार्य करने लगी थी। तीनों बालक खेत एवं घर दोनों स्थान पर कार्य में शामिल रहते हैं। पिता कार्य आवंटित करते हैं लेकिन यह सुनिश्चित करते हैं कि कार्य समान रूप से विभाजित है एवं स्कूल के कार्य की अनदेखी न हो। वह अपने बच्चों की देखभाल की आवश्यकता पर प्रश्न नहीं करता है, परन्तु उसको माँ की तरह प्रदान न कर पाने में अपनी असमर्थता पर बल देता है। पिता इस अपराध बोध से ग्रस्त रहता है, जैसा कि उसने बताया, कि वो अपने बच्चों का बचपन छीन रहा है। वो अपनी देखभाल करने की रीतियो को माँ की देखभाल रीतियो से तुलना करता है एवं अपनी कमियों को इंकित करता है।

दूसरा प्रकार, ''कमांडर पिता'' एकल पिता के प्रकार से ज्यादा व्यापक है। यूक्रेनियन पिता सर्गीज, जो पूर्व में अध्यापक था, पौलेड के घरेलू कामगार के रूप में पत्नी के शटल प्रवासन के दौरान अपना खुद का व्यवसाय चलाते है, वो अपने देखभाल वाले कार्यों को आंशिक रूप से सास–ससुर में एवं आंशिक रूप से बच्चों में विभाजित करता है और स्वंय के घरेलू कार्य करने से बचने पर गर्व महसूस करता है । वह माँ की अनुपस्थिति के प्रबंधन में परिवार के सदस्यों को निर्देश देकर स्वयं को विशेषज्ञ के रूप में पेश करता है, अपने शब्दों में *वह सैनिकों का नेतृत्व कर रहा है।* जैसे ही उसकी पत्नी वापस आती है, घर एवं बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारियाँ उसको पुनः सौप दी जाती है। उसकी पितृत्व रीतियाँ पुरातन पुरूष प्रधानता वाले लैंगिक कार्य विभाजन के अनुरूप है।

एक तीसरा प्रकार ''भागीदार पिता'' जो निदर्शन में काफी विरल था, पोलिश तकनीकज्ञ पावेल का मामला है जो अपने पाँच वर्षीय पुत्र के साथ पीछे रहता है जब उसकी पत्नी जर्मनी में घरेलू नौकर (चक्राकार) की तरह कार्य करती है। इस परस्थिति में उस जैसे ज्यादातर पुरुषों की तरह, वह कार कारखाने में पर्यवेक्षक के रूप में अपनी नौकरी को कायम रखता है जहाँ वो दिन एवं रात की शिफ्ट में कार्य करता है। पावेल सारे घरेलू कार्य एवं देखभाल वाले कार्य को करने का प्रयास करता है एवं उनके साथ न्याय करने की कोशिश करता है; उसके अपने शब्दों में, वह अकेले संभालना चाहता है। *भागीदार पिता* के रूप में वह दोनों अपने पुत्र को बडा करने एवं अपने काम को भी करने में गर्व को अनुभव करता है। वो उन तमाम जटिलतायो का सामना करता है जो एकल माँ करती है।

> देखभाल प्रदर्शन पर चर्चा

इन केस अध्ययनों से, ''भागीदार पिता'', ''कमांडर पिता'' एवं ''एकल पेरेंट'' की पितृत्व रीतियों में अन्तर स्पष्ट दिखाई देता है। इन सबमें जो समानता है, वो है, उनका वैतनिक कार्य पर बल देना एवं इस प्रकार प्राधान्य के पुरातन आदर्श को पूर्ण करना, जबकि इसका ह्रास हुआ है एवं वित्तिय रूप से भी उचित नहीं है। जहाँ पवेल ने ''मातृत्व'' देखभाल कार्य की बागडोर संभाली, स्त्रीत्व की कोडिंग बिना परेशानी के प्रतीत होती है; परन्तु देखभाल का उनका प्रारूप उनके कार्यस्थल की मांगों से टकराता है एवं इस अर्थ में उनका अनुभव उन कामकाजी माताओं के जैसा है जो दोहरे कार्यभार से ग्रसित है। सर्गीज ने भूमिका ग्रहण के किसी भी प्रकार के संकेत को सिरे से ही एवं माँ का स्थान लेने के किसी प्रयास को नकार दिया। ऊपर से ऐसा प्रतीत कराया कि वो एकल कमाने वाले है, जबकि तथ्य इसके विपरीत है।

मै दावा करता हूँ कि पावेल एवं कोस्टिका की पितृत्व रीति, उसके समान है, जिसकी अपेक्षा माता से की जाती है। यह एक ऐसी रीति है जो राज्य समाजवाद के अन्तर्गत सह–कमाने वाले परिवारो से निकली है, जहाँ वो एक आदर्श न होकर प्रयोगिक वास्तविकता है। सामाजिक प्रधानता वाले पितृत्व आदर्श की अगर बात की जाये तो यह स्पष्ट है कि पीछे रहे पिताओ को संशोधित पितृत्व रीतियों के अग्रदूतो के रूप में पहचाने जाने का कम या कोई भी मौका नही होता है। इसके बजाय, उन्हे अपने आप को बाहर रखे जाने एवं कमजोर नामकरण के अपमानजनक अनुभव से बचाना होता है। इसके परिणामस्वरूप वो वर्तमान प्रघानता प्रारूप पर कोई प्रश्नचिंह नही लगाते हैं।

कुल मिलाकर, ये सारे केस प्रवास के दो आयामों को प्रदर्शित करते है। पहला, वह भावात्मक क्षति एवं प्रायोगिक दबाव जो परिवार के सदस्य परिवार विघटन के संदर्भ में अनुभव करते है। पीछे रहे पिताओ को अपनी देखभाल क्रिया की चर्चा न केवल अपने साथियो के साथ अपितु अपने पड़ोस एवं वृहद समाज के साथ भी करनी चाहिये। क्योकि ज्यादातर मध्य एवं पूर्व यूरोपियन देश महिला के शटल प्रवास को ''अस्थायी अनुपस्थिति'' मानते है एवं उनके आर्थिक योगदान को अस्वीकार कर देते है। इन महिलाओं को भेजने वाले यह देश, पीछे रहे परिवारो को विशेष सहायता प्रोग्राम नही प्रदान करते है। इसी प्रकार, वे राज्य जिनको घरेलू नौकर एवं देखभाल करने वालों का लाभ मिलता है वो उस भावात्मक मूल्य एवं संघर्ष से अनभिज्ञ रहते है जिनका सामना कामकाजी कामगार करते है। दूसरा, जब महिलायें कमाने वाली हो जाती हैं तो ज्यादातर भेजने वाले समाज यह अनुभव करते हैं कि घर में उनकी अनुपस्थिति एक रिक्तता एवं लैंगिक समस्या लाती हैं। पितृत्व को गरिमापूर्ण ''कार्य'' का पद देना एवं उसका सशक्तिकरण करना भेजने वाले राज्यों का एक उचित प्रत्युतर होगा। परन्तु यह अभी तक कही भी देखने को नही मिला है। ■

सभी पत्राचार हेलमा लुट्ज को
<lutz@soz.uni-frankfurt.de> को प्रेषित करें।

> सिंगापुर, बच्चों को बड़ा करने के लिये एक बहुत अच्छी जगह... किसके लिए?

यूयेन टिओ, नान्यंग तकनीकी विश्वविद्यालय, सिंगापुर और गरीबी, सामाजिक कल्याण और सामाजिक नीति (आर.सी. 19) और समाज में महिला (आर.सी. 32) पर आई.एस.ए. शोध समिति के सदस्य।

सिंगापुर में विरोधाभासी यथार्थ

पिछले कुछ वर्षों में, "काम–जीवन सामजंस्य" का मुददा सिंगापुर में सार्वजनिक मुददे के रूप में सबसे आगे आ गया है। सिंगापुर राज्य ने माता–पिता को – विशेषतः माताओं को – बच्चों की देखभाल के साथ वेतन कार्य के साथ संतुलन बनाने में सक्षम करने के लिये सामाजिक सहायता में वृद्धि की है। साथ ही, विदेशी घरेलू श्रमिक कार्यक्रम, देखभाल जरूरतों के लिये राज्य का समाधान का एक लंबे समय से मुख्य घटक, का अविराम बढना जारी है। सार्वजनिक नीति के ध्यान में वृद्धि के साथ बच्चों की ओर उन्मुख वाणिज्यिक सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला उग आयी है। चाइल्डकेयर केंद्र और किंडरगार्टनस् अपनी कीमत बिंदुओं के अनुरूप सुविधाओं, शिक्षक छात्र अनुपात और अध्यापन पद्धतियों की आत्मप्रशंसा करते हैं। विशेषज्ञ केंद्र उन माता पिताओं की मदद करते हैं जो अपने बच्चों का उनकी रूचियों जैसे संगीत, शतरंज, कला और शिल्प, नृत्य, तलवार के खेल, मार्शल आर्टस, सॉकर, तैराकी, टेनिस, आदि में समय बिताना चाहते हैं। वाणिज्यिक "ट्यूशन केंद्र" शैक्षणिक रूप से उन्मुख, क्षेत्र के प्रत्येक शॉपिंग मॉल में है; ये विद्यालय जाने वाले बच्चों के दैनिक दिनचर्या में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। हांलाकि ये "समृद्ध करने वाले" और ट्यूशन केंद्र देखभाल के केंद्रों के रूप में तैयार नही किये गये हैं, ये फिर भी देखभाल बुनियादी ढांचे के महत्वपूर्ण घटक का निर्माण करते हैं क्योंकि यह वो जगह है जहां कुछ बच्चे सप्ताह में कई बार, अपने दिन के अनेक घंटे बिताते हैं।

घर, स्कूल और केंद्रों के बीच घूमने की व्यवस्था एक बडी संख्या में प्रवासी घरेलू श्रमिकों (मुख्यतः फिलीपींस और इंडोनेशिया से) के कारण संभव होती है जिनके कार्य में एक जगह से दूसरी जगह तक दैनिक संचलन शामिल है। वास्तव में, मेरे पडोस में जहां कई यूरोपीय, अमेरिकन, और ऑस्ट्रेलियन परिवार रहते हैं, मातायें खुले तौर पर और नियमित रूप से टिप्पणी करती हैं कि उनके अपने देश की तुलना में सिंगापुर में बच्चों को बडा करना कितना अदभुत है। जब वे बात करती हैं कि कैसे उनकी यहां की जीवनशैली उनके अपने देश में दोहरायी नहीं जा सकती : दो प्रमुख मुददे उभरते हैं पहला, यहां बच्चों के लिये बहुत सारी रूचिकर गतिविधियां उपलब्ध है; दूसरा, पूर्णकालिक सवेतन सहायता बहुत किफायती है। उनकी

>>

टिप्पणियां इस तथ्य में राहत लाती हैं: वित्तीय साधनों वाले परिवार, सिंगापुर सहित चाहे किसी भी राष्ट्रीयता के हों, को बच्चों को बडा करने के लिये सिंगापुर बहुत अच्छा लगता है क्योंकि उनको यहां प्रथम विश्व की सेवायें और तीसरे विश्व के सेवक मिल जातें हैं।

इस विस्तारित देखभाल विकल्पों के संदर्भ में, अल्प आय वाले सिंगापुर के लोगों के लिये उपलब्ध संभावनायें काफी भिन्न हैं। उनकी दैनिक वास्तविकतायें घर के काम, रोजाना के काम, बच्चों की देखभाल, खाना पकाने और कभी कभी पारियों में सुरक्षा गार्ड, सुपरमार्केट कैशियर और सफाईकर्मी के रूप में शारीरिक रूप से थकाने वाले कार्यों के साथ काफी व्यस्त हैं। वे खाना खरीदने और उपयोगिताओं के लिये भुगतान करने के लिये पैसों के खत्म हो जाने के बारे में चिंतित और तनाव में रहते हैं। उनके बच्चे, मध्यम वर्ग के बच्चों के विपरीत, असाधारण रूप से आत्मनिर्भर हैं: वे आठ साल की उम्र में चावल पका सकते हैं और अंडे पका सकते हैं; अपने आप स्कूल आ–जा सकते हैं; और यहां तक कि अपने छोटे भाई–बहनों का ख्याल रख सकते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है, कि अल्प–आय वाले माता–पिता बताते हैं कि वे घर पर अकेले अपने बच्चों, जिनके पास करने के लिये कुछ नहीं होता है, या अपनी नौकरी को खोने के बारे में जब वे अपने बच्चों के बीमार होने के कारण या स्कूल में अवकाश होने के कारण छुट्टी लेते हैं, या इस बात के लिये कि उनके वेतन उनके सारे बिलों के भुगतान के लिये अपर्याप्त हैं, के लिये चिंतित रहते हैं ।

इससे पता चलता है, कि जब किसी की आय कम है, सिंगापुर बच्चों को बडा करने के लिये इतना अच्छा स्थान नहीं है। सामाजिक सहायता का विस्तार और कुछ माता पिता उपभोक्ताओं के लिये अचंभित करने वाले उपलब्ध विकल्प वर्ग सीमाओं के पार लोगों के जीवन को समान तरीकों से आकार नहीं दे रहे हैं। वर्ग असमानता मायने रखती है, और काम–देखभाल व्यवस्था जो कुछ लोगों को अविश्वसनीय रूप से "परिवार–अनुकूल" दिखाई देता है, अन्य के लिये विशेष रूप से परिवार–अनुकूल नहीं है।

इस विशेष अंक में, लेखकों ने असंख्य तरीकें दिखाये हैं जिसमें एक तरफ व्यक्तियों और परिवारों की व्यैक्तिक, अंतरंग और सूक्ष्म प्रथाओं के बीच सतत और खराब उलझाव हैं और दूसरी ओर देखभाल की वृहद राजनीतिक अर्थव्यवस्था है। मेरा कार्य भी उन तरीकों को उद्धरित करता है जिनमें लोगों द्वारा किये गये "चयन" उनके लिये उपलब्ध विकल्पों द्वारा आकार लेते हैं। परिवारों के लिये उपलब्ध विकल्प, सार्वजनिक सहयोग के विस्तार के बावजूद भी, बाजार के समाधानों और औपचारिक सवेतन श्रम में सहभागिता पर बहुत अधिक निर्भर हैं। यह कहानी नवउदारवादी पूंजीवाद की विशिष्ट अभिव्यक्तियों और राज्यों और समाजों की मानव जरूरतों को पूरा करने के लिये व्यक्तिगत और बाजारीकृत समाधानों के पक्ष में प्रवृतियों की बडी कहानी का एक हिस्सा है। जिस सीमा तक ये प्रवृतियां जारी है, यदि विभिन्न रूपों में, समकालीन दुनिया में, इस बात पर प्रकाश डालना महत्वपूर्ण है कि ये राजनीतिक आर्थिक विकास कैसे निम्न सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के लोगों को विशेष रूप से नुकसान पहुंचा रहे हैं।

देखभाल जरूरतों का विस्तार और अधिक सामान्य तौर पर बाजार समाधानों से इन जरूरतों की पूर्ति और अधिक विशेष तौर पर प्रवासी देखभाल श्रमिक, विशेष रूप से दुनिया के समृद्ध शहरों में इन प्रवृतियों के बने रहने की संभावना है। उन लोगों को शामिल करने के लिये जो वैश्विक देखभाल श्रृंखला का हिस्सा नहीं है परंतु समाजों में जीवन को इन श्रृंखलाओं में गहराई से जटिल बनाते हैं, इन प्रवृतियों के परिणामों को समझने के लिये हमें व्यापक आधार देना होगा। अल्प–आय परिवारों एक संदर्भ में जहां, सामाजिक विस्तार के बावजूद, क्षेत्र महत्वपूर्ण व्यैक्तिक, बाजार–उन्मुख सिद्धांतों को बनाये रखता है, और जहां प्रवासी देखभाल श्रमिक देखभाल और घरेलू कार्य करते हैं, अपनी जरूरतें अस्पष्ट, उपेक्षित और अनदेखा करना जारी रखते हैं। इन परिस्थितियों में कार्य और देखभाल में कठिनाई होती है। नीति–निर्माता और विद्वान भी सामान्यत: इस तथ्य की अनदेखी कर देते हैं कि उच्च–आय परिवारों में किया गया कुछ देखभाल कार्य – बच्चों को विभिन्न बाह्य पाठयक्रम गतिविधियों के बीच चक्कर लगाते रहते हुये – बच्चों के मध्य असमानताओं को जोड़ देते हैं।

मौजूदा राज्य नीतियों, सामाजिक मानदंडों, और कॉरपोरेट प्रथाओं को चुनौती देने वाले नारीवादी विद्वान और कार्यकर्ता के रूप में हमें बातचीत में वर्ग भिन्नताओं और असमानताओं के प्रश्नों को लगातार सम्मिलित करना चाहिये। हम में से बहुत के लिये और बहुत लंबे समय के लिये, यह एक उच्च प्राथमिकता नहीं रही है। हमें उन तरीकों पर अधिक ध्यान देना होगा जिनमें सार्वजनिक नीति महिलाओं की जरूरतों पर असमान तरीकों से संबोधित करती हैं; काम देखभाल प्रवास क्षेत्र की निरंतर आलोचना जो कि घरों में होने वाले वास्तविक श्रम की अनदेखी करते हैं; उन तरीकों के बारे में गहन सोच जिनमें घरों के भीतर श्रम का सहयोग किया जा सके; जैसे कार्यस्थल नीतियों को संबोधित करते समय अल्प–वेतन और कार्य स्थितियों की चर्चा का अधिक एकीकरण; और सार्वजनिक नीति पर सवेतन घरेलू कार्य और समाज में विभिन्न समूहों के कल्याण और साथ में वैश्विक देखभाल श्रृंखला के प्रभावों के बारे में सोच पर एक विस्तारित दृष्टिकोण। ■

सभी पत्राचार यूयेन टिओ को <yyteo@ntu.edu.sg> पर प्रेषित करें।

> जापान में प्रवासी देखभाल श्रमिकों की भर्ती और प्रशिक्षण

पेइ चिया लेन, नेशनल ताइवान यूनिवर्सिटी, ताइवान और प्रवास के समाजशास्त्र पर आई.एस.ए. शोध समिति (आर.सी. 31) के सदस्य

देखरेख कामगारों के लिए प्रशिक्षण सत्र। विश्व बैंक द्वारा चित्र, सीसी बीवाये–एनसीएनडी 2.0

जबकि पूर्वी एशियाई देशों ने व्यापक रूप से दक्षिण पूर्वी एशिया से प्रवासी घरेलू सहायकों और देखभाल करने वाले लोगों को भर्ती किया है, जापान हाल ही तक अपने द्वार खोलने में हिचकता रहा है। 2014 में, प्रधानमंत्री शिंजो एबे ने छः महानगरीय क्षेत्रों में विदेशी घरेलू श्रमिकों के प्रवेश की स्वीकृति देकर महिलाओं की श्रम भागीदारी को बढावा देनी की नयी नीति का प्रस्ताव दिया था। ये श्रमिक, हांलाकि, अपनी सेवा का उपयोग करने घर में नहीं रह सकते; बल्कि वे सेवा एजेंसियों द्वारा नियुक्त और पर्यवेक्षित होते हैं। संभावित श्रमिकों को जापानी भाषा, घरेलू कार्य कौशल और ठीक प्रकार कैसे झुकना चाहिये सहित सांस्कृतिक शिष्टाचार सीखने के लिये 400 घंटे के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेना होता हैं। एक सरकारी अधिकारी ने द जापान टाइम्स को बताया (1 जनवरी 2017): "यह चीजों को करने का एक बहुत ही जापानी तरीका है। हम उनको वैसे बहुतायत में नहीं आने दे सकते जैसे कि वे हांगकोंग में करते हैं।"

प्रवासी घरेलू श्रमिकों के आगमन से पहले, जापान ने इंडोनेशिया, फिलीपींस और वियतनाम के साथ हस्ताक्षरित इकॉनोमिक पार्टनरशिप एग्रीमेंटस (ई.पी.ए.) के आधार पर 2008 तक पंजीकृत नर्स (कांगोशी) और प्रमाणित देखभाल श्रमिक

(काइगो फुकुशीशी) उम्मीदवारों को स्वीकार किया है। समान प्रकार के तर्क को मानते हुये, ई.पी.ए. देखभाल श्रमिकों को निजी घरों में कार्य करने की अनुमति नहीं है। उनको चिकित्सा संस्थानों या देखभाल सुविधाओं में वृद्धों और विकलांगों को सहायता प्रदान करने के लिये नियुक्त किया जाता है।

जापान में प्रवासी देखभाल श्रमिकों के लिये रोजगार शोधकर्ताओं के लिये मूलभूत प्रघटना प्रदान करता हैं कि "आदर्श प्रवासी देखभालकर्ताओं" के उत्पादन में समाज कैसे सांस्कृतिक अर्थों और देखभाल की संस्थागत व्यवस्था का मोलभाव करता है। सरकार ई.पी.ए. उम्मीदवारों के परिचय के दौरान, कोटा का नियंत्रण, राज्य से राज्य भर्ती, और बहुत अधिक लागत वाले गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रावधानों सहित हर कदम पर बहुत सतर्क थी। हालांकि ये ई.पी.ए. उम्मीदवार नर्सिंग पृष्ठभूमि वाले कुशल श्रमिक थे, उन्हें जापान इंटरनेशनल कार्पोरेशन ऑफ वेलफेयर सर्विसेज (JICWELS) के द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थानों के द्वारा संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेना आवश्यक था और फिर अस्पताल और देखभाल सेवाओं में काम या अध्ययन करना था। उन्हें एक पंजीकृत नर्स और प्रमाणित देखभाल श्रमिक बनने के लिये एक राष्ट्रीय परीक्षा देने की उम्मीद की जाती है। इस राष्ट्रीय परीक्षा को उत्तीर्ण कर करने वाले जापान में अनिश्चितकालीन नवीनीकरणीय वीजा और स्थायी निवास के लिये पात्र बन जाते हैं।

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उददेश्य नृजातीय भिन्नताओं और प्रवासियों के पृथकत्व के स्वभाव के मध्य सेतु बनाना है। बियेता स्वीतेक ने जापानी नर्सिंग होम्स को "सांस्कृतिक अंतरंगता" का वातावरण कहा है, जहां जापानी परंपराओं की नकल अतीत की एक अनिवार्य छवि को फिर से निर्मित करती हैं, और सामाजिक अलगाव के बावजूद वृद्ध निवासियों को सहज महसूस कराती है। प्रवासी श्रमिकों को जापानी देखभाल संस्कृति के अनुरूप इंटरएक्टिव मानदडो ं और प्रथाओं को अपनाने की आवश्यकता होती है, जिससे वरिष्ठ नागरिकों को सांस्कृतिक अंतरंगता और व्यक्तिगत गरिमा की भावना महसूस होती है क्योंकि उन्हें बिना नातेदारी और जातीय संबंधों वाले श्रमिकों से देखभाल प्राप्त होती है।

पाठ्यक्रम का एक पर्याप्त हिस्से में जापानी भाषा के निर्देश शामिल होते हैं – ना सिर्फ वार्तालाप के लिये मूलभूत शब्दावली परतुं पढने और लिखने के लिये उच्च कौशल (पूर्व–प्रस्थान प्रशिक्षण में 391 घंटे और 675 घंटे जापान में)। सबसे चुनौतीपूर्ण लक्ष्य चीनी अक्षरों (कांजी) में प्रवीणता हासिल करना है, क्योंकि चिकित्सा दस्तावेजों में ध्वनियात्मक लेखन के स्थान पर जापानी चिकित्सा विशेषज्ञ कांजी का उपयोग करते हैं। जापानी प्रवीणता ना केवल संचार और दस्तावेजीकरण में, बल्कि जापानी – सम्मानसूचक शब्दों (केइको) के साथ, जो देखभालकर्ताओं को बुर्जुगों को सम्मान देने में भी मदद करता है – सही तरीके से बोलने के लिये भी महत्वपूर्ण है।

पाठ्यक्रम देखभाल को एक सांस्कृतिक प्रथा के रूप मे रेखांकित करता है और ई.पी.ए. उम्मीदवारों को "जापानी देखभाल कार्य" के सांस्कृतिक पहलुओं के बारे में सीखने के लिये मदद करता है। जापान में "सफाई" की सांस्कृतिक भावना के बारे में निर्देश उन्हें यह समझने में मदद करते हैं कि स्पंज स्नान के स्थान पर टब स्थान को जापानी वरिष्ठ नागरिकों की उत्तम देखभाल का एक अनिवार्य भाग क्यों समझा जाता है। जापान में, डायपर उत्पादनकर्ता अब बच्चों के डायपर से अधिक व्यस्कों के डायपर बेचते हैं। प्रशिक्षण सत्रों में, ई.पी.ए. उम्मीदवार विभिन्न समय और उददेश्यों के रंगों के कोड वाले डायपरों को बदलनें की उचित प्रक्रिया के बारे में सीखते हैं। वे जापानी वरिष्ठ नागरिकों की नजर से व्यस्कों के डायपर को स्वायत्ता और गरिमा के साथ जोड कर देखने के लिये प्रशिक्षित किये जाते हैं।

पाठ्यक्रम में जापानी समाज और संस्कृति के विषय भी सम्मिलित हैं। उन्हें जापानी भोजन–संबंधी परंपराओं जैसे कि संरक्षित के साथ खाना खाते समय "इतादाकिमासु" (मैं आभारी होकर प्राप्त करता हूं।) कहना सिखाया जाता है। वे विशेष जापानी भोजन जैसे कि युजु और वासाबी की महक की प्रशंसा करना सीखते हैं। वे पारंपारिक पोशाक का सम्मान करना सीखते है – किमोनो को सही तरीके से पहनने के बारे में (बायीं तरफ को दायी ओर दबाकर) – और कपडे बदलते समय उचित सहायता प्रदान करने के लिये शर्म की सांस्कृतिक समझ के बारे में निर्देशित होते हैं। कुछ ई.पी.ए. उम्मीदवार, जिनका मैने साक्षात्कार किया, ने प्रशिक्षण के इस भाग को "बहुत उपयोगी" माना परंतु कुछ ने स्पष्ट रूप से "पूरी तरह से बेकार" कहकर आलोचना की (कोई नर्सिंग होम में किमोनो नहीं पहनता!)। जापानी परंपराओं और संस्कृति के साथ प्रवासी श्रमिकों की परिचितता को उपजाने का व्यवहारिक कार्य से अधिक प्रतीकात्मक अर्थ है; यह न सिर्फ बुजर्ग संरक्षित के लिये परंतु बडे पैमाने पर जापानी समाज के लिये भी सांस्कृतिक अंतरंगता की भावना को बढाता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम जापानी सहकर्मियों के साथ संपर्क और बातचीत को भी शामिल करता है। ई.पी.ए. उम्मीदवार जापानी अस्पतालों में कार्य संस्कृति या देखभाल सुविधाओं के बारे में निर्देशित होते हैं, जहां काम के घंटे लंबे और कठोर होते हैं, और प्रस्थिति पदानुक्रम स्पष्ट होता है। कर्मचारियों को मानकीकृत प्रकियाओं की पालना करनी होती है और पेशेवर देखभाल के आचरण को सुनिश्चित करने के लिये विस्तृत दस्तावेज लिखना होता है। ई.पी.ए. प्रवासीयों के व्यवसायिक प्रमाण प्राप्त करने और जापान में प्रस्थिति गतिशीलता प्राप्त करने की संभावना भाषा प्रवीणता की उच्च सीमा के कारण बहुत कम रही है। यहां तक कि जो लाइसेंस प्राप्त कर लेते हैं, अंत में घर वापिस जाने का निर्णय कर लेते हैं, क्योंकि वे जापान के सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण में अलग और अपवर्जित महसूस करते हैं।

जापान का ई.पी.ए. कार्यक्रम प्रवासी देखभाल श्रमिकों को "पेशेवर अन्य" के रूप में देखते और व्यवहार करते हैं। अन्य पूर्वी एशियाई मेजबान देशों में अतिथि श्रमिक व्यवस्था की तुलना में, यह कार्यक्रम प्रवासी श्रमिकों को अधिक अधिकारों और लाभों की पहुच प्रदान करता है। हालांकि वे व्यवसायिक प्रमाणीकरण की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद स्थायी निवास की टिकट कमा सकते हैं, कौशल के मूल्यांकन स्थानीय संस्कृति और भाषा में इतने अधिक पैठ बनाये हुये हैं कि बहुत कम यह प्रस्थिति प्राप्त कर पाते हैं। नतीजतन, व्यवसायिकता सामाजिक गतिशीलता के लिये एक विश्वसनीय राह प्रदान नहीं करती है परंतु विदेशियों के अपवर्जन का एक तंत्र बन जाती है। ■

सभी पत्राचार पेइ चिया लेन को <pclan@ntu.edu.tw> पर प्रेषित करें।

> दैनिक श्रम के रूप में गर्भावस्था और प्रसव

शर्मिला रूद्रप्पा, टेक्सास–ऑस्टिन विश्वविद्यालय, यूएसए के द्वारा

गर्भावस्था और प्रसव अंतर्राष्ट्रीय व्यापार बन गये हैं।

नस्लीय शुद्धता, पितृसत्तात्मक वंश, और मातृ निष्ठा के आदर्शों से अतिनिर्धारित, गर्भावस्था और प्रसव कभी भी सिर्फ प्राकृतिक प्रघटना नही हैं बल्कि वे गहराई से सांस्कृतिक रूप से मध्यस्थता–प्राप्त लैंगिक घटनायें हैं जो परिवारों और समुदायों को बनाने के केंद्र में उपहार देने और विनिमय की सामाजिक प्रक्रियाओं को बढ़ाती हैं। प्रजनन घरेलू कार्य, जो मातायें करती हैं, को समर्पित देखभाल, निस्वार्थ प्रेम, और मातृ त्याग से प्रभावित माना जाता है। परिवारों का बनाने में प्रजनन श्रम के इन लैंगिक स्वरूपों की प्रमुखता के कारण जिन्हें पवित्र के रूप में आदर्श बनाया गया है, गर्भावस्था और प्रसव को दूषित रूपयों के विनिमय के धब्बे से बचाया जाता है जो लेनदेन संबंधी क्षणिक संबंधों से चिन्हित बाजारों की अनाडी दुनिया में घूमता है। तब क्या होता है, जब महिलायें मजदूरी के बदले में गर्भवती होती हैं और बच्चों को जन्म देती हैं? गर्भावस्था और प्रसव किस प्रकार के दैनिक श्रम है?

ये प्रश्न व्यवसायिक सरोगेसी के संदर्भ में उठते हैं जहां एक सरोगेट माता एक इच्छित जोडे या एकल अभिभावक के लिये मजदूरी के बदले में गर्भ धारण करती है और बच्चे या बच्चों को जन्म देती है। सरोगेट माता का उसमें प्रत्यारोपित भ्रूण से कोई अनुवांशिक संबंध नहीं होता है, जो कि कानूनी रूप से इच्छित अभिभावकों का होता है। भ्रूण स्वयं विभिन्न बाजार व्यवस्थाओं से पैदा होता है जिसमें अन्य व्यक्तियों और लिंग कोशिका बैंकों से मानव अंड या शुक्राणु की खरीद शामिल होती है। हालांकि विभिन्न सामाजिक कर्ता इस बारे में अस्पष्ट होते हैं कि वास्तव में किसका विनिमय किया जा रहा है, उद्योग मानक यह स्थापित करते हैं कि सरोगेट माताओं को दिये जा रहे रूपये बच्चें के लिये नहीं है, परंतु उस बच्चे को पैदा करने की उसकी गर्भधारण सेवाओं के लिये है।

जैसा कि मैंने सरोगेसी पर मेरे शोध में सीखा, अधिकतर लोगों की तरह, कामकाजी वर्ग की भारतीय सरोगेट मातायें और उच्च मध्यम वर्गीय के इच्छित अभिभावक जिनका मैंने साक्षात्कार किया, ने पहले गर्भावस्था के लिये मुद्रा विनिमय नहीं किया था। इन व्यक्तियों के पास कुछ संसाधन थे जिनसे उन्हें जैविक प्रजनन सेवाओं के बाजारीकरण के साथ कैसे निपटना है के बारे में सोचना होता है। नतीजतन, वे विनिमय के वंशानुगत तरीकों के बारे में सोचने लगते हैः क्या सरोगेसी एक उपहार है, या एक वस्तु विनिमय है? उपहार और वस्तुऐं उन चीजों के लिये उपयोग में लिये जाने वाले शब्द हैं जो सामाजिक क्षेत्रों में संचरित हैं, परंतु वे कैसे संचरित होती हैं, यह एक महत्वपूर्ण भेद है।

>>

उपहार और वस्तुओं के आदान–प्रदान पर व्यापक साहित्य है, परंतु संक्षेप में उपहार विनिमय व्यक्तियों या व्यक्तियों के समूहों के बीच सामाजिक संबंध को दर्शाता है। उपहार विनिमय समानतावादी नहीं है परंतु आयु, लिंग, विकलांगता, कामुकता, धर्म, नस्ल, और जाति पर निर्धारित सामाजिक पदानुक्रमों पर आधारित असमानताओं से चिन्हित है। वस्तु विनिमय, दूसरी ओर, क्षणिकता से चिन्हित हैं जहां श्रमिक और उपभोक्ता आमतौर पर एक दूसरे के लिये अजनबी होते हैं। रुपयों के बदले में, उपभोक्ताओं को श्रमिकों से एक वस्तु मिलती है, जो कि पूंजीवादी संरचनाओं के कारण लगभग हमेशा नुकसान में रहते हैं। इस प्रकार, उपहार और वस्तुऐं सामाजिक संबंधों को प्रतिबिंबित करती हैं। उपहार और वस्तु अर्थव्यवस्था उस व्यक्ति के रूपों से बंधी होती है, जो विविध रूप से गठित है और बदले में, स्वयं उपहार और वस्तु विनिमय से गठित होती है।

इस विवाद के माध्यम से कि गर्भावस्था और प्रसव एक उपहार है या एक वस्तु है, मेरे शोध में इच्छित अभिभावकों और सरोगेट माताओं ने अपने संबंधों की शर्तों पर बातचीत की। हालांकि सरोगेट माताओं ने मोटे तौर पर गर्भधारण सरोगेसी में जाने और बेहतर वेतन की बातचीत की कोशिश के अपने प्रयासों के बारे में बताया,वे आशावान थी कि व्यवसायिक सरोगेसी में उपहार–विनिमय के सिद्धांतों को कायम रखा जायेगा। उनको पता था कि सरोगेसी से उनकी आमदनी कुछ महीनों में ही गायब हो जायेगी, और उनके पास उनके श्रम प्रयासों को दिखाने के लिये कुछ ठोस नहीं होगा। इसके बजाय वे उच्च–मध्यम वर्गीय इच्छित अभिभावकों के साथ चलने वाले सामाजिक संबंधों की आशा करती हैं क्योंकि वे इन नेटवर्कों पर अल्पकालिक ऋणों, नौकरियों के लिये सिफारिश, और अन्य सामाजिक वस्तुएँ जो आर्थिक पूंजी में परिवर्तित की जा सकें, के लिये भरोसा कर सकती हैं। इच्छित अभिभावक, हालांकि, स्पष्ट थे : कि सरोगेट माताओं के प्रयासों के माध्यम से प्राप्त बच्चे की तुलना रुपये से नहीं हो सकती हैं, असंयत दावों में उपहार के निर्देश को काम में लेने के बावजूद उन्होंने पूंजीवादी समाज में उपभोक्ताओं की तरह व्यवहार किया। उनका तीसरी दुनिया की कामकाजी महिलाओं के साथ संबंध बनाये रखने में कोई रूचि नहीं थी, और आमतौर पर एक बार लेनदेन के बाद सारे संपर्कों में कटौती की जाती थी। उनके अनुबंधों के अनुसार, वे स्पष्ट और निष्पक्ष प्रतिभागी थे क्योंकि उन्होंने पूरा भुगतान किया था और कानूनी तौर पर कुछ और देने के लिये बाध्य नहीं थे।

हालांकि, सरोगेसी एजेंसियां, बांझपन के चिकित्सक, और इच्छित अभिभावक स्पष्ट रूप से ऐसा नहीं कहते हैं, सरोगेट माता से उनकी बातचीत और झुकाव इसे स्पष्ट कर देता है कि वे सरोगेसी को एक सवेतन श्रम के एक प्रकार की तरह देखते हैं। विभिन्न समाजशास्त्री वस्तुकृत प्रजनन श्रम के उभरते हुये स्वरूपों का वर्णन करने के लिये "माता श्रमिक" और "औद्योगिक गर्भ" जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं।

लेकिन बाजार में शामिल होने के बाद गर्भावस्था और प्रसव किस प्रकार का श्रम बन चुके हैं? पहली नजर में, सरोगेसी को एक अंतरंग श्रम के रूप में देखा जा सकता है, जो कि शारीरिक जरूरतों और देखभाल प्राप्तकर्ताओं के इच्छाओं के माध्यम से पारस्परिक संबंधों को गढने, बनाये रखने और प्रबंधन को शामिल करते हुये वेतन वाला रोजगार है। हालांकि अंतरंग श्रम, सरोगेसी की तरह श्रमिक के पूरे शरीर को शामिल नही करता हैं। सेक्स कार्य कुछ नजदीक हो सकता है, परंतु वह व्यवसायिक सरोगेसी में काम आने वाले ओजेनेसिस और गर्भधारण के इन–विवो प्रक्रियाओं के स्वरूपों को शामिल नहीं करता है, जो अधिशेष मूल्य बनाते हैं। जैविक, शारीरिक प्रक्रियाओं के शामिल होने के कारण, सरोगेसी को एक नैदानिक श्रम के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जहां महिलायें चिकित्सकों और अन्य चिकित्साकर्मियों को अपने शरीरों को लाभ अर्जन के लिये शारीरिक प्रक्रिया करने के लिये सहमति देती हैं।

सरोगेसी को नैदानिक श्रम के रूप में समझना ना केवल गर्भधारण और गर्भावस्था से अधिशेष निकालने की प्रक्रियाओं का वर्णन करता है, यह महिलाओं द्वारा मजदूरी अर्जित करने वाले जैविक प्रजनन श्रम को वैध करने की राह भी प्रदान करता है।शारीरिक वस्तुकरण के गहराते स्वरूप जैसे सरोगेसी निस्संदेह विकृत विकास है, परंतु इसे निर्विवाद रूप से अधिक मासूम समय से दूर नहीं किया जा सकता जब महिलाओं का श्रम परिवार और रिश्तेदारी के नेटवर्कों के निजी क्षेत्र से पूरे तरीके से बंधा होता है। सरोगेसी को नैदानिक श्रम के रूप में पहचानना उन तरीकों को सराहना है जिनमें जीवन का वस्तुकरण गहरा गया है, और बाल देखभाल श्रमिक, प्राथमिक विद्यालय शिक्षक, और नर्सों जैसे अन्य प्रकार के प्रजनन श्रमिकों के साथ श्रम संगठन और गठबंधन बनाने की राह खोलता है। ■

सभी पत्राचार शर्मिला रूद्रप्पा,
<rudrappa@austin.utexas.edu> को प्रेषित करें।

> घरेलू श्रमिकों के अधिकारों के लिए शोध नेटवर्क

सबरीना मरचेती, का फोसकेरी वेनिस विश्वविद्यालय, इटली और **हेलन स्वेजकन**, ओसनाब्रक विश्वविद्यालय, जर्मनी और प्रवास के समाजशास्त्र पर (आर.सी. 31) और श्रमिक आंदोलन पर (आर.सी. 44) आई.एस.ए. शोध समिति के सदस्य द्वारा मैरी गोल्डस्मिथ (मेक्सिको), सोनल शर्मा (भारत), लिसामैरी हेमीशॉफ (जर्मनी), वर्ना वइजर (फिलीपींस), और ऑस्काना बालाशोवा (यूक्रेन) से सामग्री सहित

वेनिस, इटली में नेटवर्क की बैठक, जून, 2017। सबरीना मरचैती एवं हेलेन श्वेनकेन द्वारा फोटो

घरेलू श्रमिकों के अधिकारों के लिये शोध नेटवर्क (आर.एन.डी.डब्ल्यू.आर.) सक्रिय कार्यकर्ता शोधकर्ताओं और सवेतन घरेलू कार्य के क्षेत्र की घरेलू श्रमिक संगठनों के सदस्यों का एक वैश्विक नेटवर्क है जो लगभग एक दशक से अस्तित्व में है।

> पृष्ठभूमि

जैसा कि पिछले दशक में सामाजिक विज्ञानों में लिंग, प्रवास, और देखभाल बाजारों के वैश्वीकरण ने ध्यान आकर्षित किया है, अधिक शिक्षाविद् प्रायः घरेलू श्रमिकों और उनके संगठनों के सहयोग से सवेतन घरेलू कार्य पर शोध परियोजनायें आयोजित कर रहे हैं।[1] ये शोध प्रयास सामान्यतः बहुत कम जुडे हुये होते हैं। इसलिये, इंटरनेशनल सेंटर फोर डवलपमेंट एंड डिसेंट वर्क और द ग्लोबल लेबर यूनिवर्सिटी से संबंद्ध शोधकर्ताओं के एक कोर समूह ने *डबल्यू.आइ.ई.जी.ओ., इंटरनेशनल डॉमेस्टिक वर्कर फेडरेशन*, और द डच ट्रेड यूनियन एफ.एन.वी. बोन्डगेनोटन के समर्थन से पाकर और विभिन्न यूरोपीय और अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के अन्य शोधकर्ताओं के साथ मिलकर 2009 में (आर.एन.डी.डब्ल्यू.आर.) की शुरूआत की। इस संस्थापक समूह ने ना केवल घरेलू कार्य पर शोध के लिये प्रतिबद्धता के लिये, बल्कि शोध और उनके अधिकारों की वकालत दोनों के लिये घरेलू श्रमिकों के सहयोग की जरूरत व्यक्त की।

शोधकर्ताओं और कार्यकर्ताओं के रूप में दोहरी पहचान वाले व्यक्तियों के रूप में, आई.एल.ओ. कन्वेंशन नंबर 189 की बातचीत के दौरान श्रमिकों के समूहों का सहयोग करने के लिये आधारभूत शोध कर रहे थे, उनमें से कुछ ने शोध उद्देश्यों के लिये बातचीतों का अवलोकन करने के लिये भी नेटवर्क के संस्थापक जेनेवा में कई बार मिले। अन्य ने आई.एल.ओ. के अंदर अपने दृष्टिकोणों का योगदान दिया। परंतु यह एक केवल शोधकर्ता मुद्दा नहीं है। जी.एल.यू. समूह में, आई.डी.डब्ल्यू.एफ. (पहले का नाम आई.डी.डब्ल्यू.एन.) से घरेलू श्रमिकों के साथ शोध के बारे में चर्चा की जैसे कि, और कैसे शोधकर्ता और संगठित घरेलू श्रमिक अच्छे से सहयोग कर सकते हैं। कई संगठित घरेलू श्रमिकों के बीच, शोध (कर्ताओं)

>>

के बारे में निराशा थीः चूंकि उनको शोध के परिणामों या अपने लिये कोई लाभ को कभी देखे बिना बहुत सारा समय लेने वाले साक्षात्कार देने थे; अन्य ने शिकायत की कि कुछ शोधकर्ता घरेलू श्रमिकों के रूप में उनके जीवन और कार्य के बारे में सिर्फ पीड़ित. प्रकार के वर्णन में रूचि रखते थे। इसलिये जब नेटवर्क बनाया गया और इसके सिद्धांतों पर चर्चा की गयी घरेलू श्रमिक भी मेज पर बैठे।

इस आधार पर, आर.एन.–डी.डब्ल्यू.आर. को जून 2011 में जेनेवा में आई.एल.ओ. की इंटरनेशनल लेबर कान्फेरेंस में आधिकारिक तौर पर लॉन्च किया गया जिसमें कन्वेंशन नंबर 189 "डिसेंट वर्क फोर डोमिस्टिक वर्करस्" पर चर्चा की गयी और पारित किया गया। सी189 के अनुमोदन को बढ़ावा देना और इसके प्रभावों का अध्ययन करना, इसलिये, नेटवर्क के प्रमुख कार्यों में से एक था।

> सिद्धांत

आर.एन.–डी.डब्ल्यू.आर. निम्न सिद्धांतों पर आधारित शोध का समन्वय और संचालन करता है :

- सार्थक और गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान करना जो घरेलू श्रमिकों के संगठित प्रयासों की जरूरतों को भी पूरा करे।
- अनुसंधानकर्ताओं, आई.डी.डब्ल्यू.एफ. के प्रतिनिधि, और अन्य घरेलू श्रमिकों के संगठनों के साथ विश्वास, संवादात्मक संबंध पैदा करना।
- अनुसंधान के परिणामों को न केवल अकादमिक दर्शकों के लिये बल्कि घरेलू श्रमिकों और उनके संगठनों के लिये सुलभ बनाना।
- संभवतया भौगोलिक क्षेत्रों तक बढ़ाते हुये, क्षेत्र में समान विचारधारा वाले शोधकर्ताओं के एक समुदाय का निर्माण करना।
- घरेलू श्रमिकों की गतिविधियों को बढावा देने के लिये अनुसंधान परिणामों को प्रस्तुत करना, प्रकाशित करना और प्रसार करना और अधिकारों के लिये अभियान चलाना।

> परिपाटियाँ

नेटवर्क का एक प्रमुख कार्य शोधकर्ताओं का एक वैश्विक मानचित्र का अनुरक्षण करना है जो इसके प्रमुख सिद्धांतों को साझा करें, और उनको एक दूसरे के साथ जोड़ना है। इस उद्देश्य के लिये, 2011 से आर.एन.–डी.डब्ल्यू.आर. के संयोजक नियमित रूप से एक न्यूजलैटर संपादित करते हैं जो क्षेत्र में वर्तमान शोध के बारे में और घरेलू श्रमिकों के अधिकारों के संबंध में विकास के बारे में जानकारी इकठ्ठा करता है।

हर साल गर्मियों की शुरूआत में एक बार नेटवर्क मिलता है, आमतौर पर नेटवर्क के एक सदस्य के द्वारा आयोजित सम्मेलन या अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय परिषद या श्रम अध्ययन सम्मेलनों के दौरान। नेटवर्क के सदस्य घरेलू श्रमिक, और रूचिकर शोध पर स्थानीय विकास के बारे में नवीनतम जानकारी देते हैं और संभावित संयुक्त अनुसंधान प्रश्नों पर भी चर्चा होती हैं।

2014 में, हमने मैनुअल "वी वांट टू बी प्रोटागनिस्टस् ऑफ अवर ओन स्टोरीज" को प्रकाशित किया। घरेलू श्रमिक और शोधकर्ता कैसे संयुक्त रूप से शोध कर सकते हैं पर एक मैनुअल (कैसलः कैसल यूनिवर्सिटी प्रैस, मुफ्त डाउनलोड) प्रकाशित किया। मैनुअल घरेलू श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा जरूरतों पर नेटवर्क की एक सहयोगी अनुसंधान परियोजना का एक परिणाम है। दक्षिण अफ्रीका और नीदरलैंड में घरेलू श्रमिक हमसे इस परियोजना में जुड गये। इसका एक कार्य घरेलू श्रमिकों के संगठनों को पेशेवर अनुसंधानकर्ताओं पर निर्भर हुये बिना उनके काम को दस्तावेज करने में मदद करना भी है।

> चुनौतियां

अब तक का वर्णन समान विचारों वाले कार्यकर्ता अनुसंधानकर्ताओं द्वारा पूर्ण रूप से सफल प्रयोग जैसा लग सकता है जो वैश्विक रूप से जुड़ पाये और सामाजिक रूप से प्रासंगिक शोध कर रहे हैं, आंशिक रूप घरेलू श्रमिकों के सहयोग से और उनके लिये जवाबदेह शोध। हालांकि, वहां कई चुनौतियां हैं।

नेटवर्क की लगभग दस साल की गतिविधियों के बाद, इसके कुछ सक्रिय शोधकर्ता (कम से कम आंशिक रूप से) अन्य शोध केंद्रबिदुंओं की ओर चले गये हैं या उन विश्वविद्यालयों या संगठनों का छोड़ चुके हैं जिनमें वे इस प्रकार का सक्रियतावादी शोध कर सकते थे। इसके अलावा, काफी स्वाभाविक रूप से, आई.एल.ओ. कन्वेंशन नंबर 189 को तैयार करने के आसपास की गति गायब हो चुकी है, शोध और सक्रियता "सामान्य" तक वापिस आ गयी है, इसका अर्थ यह है कि कुछ उत्साह और सार्वजनिक हित, इस मुद्दे पर अब उतने मजबूत नहीं है। नेटवर्क के सिद्धांतों को गंभीरता से लेते हुये, हमें भी यह स्वीकारना होगा कि अपने शोध एजेंडे को विकसित करने में घरेलू श्रमिक संगठनों का सहयोग और साथ ही हमारे प्रकाशनों को घरेलू श्रमिकों और उनके संगठनों के लिये सुलभ बनाने के प्रयास अधिक मजबूत और व्यवस्थित हो सकते थे। हमारे नेटवर्क के शोधकर्ता जो नियमित विश्वविद्यालयों में नियुक्त हैं, ने भी ध्यान दिया कि सहभागी और एक्शन रिसर्च को परंपरागत शोध वातावरण में एकीकृत करने में और अकादमिक करियर में मूल्यांकन मानदंडों को लागू करने में प्रायः मुश्किल होती है। अंत में, नेटवर्क का स्थानीय प्रसार असमान है और हमारे विश्व मानचित्र पर कई रिक्त स्थान हैं। फिर भी, इन कमियों और चुनौतियों के बावजूद, नेटवर्क और संपर्कों के अंदर परस्पर बातचीत जो हम सुगम बनाते हैं, को हमारे सदस्यों के मध्य काफी सराहा गया है – और इससे ज्यादा इस क्षेत्र में कार्यकर्ता शोध इतना सामान्य नहीं है और इसलिये इस केंद्रबिंदु के साथ वैश्विक नेटवर्क का अस्तित्व हमारी दैनिक शोध प्रथाओं में एक वास्तविक लाभ है। ■

अधिक जानकारी के लिये, हमारे ब्लॉग या फेसबुक पर आयें।

1. संदर्भ के लिये हमारे ब्लॉग या न्यूजलैटर देखें।

सभी पत्राचार सैबरीना मरचेती <sabrina.marchetti@unive.it> और हेलन स्वेजकन <hschwenken@uni-osnabrueck.de> पर प्रेषित करें।

> समाजशास्त्रीय अवधारणा के रूप में प्रतिध्वनि का विचार

हार्टमुट रोजा, जेना विश्वविद्यालय, जर्मनी द्वारा

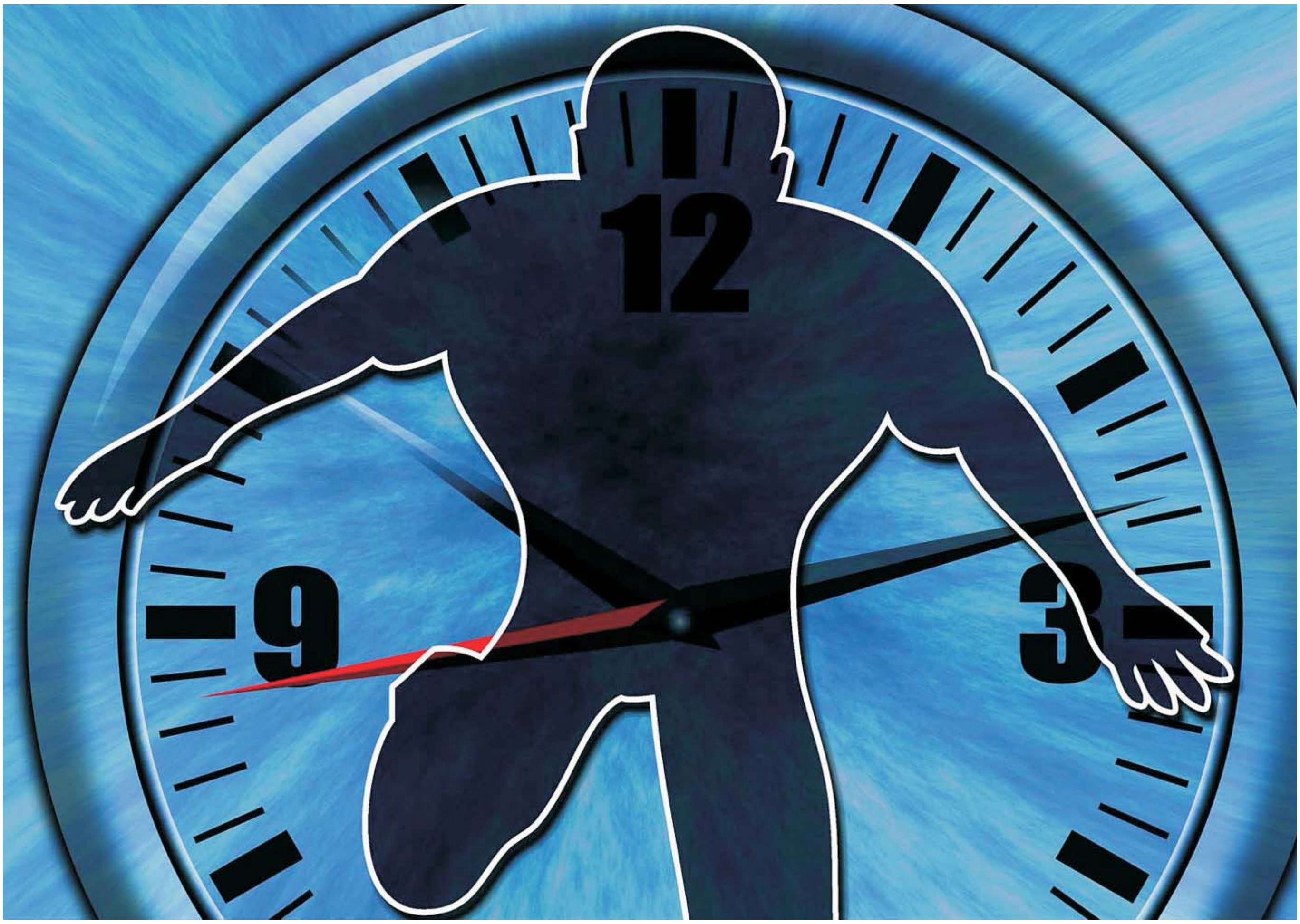

बहुत तीव्र, बहुत अधक का आदर्श गहन अलगाव पैदा करता है।

दुनिया में होने का एक गैर–अलगाववादी रूप क्या है? अलगाव का अन्य क्या है? निम्नलिखित लेख इस प्रश्न का उत्तर, प्रतिध्वनि की अवधारणा को स्थापित करके देने का प्रयास करता है।

अलगाव, मेरा दावा है, चीजों की दुनिया, लोगों से, स्वयं जिसमें कोई उत्तरदायित्व नहीं है अर्थात कोई सार्थक आंतरिक नाता नहीं है, से सम्बन्धित होने को एक विशिष्ट तरीका है। यह बिना किसी

> >

“ अवधारणात्मक रूप से अनुनाद का आशय है कि हम स्वयं को छूने और यहाँ तक कि गैर–पूवार्नुमेय और गैर–नियन्त्रित तरीके में रूपान्तरित होने दें ”

सच्चे सम्बन्ध का रिश्ता है। इस तरीके में निश्चित तौर पर कारकीय और निमित्त सम्बन्ध एवं अन्तक्रिया है, लेकिन दुनिया (अपने सभी गुणों के साथ) विषय द्वारा गृहित नहीं हो सकती, इसे बोलने पर मजबूर नहीं किया जा सकता है। यह बिना ध्वनि और रंग के प्रतीत होती है। अतः अलगाव एक ऐसा सम्बन्ध है जो सच्चे, जीवंत विनिमय और सम्पर्क की अनुपस्थिति से चिन्हित होता हैः एक मूक और ग्रे दुनिया और एक शुष्क विषय के मध्य कोई जीवन नहीं है, दोनों ही या तो 'जमें हुए' या वास्तव में अस्त व्यस्त और पारस्परिक रूप में विमुख प्रतीत होते हैं। इसलिए अलगाव की स्थिति में स्व और दुनिया पूर्ण रूप से उदासीन या शत्रुतापूर्ण तरीके से संबन्धित प्रतीत होते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि अलगाव की वास्तविक समझ तब अधिक ग्राह्य हो जाती है जब हम उसके विकल्पों के बारे में सोचते हैं। अलगाव का दूसरा पक्ष दुनिया से संबन्धित होने का वह तरीका है जिसमें व्यक्ति उन लोगों, स्थानों, वस्तुओं आदि से प्रभावित, प्रेरक और संबोधित महसूस करता है जिससे उसका सामना होता है। हम सब जानते हैं कि किसी की नजर या आवाज से, जिस संगीत को हम सुनते है, जिस पुस्तक को हम पढ़ते हैं या जिस स्थान पर भ्रमण करते हैं, से प्रभावित होना क्या होता है। अतः किसी चीज से प्रभावित होने की क्षमता और फलस्वरूप दुनिया के उस हिस्से में अतर्निहित रूचि विकसित करना दुनिया से संबंधित किसी भी सकारात्मक तरीके का मुख्य तत्व है। और जैसा कि हम मनौवैज्ञानिकों और मनोचिकित्सकों से जानते है, उसकी अनुपस्थिति अवसाद और बर्नआउट के अधिकांश रूपों में केन्द्रीय तत्व हैं। फिर भी अलगाव को दूर करने के लिए स्नेह पर्याप्त नहीं है। जिस चीज की अतिरिक्त आवश्यकता है वह है कॉल का उतर देने की क्षमता : जब हम उपरोक्त तरीकों से जुड़ा महसूस करते हैं तो हम अक्सर रोंगटे खडें होने, दिल की धड़कन में वृद्धि, रक्तचाप में बदलाव, त्वचा प्रतिरोध इत्यादि जैसी शारीरिक प्रतिक्रिया देते हैं। अनुनाद, जैसा मैं स्नेह (कुछ जो हमें बाहर से छूता है) और भावनाएँ (हम प्रतिक्रिया द्वारा प्रत्युत्तर देते है और इस प्रकार सम्पर्क बनता है) की दोहरे चलन को कहना चाहता हूँ, का हमेशा और अनिवार्य रूप से शारीरिक आधार होता है। लेकिन जो प्रत्युत्तर हम देते हैं, उसका मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और संज्ञानात्मक पक्ष भी हैरू यह उस अनुभव पर आधारित है कि हम तान सकते है और कॉल का जवाब दे सकते है, कि हम अपने आंतरिक और बाह्य प्रतिक्रिया से सम्पर्क स्थापित कर सकते है। इसी प्रक्रिया से विनियोजन की प्रक्रिया बनती है। हम इस प्रकार के अनुनाद का, उदाहरण के लिए प्रेम या दोस्ती के रिश्तों में, लेकिन वास्तविक संवाद में भी, जब हम संगीत वाद्य बजाते हैं, खेल में और अक्सर कार्यस्थल पर भी अनुभव करतें है। ग्रहणशील और सक्रिय संपर्क प्रगतिशील आत्म–एवं विश्व परिवर्तन की प्रक्रिया को ले कर आता है।

इस प्रकार, अनुनाद न सिर्फ स्पर्श या प्रभावित होने के अनुभव पर बल्कि आत्म प्रभावकारिता की धारणा पर निर्मित होता है। सामाजिक आयाम में आत्म–प्रभावकारिता का अनुभव तब होता है जब हमें पता चलता है कि हम वास्तव में दूसरों तक पहुँचने और दूसरों को प्रभावित करने में सक्षम है और वे वास्तव में हमारी सुनते हैं और जुड़ते है और बदले में हमें जवाब देते हैं। लेकिन आत्म–प्रभावकारिता का अनुभव हमें तब भी हो सकता है जब हम फुटबाल खेलते हैं या पियानो बजाते हैं जब हम टेक्स्ट लिखते हैं, जिसके साथ संघर्ष करतें हैं (और जो हमेशा अपनी आवाज बोलता है) और यहाँ तक कि जब हम समुद्र किनारे खड़े होते है और बहती लहरों पानी और हवा के साथ जुड़ते है। इस प्रकार के ग्रहणशील स्नेह और प्रतिक्रियाशील आत्म–प्रभावकारिता में ही स्व और दुनिया एक उचित तरीके से संबंधित होते हैः आमना सामना दोनों पक्षों व्यक्ति और दुनिया के अनुभव को बदलता है। बेशक, इस दावे के साथ जुड़ी कुख्यात समस्या यह है कि यह तुरन्त इस आपत्ति को उकसाता है कि जहाँ व्यक्ति वायलन या समुद्र के साथ अंतक्रिया में बदल सकता है, वे शायद ही परिवर्तित होंगें। जहाँ यह तर्क वास्तव में शायद इतना निर्दोष नहीं है जिसमें प्रत्युत्तर देने में सक्षम एकमात्र चीज मनुष्य है पर निर्भर है। यानि की "असममित मानवशास्त्र" पर यह विवादित नही किया जा सकता है कि अनुभव योग्य दुनिया ऐसी मुठभेड़ो से प्रभावित होती है। इस प्रकार के अनुनाद किसी प्रकार के पहचान निर्माण के महत्वपूर्ण तत्व है। इसे उन तथ्यों के दावों पढ़ा जा सकता है जैसे 'उस पुस्तक को पढ़ने के बाद' या 'उस पहाड़ को चढ़ने के बाद' 'मैं एक भिन्न व्यक्ति था, उदाहरण के लिए लगभग सभी (आत्म) जीवनी वृतांतों के साक्षात्कारों में मानक तत्व होते हैं। यहाँ पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि अनुनाद के परिर्वतनीय प्रभाव व्यक्ति के नियंत्रण के बाहर हैः जब हमें कुछ वास्तव में छुता है तो हम यह कभी नहीं जान सकते या पहले से भविष्यवाणी कर सकते कि हम इसके परिणामस्वरूप क्या बनेंगें।

संक्षेप में, अलगाव के दूसरे के रूप में अनुनाद, फिर चार महत्वपूर्ण तत्वों से परिभाषित होता है : पहला वास्तव में छुआ या द्रवित होने के अनुभव के रूप में स्नेह; दूसरा, आत्म–प्रभावकारिता की प्रतिक्रिया के अनुभव के रूप में भावनाएँ (शुद्ध रूप से निमित विपरीत); तीसरा, अपनी परिर्वनीय गुण से; और चौथा, अप्रत्याशितता के एक आंतरिक क्षण से अर्थात गैर–नियंत्रकता या गैर–प्रयोज्यता । हम अनुनाद को कभी भी साधन के रूप में स्थापित नहीं कर सकते है या इसे इच्छानुसार ला सकते हैं; यह हमेशा मायावी रहता है। अन्य तरह सेः हम "कॉल को सुने" या नहीं यह हमारी इच्छा और नियंत्रण से परे है। आंशिक रूप से यह इसलिए है

>>

क्योकि अनुनाद एक गूंज नहीं है – इसका मतलब यह है यह नहीं कि अपने आप को बढ़ा–चढा कर कहेंगे या फिर आशवस्त महसूस किया जाए, लेकिन इसमें कुछ वास्तविक "अन्य" के साथ मुठभेड़ शामिल है जो हमारे नियंत्रण के परे है, जो अपनी आवाज में बोलते है या हमसे से भिन्न और इस प्रकार यह हमारे लिए अजनबी है।

इससे भी अधिक, इस "अन्य" को चार्ल्स टेलर के अर्थ में "मजबूत आकलन" के स्त्रोत के रूप में अनुभव करने की आवश्यकता हैः केवल तभी जब हम यह महसूस करते है (उदाहरण के लिए जो एक व्यक्ति, या संगीत का एक हिस्सा/भाग, एक पर्वत या एक ऐतिहासिक घटना भी हो सकता है) इस अन्य के पास बताने या पढ़ाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण है, भले ही हम इसे सुनाना चाहते हैं या नहीं, क्या हम वास्तव में "चुंगल में" और प्रभावित महसूस कर सकते हैं। अतः अनुनाद को अनिवार्य रूप आत्म उत्थान के एक पल की आवश्यकता है। हालांकि इसमें इस अन्य की स्पष्ट संज्ञानात्मक अवधारणा या पूर्व अनुभव की आवश्यकता नहीं है। हम सभी पूरी तरह से अजनबी दिखने वाले से अचानक प्रभावित और अजनबी हो सकते है।

इसलिए, अनुनाद निश्चित रूप से केवल सामांजस्य या समरसता/सदभावना नहीं है; इसके विपरीत, इसे वास्तविक मुठभेड़ को सक्षम बनाने के लिए भिन्नता और कभी कभी विपक्ष और विरोधाभास की आवश्यकता पड़ती है। अतः सामांजस्यपूर्ण दुनिया में, किसी प्रकार का अनुनाद नहीं होगा, क्योंकि हम एक "अन्य" की आवाज को समझने और परिणामस्वरूप अपनी स्वयं की आवाज को विकसित और समझने में असमर्थ होंगे। फिर भी एक ऐसी दुनिया जिसमें केवल मतभेद और संर्घष है, अनुनाद के अनुभवों की अनुमति नहीं देगाः ऐसी दुनिया का केवल घृणास्पद के रूप में अनुभव किया जाएगा। संक्षेप में, अनुनाद के लिए भिन्नता की आवश्यकता होती है जो स्व–परिवर्तन के विनियोग की संभावना की अनुमति देता है जिसमें प्रगतिशील, पारस्परिक परिवर्तन और अनुकूल शामिल है। अनुनाद फिर सामंजस्य और अपरिवर्तनीय मतभेद के मध्य की स्थिति है इस कारण से, मैं आशवस्त हूँ के यह अवधारणा भिन्नता पर आधारित/केन्द्रित पहचान और धारणओं के आधार पर सिद्धांतों और दर्शन के मध्य पारंपरिक रूख को दूर करने की कुंजी प्रदान करती है। अनुनाद को पहचान की नहीं बल्कि भिन्नता के परिवर्तनीय मतभेद की आवश्यकता नहीं होती है।

अनुनाद के गैर प्रयोज्य और क्षणिक चरित्र का मतलब यह नहीं है कि यह पूरी तरह से क्रमरहित और आकस्मिक है। जहां वास्तविक अनुभव कभी पूरी तरह से नियंत्रित और पुर्वानुमानित नहीं हो सकता है, यहाँ पर दो तत्व शामिल है जो समाजिक परिस्थितियों पर निर्भर होते हैं और इस तरह वे अनुनाद को एक अवधारणा में परिवर्तित करते हैं जिसे सामाजिक आलोचना के उपकरण के रूप में प्रयोग में ले सकते हैं। पहले, व्यक्ति, व्यैक्तिक और सामूहिक रूप से अनुनाद के विशेष अक्षों के साथ अनुनाद को अनूभव करते हैं। इस तरह, कुछ के लिए, संगीत ऐसी अक्ष प्रदान करता है कि जब भी वे कर्न्सट हॉल, या ओपेरा या त्यौहारी क्षेत्र में जाते हैं तो उन्हें ऐसे अनुभव प्राप्त करने का एक अच्छा मौका मिलता हैं। दूसरों के लिए, यह संग्रहालय, पुस्तकालय या मंदिर, वन या तटरेखा हो सकती है। इससे भी ज्यादा, हम ऐसे सामाजिक सम्बन्धों को बढ़ावा देते हैं जो अनुनाद के विश्वसनीय अक्ष जैसा कुछ उन्हें प्रदान करते हैं। हम अनुदान के क्षणों की अपेक्षा कर सकते हैं जब हम अपने प्रेमी के साथ, अपने बच्चों के साथ या अपने मित्रों के साथ होते हैं। भले ही हम सभी जानते हैं कि अक्सर हमारे संबंधित मुठभेड़ उदासीन या घृणात्मक रहती हैं। और उतना ही, जैसा कि हम श्रम के समाजशास्त्र द्वारा प्रदत्त साक्ष्यों से जानते हैं कई सारे लोग अपने कार्य, न केवल कार्यस्थल पर अपने सहयोगियों के साथ बल्कि उन सामग्री और कार्यों के साथ जिन पर वे कार्य और संघर्ष कर रहे हैं, के साथ अनुनाद के गहन सम्बन्ध विकसित करते हैं। इस प्रकार, आटा रोटी बनाने वाले को प्रत्युत्तर देता है जैसे बाल नाई को, लकड़ी बढ़ई को, पेड़ माली को या पाठ लेखक को। इन में से प्रत्येक मामले में हमें एक सच्चा दो तरफा संबंध मिलता है जिसमें आत्म–प्रभाव, प्रतिरोध, विरोधाभास, विनियोजन के साथ पास्परिक परिर्वतन के अनुभव सम्मिलित होते हैं।

जब हम इन अक्षों की अधिक बारीकी से जाँच करते हैं, हम पाते हैं कि हम अनुनाद के तीन अलग अलग आयामों को व्यवस्थित रूप से अलग कर सकते हैं : अनुनाद के सामाजिक, भौतिक और अस्तित्व संबंधी आयाम/सामाजिक अक्ष वे होते हैं जो हमें अन्य मनुष्यों से जाड़तें और सम्बन्धित करते हैं। अधिकांश समकालीन समाजों में प्रेम, दोस्ती बल्कि लोकतांत्रिक नागरिकता भी इस प्रकार के अनुनाद संबंधों के रूप में सकल्पना की जाती है। भौतिक अक्ष वे हैं जिन्हें हम किन्हीं वस्तुओं–प्राकृतिक या शिल्पकृतियों, कला, ताबीज या उपकरण और सामग्री जिनके साथ हम कार्य करते है, या खेल के लिए काम में लेते हैं, के साथ स्थापित करते हैं। फिर भी, मैं कार्ल जैस्पर, विलियम जेम्स, और मार्टिन बुबर जैसे दार्शनिकों के साथ विश्वास करता हूँ कि मनुष्य भी "अनुनाद के अक्षों" की खोज करते हैं जो उन्हें जीवन या अस्तित्व या ब्रह्माण्ड से जोडता और सम्बद्ध करता है। जैसा कि उन लेखकों ने काफी प्रभावकारी तरीक से दिखाने की कोशिश की, यह धार्मिक अनुभवों के बारे में बताता है और जो धर्म को प्रासंगिक बनाता है। बाइबिल या कुरान या उपनिषदों को केन्द्रीय तत्व में यह विचार है कि हमारे अस्तित्व की जड़ पर, हमारे अस्तित्व के केन्द्र में, कोई मूक, उदासीन या घृणात्मक ब्रह्माण्ड, मृत पदार्थ, या अधोतंत्र नही है बल्कि अनुनाद की एक प्रक्रिया और प्रत्युत्तर है। निश्चित तौर पर, अस्तित्व संबंधी अनुनाद के अन्य अक्ष हैं जो धार्मिक विचारों पर निर्भर नहीं होते हैं। विशेष रूप से प्रकृति का एक आखिरी, व्यापक के साथ उत्तरदायी यथार्थ के रूप में अनुभव किया जाता है। प्रकृति की आवाज को सुनना न सिर्फ आदर्शवादी दर्शन में केन्द्रीय विचार बन गया है बल्कि कई रोजमर्रा की दिनचर्या और प्रथाओं में भी अधिकाधिक केन्द्रीय विचार बन गया है। असाधारण रूप से समान तरीके के कला और संगीत प्राप्तकर्ता के लिए एक समान अक्ष को खोलतें है। प्रत्येक मामले में, अनुनाद के सुखद, समरसतापूर्ण अनुभव होने की आवश्यकता नहीं है लेकिन अनिवार्य रूप से यह परेशानी वाले पहलुओं को आश्रय दे सकते हैं।

अब, जब मैं मानता हूँ कि अनुनाद के ऐसे मूर्त अक्ष मानववंशिक रूप से प्राप्त नहीं होते है, अपितु सास्कृति और ऐतिहासिक रूप से निर्मित होते हैं, ऐसे कुछ अक्षों की स्थापना तदापि एक अच्छे जीवन

के लिए अनिवार्य है क्योंकि वे उन संदर्भों को प्रदान करते हैं जिसमें व्यक्ति अनुनाद के अनुभवों के लिए खुलने के लिए तैयार रहते हैं। गैरस्थितकीय अनुनाद की प्रणाली में परिवर्तन स्वयं को कमजोर बनाने का जोखिम पालता है। इसका अवधारणात्मक रूप से तात्पर्य है कि हम गैर–अनुमानित और गैर– नियंत्रित तरीके से खुद को छूने और परिवर्तित भी करने की अनुमति देते हैं। अतः उन संदर्भो में जहाँ हम भय से भरे हुए हैं या तनाव में है या लड़ाई के अंदाज में है या एक निश्चित परिणाम लाने पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, हम अनुनाद की तलाश या अनुमति नहीं देते हैं; इसके विपरीत, ऐसा करना खतरनाक और हानिकारक होगा। यह देखते हुए, यह स्पष्ट हो जाता है कि यह माँग करना कि हम हमेशा डिसपोजिशनल अनुनाद के अंदाज में रहें, मुर्खता होगी। इस तरके को छोडने की, दुनिया से दूरी बनाने की क्षमता उसकी और एक ठड़ा साधनपूर्ण विश्लेषणात्मक रूख अपनाना, स्पष्ट रूप से एक सांस्कृति उपलब्धि है जो न केवल आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के व्यवसाय को बल्कि जीवन के उस स्वरूप को वास्तव में प्रदान करने और संरक्षित करने जो वर्णित तीन आयामों में मानव अनुनाद की अनुमति देता है; के लिए अनिवार्य है।

इस अवधारणा को हमारे टूल किट में रख, मेरा मानना है कि हम अनुनाद को प्रचलित सामाजिक परिस्थितियों की आलोचना के रूप में अनुनाद को विवेचनात्मक समाजशास्त्र के एक मापदडं के रूप में उपयोग कर सकते हैं। इसका प्रारंभिक बिन्दु यह विचार है कि एवं अच्छे जीवन के लिये अनुनाद के तीनों आयामों में विश्वनीय और व्यवहार्य अक्षों के आस्तित्व की आवश्यकता होती है। मेरा दावा है, एक व्यक्ति का जीवन अच्छा होगा यदि वह अनुनाद के सामाजिक, भौतिक और आस्तित्व संबंधी अक्षों का पता लगा कर उन्हें सरक्षित करता है जो आस्तित्वत्मक प्रत्युत्तर और कनेक्शन की पुनरावृत्तीय और नियतकालिक आश्वासन की अनुमति देता है अर्थात आस्तित्व का अनुनादी तरीका। फिर ऐसे अच्छे जीवन की संभावना खतरे में पड़ती है जब इन अक्षों की और अनुनाद के गैर स्थितकीय तरीको की शर्ते सरंचनात्मक या व्यवस्थित रूप से कमतर आँकी जाती है।

गतिशील स्थिरीकरण का प्रमुख सांस्थतिक तरीका जिसे सामाजिक संरचना और संस्थागत यथा स्थिति के पुनःनिर्माण के लिये लगातार अनवरत विकास, त्वरण और नवाचार की आवश्यकता होती है, अनिवार्य रूप से इस प्रकार के व्यवस्थित कमतर आँकने की प्रवृत्ति और संभावना को दर्शाता है चूंकि यह व्यक्तियों को गैर स्थितकीय अलगाव के तरीके में जाने को मजबूर करता है। उन्हें अपने ससांधनों को बढाने और सुरक्षित करने अपने उपकरणों को तेज और उपयुक्त बनाने के लिये वस्तुओं और व्यक्तियों से संबंधित एक प्रभावशाली, उपयोगी तरीके में जाने के लिये मजबूर किया जाता है। विशेष रूप से प्रतिस्पर्धा का व्यापक तर्क अनुनाद के तरीके में प्रवेश करने की संभावना को कम करता है। हम प्रतिस्पर्घा और अनुनाद एक साथ नहीं कर सकते है। इसके अलावा, जैसा कि हम समानूभूति पर शोध और तंत्रिका सम्बन्धी अध्ययनों के द्वारा जानते है कि समय दबाब वास्तव में अनुनाद के एक पक्के बाधक के रूप में काम करता है। बेशक, यह तब भी सही है जब हम डर से प्रेरित होते है। भय हमें अवरोधों को खडा करने और अपने मास्तिष्क को बंद करने पर दबाब डालता है, यह हमें ऐसे डवकम में परिवर्तित करता है जहाँ हम ''दुनिया'' द्वारा हुये जाने की स्थितियाँ ऐसी है कि उन्हें आपासी विश्वास और निर्भीकता के संदर्भ की आवश्यकता होती है, एवं इन संदर्भो को बदले में पार्श्व की स्थितियों में समय और स्थिरता की आवश्यकता होती है। अंत में, व्यापक नौकरशाही द्वारा प्रक्रियाओं और परिणामों को पूरी तरह से नियंत्रित करने को प्रयास ताकि उनकी दक्षता और पारदर्शिता, जो पछंती आधुनिक कार्यस्थल परिस्थितियों को परिभाषित करती है, भी अनुनाद के सम्बन्धों के लिये समान रूप से समस्याग्रस्त है क्योंकि वे इसकी अप्रत्याशितता और परिवर्तनीय क्षमता के साथ असंगत है। फिर, अनुनाद की शर्तो की पूरी प्रत्यालोचना आवश्यक है। फिर जिसकी आवश्यकता है, वह है अनुनाद की शर्तो की पूर्ण रूप से प्रत्यालोचना। ■

सभी पत्राचार हार्टमुट रोजा को <hartmut.rosa@uni-jena.de> पर प्रेषित करें।

> बाल्कनीकरण के विरुद्ध सहयोग का समाजशास्त्र

जैस्मिका लजन्जक के साथ एक साक्षात्कार

जैस्मिका लजन्जक का नाम समाजशास्त्र की विभिन्न शाखाओं–विज्ञान और प्रौद्योगिकी का समाजशास्त्र, नवाचार के सामाजिक पहलु एवं नवाचार नीति, आर्थिक समाजशास्त्र, कार्य का समाजशास्त्र और अन्य क्षेत्रों में काफी प्रसिद्ध है। वह जाग्रेब विश्वविद्यालय, क्रोएशिया में समाजशास्त्र विभाग में समाजशास्त्र की प्रोफेसर हैं और क्रोएशियाई समाजशास्त्र संघ (सीएसए) की वर्तमान अध्यक्ष हैं। उनकी अभी हाल में प्रकाशित पुस्तक 'इनोवेशन कल्चर इन क्रोनी कैपिटलिज्म : डस होफ्स्टेड मॉडल मैटर? (2017) है, जो उन्होंने जाड कावर्स के साथ मिलकर लिखी है। यह साक्षात्कार प्रभावी सामाजिक सिद्धांत पर एक प्रोजेक्ट का भाग है जिसका उद्देश्य महत्त्वपूर्ण समाजशास्त्रियों के साथ बातचीत के माध्यम से अंतराष्ट्रीय और राष्ट्रीय समाजशास्त्र की अंतरानुभागिता का पता लगाना है। यह साक्षात्कार प्रिस्टिना विश्वविद्यालय, कोसोवा से समाजशास्त्र में एम.ए. की उपाधि प्राप्त तथा आई.एस.ए. जूनियर समाजशास्त्री नेटवर्क के सदस्य **लैबिनोत कुनुशेव्की** द्वारा आयोजित किया गया था।

जैस्मिका लाजजक

एल.के. : जाग्रेब विश्वविद्यालय और क्रोएशियाई समाजशास्त्र संघ (सीएसए) में आपके अनुभवों के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं?

जे.एल. : हालांकि कानूनी विनियमन और कुछ वित्तीय प्रतिबंधों के संदर्भ में पेशेगत संघों की स्थिति में हाल ही में बदलाव आया है, क्रोएशियाई समाजशास्त्र संघ (सीएसए) के अंतर्गत पिछले दशक में गतिविधियां बढ़ी हैं। सीएसए की स्थापना 1959 में लगभग 50 सदस्यों के साथ की गई थी। आज हमारे पास 200 से अधिक सदस्य हैं।

एक पेशे और अनुशासन के रूप में संघ समाजशास्त्र को बढावा देने, विकसित करने और संरक्षित करने के अपने मिशन के साथ निरंतर बना हुआ है। सीएसए पूर्णतः अपने सदस्यों के स्वतंत्र रूप से काम करने पर विश्वास करता है और मैं अपने संघ में अकादमी के बाहर से अधिक समाजशास्त्रियों को शामिल करना चाहती हूँ, हाल में हुए करियर शोध के अनुसार समाजशास्त्र के स्नातक किए हुए लगभग आधे युवा समाजशास्त्र से सम्बद्ध नौकरियों के बाहर अनुसंधान एवं शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं।

एल.के. : क्रोएशियाई समाजशास्त्र किन कार्यक्रमों, पाठ्यक्रम एवं परिप्रेक्ष्यों पर तैयार किया गया है?विश्वविद्यालय एवं कार्य बाजार के मध्य क्या सम्बन्ध है?

जे.एल. : समाजवादी युग में मार्क्सवादी की प्रधानता के बावजूद क्रोएशियाई समाजशास्त्र किसी एक परिप्रेक्ष्य पर विकसित नहीं किया गया था। जाग्रेब विश्वविद्यालय में प्रथम समाजशास्त्र विभाग की

> >

स्थापना 1963 में स्वर्गीय प्रोफेसर रूडी सुपेक ने की थी जिन्होंने प्रचलित दर्शनशास्त्र से सम्बद्ध महत्वपूर्ण चिंतन के अनुभविक और सैद्धान्तिक आधार पर एक अनुशासन के रूप में समाजशास्त्र की कल्पना की थी। उस परंपरा के बावजूद और साथ ही साथ आलोचनात्मक चिंतन के भाव में कुछ समाजशास्त्रियों ने अन्य परिप्रेक्ष्यों के प्रभाव में भी अपना योगदान किया, उदाहरण के लिए – संरचनात्मक प्रकार्यात्मक परिप्रेक्ष्य, शिकागो संप्रदाय या प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद। समकालीन क्रोएशियाई समाजशास्त्र अपने बहु–परिप्रेक्ष्य स्वरूप के कारण विश्व समाजशास्त्र का प्रतिनिधित्व करता है। चूंकि क्रोएशिया में समाजशास्त्र के पाँच विभाग हैं, उनमें से प्रत्येक विभाग कुछ विशिष्ट विषयों, अवधारणाओं और पद्धतिशास्त्रीय दृष्टिकोणों को विकसित करने की कोशिश करता है। कई अन्य विषयों की भाँति समाजशास्त्र भी नयी प्रौद्योगिकी और उभरने वाले नय व्यवसायों की चुनौती का सामना कर रहा है। मुझे लगता है कि एक विषय के रूप में समाजशास्त्र 'व्यापक परिप्रेक्ष्य', ठोस सामान्य ज्ञान और पद्धतिपरक/सांख्यिकीय कौशल प्रदान करने वाली अपनी सामान्य विशेषताओं के कारण श्रम बाजार में समाजशास्त्रीय पेशे को बहुत उच्च स्थान दिला सकता है। यह तथ्य कि क्रोएशिया में समाजशास्त्र में स्नातक किए लोगों में बेरोजगारी की दर कम है और एनजीओ से स्थानीय सरकार तक केवल पारंपरिक समाजशास्त्र में ही नौकरियों की विस्तृत श्रृंखला नहीं है, मेरे कथन का समर्थन करता प्रतीत होता है।

एल.के. : जन (पब्लिक) समाजशास्त्र तेजी से महत्वपूर्ण होता जा रहा है। क्रोएशिया में इस विषय पर तथा क्षेत्रीय सहयोग की संभावनाओं के विषय में आपकी क्या राय है?

जे.एल. : क्रोएशिया में सार्वजनिक गैर–अकादमिक दर्शकों के साथ संवाद के लिए समाजशास्त्र की एक शाखा के रूप में जन समाजशास्त्र को व्यापक रूप से समाजशास्त्र के प्रमुख मिशनों में से एक रूप में स्वीकार किया जाता है। इस संस्थागत और व्यापक रूप से स्वीकृत परिप्रेक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता ने इस चर्चा को उत्पन्न किया है कि कैसे जन समाजशास्त्र सार्वजनिक नीतियों के प्रति उन्मुख समाजशास्त्र से सम्बद्ध है। ये मिशन एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों दृष्टिकोण समाजशास्त्र के बहुत महत्वपूर्ण भाग हैं जो एक दूसरे को मजबूती देते हैं। समाजशास्त्रीय विशेषज्ञता नीति विश्लेषण का एक आवश्यक भाग है। हमें क्षेत्रीय सहयोग के मजबूत विकास के लिए नीति समाजशास्त्र में आवश्यक कौशल विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम के परिणामों में सुधार करना चाहिए।

एल.के. : "इंटीग्रेशन ऑफ द वेर्स्टन बाल्कन कंट्रीज एंड ट्रकी इन द फ्रेमवर्क प्रोग्रामस : सम इमपीरिकल एवीडेंस" (ढाँचागत कार्यक्रमों में पश्चिमी बाल्कन देशों और तुर्की का एकीकरण : कुछ आनुभविक साक्ष्य) नामक लेख में आपने, जाद्रंका स्कार्क्स और जुराज पेर्कोविक ने यूरोपीय संघ (इयू) के ढाँचागत कार्यक्रमों में पश्चिमी बाल्कन देशों और तुर्की के बीच सहयोगी बाधाओं के विषय में चर्चा की। उसके परिणामों एवं नई उपलब्धियों के बारे में बताइये।

जे.एल. : जहाँ तक मैं जानता हूँ, कोसोवा ने पिछले दशक में बड़ी प्रगति की है, परंतु शोध का बुनियादी ढाँचा अभी भी संतोषजनक नहीं है। जैसा कि हमने अपने शोध में पाया है पश्चिमी बाल्कन देशों की बाधाएं भी यूरोपीय संघ अनुसंधान समुदाय के समान ही हैं, लेकिन पश्चिमी बाल्कन देशों के लिए इनसे उबरना भारी और अधिक कठिन है। बुनियादी ढाँचे में महत्वपूर्ण सुधार और अंतर्राष्ट्रीय शोध और नवाचारी सहयोग में अधिक सहभागिता अनुसंधान क्षेत्र में अधिक निवेश किए बिना संभव नहीं होगी। राष्ट्रीय विज्ञान नीति निर्माताओं को अंतरराष्ट्रीय शोध और नवाचारी परियोजनाओं में भाग लेने के लिए व्यक्तिगत शोधकर्ताओं और शोध संस्थानों दोनों को प्रोत्साहित करने के उपाय करने चाहिए। शोध सहयोग और शोधकार्ताओं की गतिशीलता को विशेष प्रोत्साहन उपाय के द्वारा प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके साथ ही शिक्षा को अनुसंधान कार्य के साथ अधिक निकटता से सम्बद्ध होना चाहिए।

अनुसंधान संस्थानों के स्तर पर क्षमता निर्माण के लिए विशेष देखभाल की जानी चाहिए। हालांकि विश्लेषण से यह पता चलता है कि शोधकार्ता अपने संस्थानों द्वारा प्रदान की गई सहायता से अपेक्षाकृत संतुष्ट है और उनके नेतृत्व के प्रयासों को देखकर ऐसा लगता है कि उनकी यह संतुष्टि मुख्यतः जागरूकता की कमी के कारण है क्योंकि वे नहीं जानते कि वे किस तरह की अतिरिक्त सहायता की अपेक्षा भी कर सकते हैं। बड़े संस्थानों, विश्वविद्यालयों या इच्छुक पार्टियों के संघों में स्थित परामर्शदाताओं या विज्ञान प्रबंधकों के एक नेटवर्क के रूप में मध्यस्थों की एक प्रणाली स्थापित करना अधिक उपयोगी होगा, जो शोधकर्ताओं/संस्थानों और यूरोपीय संघ प्रशासन के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करेगा।

एल.के. : इस क्षेत्र में अस्थिरता के जोखिम का सामना करने के लिए आप किस प्रकार की रणनीति का सुझाव देते हैं?

जे.एल. : यह एक कठिन सवाल है। हमरे क्षेत्र को हमेशा से ही स्थानीय, राष्ट्रीय और जातीय संघर्षों के कारण अनेक प्रकार के जोखिमों का सामना करना पड़ा जो संपूर्ण विश्व के लिए चुनौती है और जिनकी हम उपेक्षा भी नहीं कर सकते जैसे प्रवसन (माइग्रेशन) का संकट और वैश्विक आंतकवाद। संकट का सामना करना तब हमेशा आसान होता है जब छोटे पड़ोसी देश एक समान मुद्दे से जुड़ी 'एक ही समस्या' का सामना कर रहे होते हैं। मतभेदों के बावजूद, सहयोग और खुली चर्चा सामान्य समस्याओं को हल करने का सबसे अच्छा माध्यम है। बेशक, करने से कहना अधिक आसान होता है लेकिन मुझे कोई और रास्ता नहीं दिखाई देता। जब समग्र क्षेत्र के लिए एक अच्छा समान आधार होता है। इसके लिए खुली सीमाएं और स्वतंत्र संचार होना आवश्यक शर्तें हैं।

एल.के. : यह सच है कि कोसोवा संकट का समाधान खोजने के लिए महत्वपूर्ण राजनीतिक, राजनयिक, सैन्य संसाधनों के साथ–साथ कई आंतरराष्ट्रीय संस्थानों की वैश्विक प्रतिबद्धता भी थी। क्षेत्र में पूर्वाग्रह और प्रतिद्वंद्वियों के कठोर वातावरण एवं महान शक्तियों की भूगर्भीय गणना के कारण कोसोवा और अन्य बाल्कन देशों की कार्यप्रणाली की संभावनाओं को आप कैसे देखते हैं?

जे.एल. : मुझे कोसोवा पर कोई विशेषज्ञता प्राप्त नहीं है और वास्तव में मैं वर्तमान मुद्दों के विषय में बहुत कम जातना हूँ। सामान्यतः मै इस तर्क से सहमत हूँ कि बाल्कन का इतिहास काफी व्यापक है और यह एक ऐसा बोझ है जिसे हम आसानी से नहीं छोड़ सकते। कोसोवा, भूतपूर्व युगोस्लाविया के कम विकसित स्वायत्त क्षेत्र से उतन्न एक युवा/नवीन राज्य के रूप में विलबिंत आधुनिकीकरण और संक्रमण/परिवर्तन की अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। जिसके कारण यह अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों और महानशक्तियों

>>

पर अधिक निर्भर हो गया है। यूरोपीय संघ के वर्तमान संकट ने सभी बाल्कन देशों में यूरोपीय संघ के विस्तार में देरी की है जो संभवतः इस क्षेत्र में स्थिरता ला सकता है। राजनीतिक शक्ति को पाने के प्रयासों में हमारा भ्रष्ट राजनीतिक अभिजात वर्ग पूर्वाग्रहों और प्रतिद्वद्विता को उपकरण के रूप में प्रयोग करता है। कोसोवा, जिसकी आधी आबादी युवा है और इसकी व्यापक बेरोजकारी दर लंबे समय तक एक गंभीर खतरा बना रहेगी जब तक कि मुछ गंभीर संरचनात्मक परिवर्तन नहीं किए जाते हैं। विद्यार्थियों को उनकी स्वतंत्र सोच विकसित करने के लिए शिक्षा को मजबूत करना उस प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण उपाय हे। अन्यथा हमे इस खतरे का सामना करना पड़ सकता है कि हमारे क्षेत्र में सहस्राब्दी पीढ़ी अपने माता–पिता की पीढ़ी और यहाँ तक कि अपने दादा–दादी की पीढ़ी से भी ज्यादा राष्ट्रवाद, नृवंशवाद और साम्राज्यवाद के संकट का सामना करेगी। समाजशास्त्रीय सिद्धांत और अनुसंधान बाल्कनीकरण की प्रक्रिया का सामना करने के लिए हमारे क्षेत्र में विश्वास और सहयोग बनाने में मदद कर सकता है।

एल.के.: क्या आपको कोई जोखिम दिखता है कि पूंजीवाद के व्यापक विस्तार के साथ दुनिया के विभिन्न हिस्सों में नागरिक अन्य सरकारी प्रणालियों में वापस लौटना चाहेंगे! चूंकि गैर–जिम्मेदार पूंजीवाद ने अधिक सामाजिक अन्याय उत्पन्न किया है यह एक गहन संरचनात्मक संकट का प्रतीक है। इसे पूर्वी और विशेष रूप से दक्षिण पूर्वी यूरोप में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है जहाँ कम्युनिस्ट शासन के पतन के बाद उभरे राजनीतिक वर्ग में भ्रष्ट राजनीतिक अभिजात वर्ग का व्यापक बहुमत है और जहाँ कानून के नियमों की संस्था में भारी गिरावट आई है। इस बारे में आपका स्पष्टीकरण और सुझाव क्या है?

जे.एल. : दुनिया की बढ़ती आबादी के कारण प्रतिनिधि लोकतंत्र प्रतिस्पर्धा के एक चरण से गुजर रहा है। कई लोग प्रत्यक्ष लोकतंत्र और वैकल्पिक शासन प्रणाली को एक समाधान के रूप में देखते हैं हालांकि इनसे निर्णय लेने की प्रक्रियाओं के लोकतांत्रीकरण में और मुद्दों के व्यापक विस्तार पर सार्वजनिक प्रभाव में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ है।

समाजों में लोकतांत्रिकरण के प्रक्रिया संक्रमण के दौर में है जिसने अनेक नागरिकों को निराश किया है। इन समस्याओं के समाधान भी उभर कर आए हैं जो एक तरफ प्रत्यक्ष लोकतंत्र की वकालत करते हैं और दूसरी तरफ विभिन्न लोकप्रिय आंदोलनों की। अब तक इन आंदोलनों ने इस क्षेत्र में प्रभावी रूप से प्रचलित क्रोनी (सहचर) पूँजीवाद के समक्ष कोई गंभीर खतरा उत्पन्न नहीं किया है।

वित्तीय क्षेत्रों और भ्रष्ट राजनीतिक अभिजात वर्ग की शक्ति को सीमित करने में रही विफलता में लोकतांत्रिक घाटा सबसे ज्यादा दिखाई देता है। समाजवाद से उदारवादी लोकतंत्रों में संक्रमण ने पूर्व और दक्षिण पूर्वी यूरोप में उदारवादी बाजार केन्द्रित मॉडल से पूंजीवादी सामाजिक–कार्पोरेट मॉडल तक विभिन्न मॉडल उत्पन्न किए हैं। युद्ध के अलावा, हमारे क्षेत्र मे एक या अन्य प्रकार के राजनीतिक पूंजीवाद को विकसित होने से नहीं रोका जा सकता था और वर्तमान में ऐसा लगता है कि इस क्षेत्र के सभी देशों में इसका प्रभुत्व है। इस तथ्य के बावजूद कि विश्व की तुलना में हमारे क्षेत्र में उतनी सामाजिक असमानता नहीं है, छोटे समृद्ध अभिजात वर्ग और गरीब मध्यम वर्गों के बीच का अंतर बढ़ रहा है। मेरी राय में राजनीतिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार के प्रति पूर्व असहनशीलता की नीति, न्यायिक प्रणाली की स्वतंत्रता और रोजगार को बढ़ावा देने वाले नए आर्थिक मॉडल किसी भी सकारात्मक कदम के लिए आवश्यक है।

एल.के. : ब्रिटिश समाजशास्त्री अपनी गिडेंस के साथ आयोजित एक साक्षात्कार में उन्होंने मुझे बताया कि यूरोपीय संघ अपने विकास के विशेष रूप से संकट के दौर से गुजर रहा है तथा यूरोपीय संघ के प्रति इसके नागरिकों का विश्वास कुछ सदस्य देशों में तेजी से गिरा है। हम यूरोपीय और वैश्विक संकट में कोसोवा और क्रोएशिया की स्थिति को किस तरह समझ सकते हैं?

जे.एल. : हालांकि मैं कभी यूरोसेप्टिक (यूरोप के प्रति संदेहशील) नहीं रहा हूँ, यह स्पष्ट हे कि यूरो–नौकरशाहों के पास यूरोप में उभरने वाले मुद्दों से निपटने का सही और त्वरित साधन नहीं है। ब्रुसेल्स और यूरोपीय संघ (ईयू) की संस्थागत शक्ति के बीच विसंगति तथा विलम्ब होने व अनुपयुक्त नीतिगत चालों के लिए उन्होंने निम्न स्तर की जिम्मेदारी ली है, जिससे यूरोपीय संघ में उनका विश्वास कम हो गया है। इसमें परितर्वन लाने की आवश्यकता है। यूरो संकट गैर समायोजित मौद्रिक और वित्तीय नीतियों का परिणाम है। श्रम, पूंजी और वस्तुओं का एक सामान्य बाजार यूरो क्षेत्र के भीतर ऐसी अलग–अलग व्यवस्थाओं के साथ काम नहीं कर सकता है।

एल.के. : गिडेंस ने यह भी बताया कि केवल यूरोपीय संघ की आगे की प्रगति के साथ बाल्कन देशों की समस्याओं को हल किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि मुख्य तथ्य यह है कि सर्बिया को क्रोएशिया संघ के एक सदस्य राज्य के रूप में अनुसरण करना चाहिए तथा यहाँ उनकी उत्साहपूर्ण उम्मीद यह है कि ऐसी प्रक्रिया कोसोवा की अंतिम सदस्यता के लिए भी आसान होगी। मेरा सवाल यह है कि कोसोवा एक छोटा सा देश है, जो केवल 10 वर्ष पूर्व ही स्वतंत्र हुआ था, फिर भी अनेक चुनौतियों विशेषतः वीजा उदारीकरण एवं यूरोपीय संघ के एकीकरण की प्रक्रिया की चुनौतियों का सामना कर रहा है। यह पृथक्करण हमारे मुक्त आंदोलन को, अन्य यूरोपीय देशों व संस्कृतियों के साथ संपर्क को, यूरोपीय देशों में नौकरी के अवसरों को तथा यूरोपीय बाजार में मान्यता प्राप्ति को प्रतिबंधित कर रहा है, जबकि हमारी आबादी का लगभग 60 प्रतिशत 25 वर्ष से कम आयु का है। हम अनुभव करते हैं कि यूरोपीय संघ में एकीकरण और उसके साथ सम्बद्ध होने की आवश्यकता है। कोसोवा का यूरोप में एकीकृत होने के संबंध में आप क्या सुझाव देना चाहोंगे?

जे.एल. : मैं अपने प्रतिष्ठित सहयोगी से सहमत हूँ। मेरा सुझाव उसी तर्क का अनुसरण करता है जो कि मैंने पूर्व में किए गये प्रश्नों के जवाब में दिया था। यदि यूरोपीय संघ में एकीकरण की प्रक्रिया में बाधा आती है तो वह सामंजस्य की प्रक्रियाओं को धीमा कर सकती है। कोसोवा से व्यापक प्रवसन भी कोई सहायता नहीं करता है। मैं क्रोएशिया के दीर्घकालिक और जटिल अनुभवों को देखते हुए कोसोवा की यूरोपीय संघ की सदस्यता प्राप्ति की आकांक्षा को समझ सकता हूँ। भविष्य के एकीकरण के लिए स्थिरता ओर सामाजिक सुरक्षा मुख्य पूर्व शर्ते हैं भले ही नई उम्मीदवारियों के साथ प्रतिबंध को और ऊंचा कर दिया गया हो। फिर भी मैं ईयू (यूरोपीय संघ) के भविष्य में और यूरोपीय (अर्ध) परिधि की सदस्यता के लाभ में विश्वास करता हूँ। जीवन की गुणवत्ता में तत्काल सुधार की असफलता अपेक्षाएं और शुरूआती दौर में अपेक्षा से कम प्राप्त होने वाले लाभ के कारण सामाजिक और आर्थक सुधारों को हतोत्साहित नहीं करना चाहिए। ■

लैबिनोट कुनुशेवी से पत्र व्यवहार
हेतु पता <labinotkunushevci@gmail.com>

> शक्तिशाली बाहरी व्यक्ति
चीन के रियल एस्टेट डेवलपर्स और किसान प्रतिरोध

युए दु, विसकंसिन–मैडिसन विश्वविद्यालय, यू.एस.ए. और स्थानीय और शहरी विकास पर आई.एस.ए. शोध समिति (आर.सी. 21) के सदस्य द्वारा

पूर्वी चीन मे शहरी गाँव में आधा ध्वस्त नाखून घर, जून 2017।
यूड्यू द्वारा फोटो

चीन के तेजी से बढ़ते शहरों के किनारे पर आधे नष्ट घर के सामने, एक "नेल हाउस" प्रतिरोधकर्ता ने रियल एस्टेट डेवलपर के कर्मचारी पर दो रसोई चाकू के साथ पीछा किया, "विध्वंस टीम" पर लगातार उत्पीड़न का आरोप लगाया, और डेवलपर को मारने की धमकी दी। पिछले कुछ सालों में, अधिकतर ग्रामीणों के पड़ोसियों ने अपनी जमीन के लिये मुआवजा स्वीकार कर अपने घर छोड़ दिये और ऊंचे अपार्टमेंट्स में जा कर रहने लगे। परंतु इस गांव में, बीस नेल हाउसेज ने हटने से इनकार कर दिया था। तीन महीने बाद, जब मैं चीन में शहरीकरण नीति पर शोध के हिस्से के रूप में रियल एस्टेट डेवलपर के साथ गया, मैनें, प्रतिरोधकर्ता के दो–मंजिला ग्रामीण घर को गिराने के लिये आये बुलडोजर को संत्रस्त होकर देखा। प्रतिरोधकर्ता ने अपने घर के चारों तरफ गैसोलीन उड़ेंल लिया, एक गैसोलीन टैंक को जलाया, दरवाजा बंद किया, छत पर चढ़ा, और अपना जीवन ले लेने के लिये विस्फोट का इंतजार किया।

परंतु जैसे मैंने देखा, डेवलपर की निजी सुरक्षा टीम के दो अत्यधिक कुशल सदस्यों ने प्रतिरोधकर्ता को उसकी छत से घसीटा। अन्य ने दक्षतापूर्वक आग बुझा दी, और बुलडोजर ने उसका घर समतल कर दिया। यह दसवां "नेल हाउस" था – उन किसानों के स्वामित्व वाले घरों के लिये उपयोग किया जाने वाला एक शब्द जो जिद्दी होकर अड़े रहते हैं – जिसे उस सुबह उन्होंने ध्वस्त कर दिया था; इससे पहले वाले नौ नेल हाउस को हटाने में एक घंटे से भी कम समय लगा था।

चीन में तेजी से हो रहे शहरीकरण ने व्यापक भूमि अधिग्रहण शुरू कर दिया है: लाखों किसानों के परिवारों को निकाला जा चुका है और न्यूनतम मुआवजे के साथ स्थानांतरित किया गया है। पिछले दस वर्षों में, किसानों और खेतों की सुरक्षा के लिये प्रयास करते हुये, केंद्रीय राज्य ने कानूनी और संस्थागत संरचनाओं में सुधार किया जो भूमि रूपांतरण को नियंत्रित करते हैं। परंतु चूंकि स्थानीय नगरपालिकाओं के लिये भूमि की बिक्री अभी भी आय का मुख्य स्त्रोत है, पूरे चीन में स्थानीय प्राधिकरण खेतों का अधिग्रहण, किसानों को स्थानांतरित करना और आवासीय क्षेत्रों को व्यवसायिक उपयोग के लिये परिवर्तित करना जारी रखे हुये हैं।

आज, भूमि–आधारित शिकायतों ने अधिकांश चीन के मशहूर विरोधों को उकसाया है: अन्य सभी समाधान समाप्त हो जाने पर बेताब किसान नैतिक मोलभाव के लिये अपने स्वयं के शरीरों का इस्तेमाल करते हैं। वे अपनी ग्रामीण आजीविका को किसी भी

>>

कीमत पर बनाये रखने के लिये, अपने पुराने घरों को जिद्दी होकर पकड़े रहते हैं जैसे जमीन पर कोई कील हथौड़े से लगी हो।

चीन में चर्चित प्रतिरोधों और नियंत्रण की अधिकांश समाजशास्त्रीय चर्चायें भूमि–संबंधित किसान प्रतिरोधों को चुप कराने में नगरपालिका और टाउनशिप सरकारों को प्रमुख कारकों के रूप में पहचानते हुये, राज्य–समाज विभाजन के चारों ओर घूमती हैं। परंतु राज्य कारकों पर यह विशिष्ट केंद्र बिंदु दमन के दूसरे शक्तिशाली स्त्रोंतों को नजरअंदाज करता है : निजी रियल एस्टेट डेवलपर, जिन्हें शहरी आधारभूत संरचनाओं के वित्तपोषण के लिये चीन के नये परिप्रेक्ष्य के परिणामस्वरूप स्थानीय अधिकारियों द्वारा किसानों को बेदखल और निकालने की अनुमति दे दी गयी।

दो दशकों तक, चीन की स्थानीय सरकारों ने रियल एस्टेट निकासी और उन्नयन के वित्तपोषण के लिये बैक ऋणों पर भरोसा किया है; परंतु 2016 से, केंद्रीय राज्य ने बैक ऋणों को भूमि अधिग्रहण के लिये कठोरता से प्रतिबंधित कर दिया है, इसके बजाय वे स्थानीय राज्यों को नगरपालिका बॉन्ड को विकसित करने के लिये प्रोत्साहित कर रहा है। अनुभवहीन बॉन्ड बाजारों पर भरोसा करने के बजाय, हालांकि, कई स्थानीय अधिकारी एक स्थानीय सहयोगी निजी रियल एस्टेट डेवलपर की ओर मदद के लिये देखते हैं।

2016–18 में मेरे क्षेत्रीय कार्य के दौरान, मैंने देखा निजी रियल एस्टेट डेवलपर भूमि अधिग्रहण के प्रत्येक चरण में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, और मैंने देखा रियल एस्टेट एजेंट्स को किसान प्रतिरोधियों के भूमि के दावों को कमजोर करने के लिये सक्रिय रूप से अनेक रणनीतियों का इस्तेमाल करते देखा हैं।

जैसा कि अनेक पर्यवेक्षकों ने इंगित किया है, चीन के स्थानीय अधिकारी प्रतिरोधी नेल हाउसहोल्ड को चुप कराने के लिये कभी–कभी "किराये के ठगों" पर भरोसा करतें हैं। परंतु ये संघर्ष खराब हो सकते है : कई ग्रामीण कार्यकर्ता अपने साथी किसानों से सहानुभूति रखते हैं, और अपने वरिष्ठ अधिकारियों के आदेशों की पालना करने के बजाय, स्थानीय अधिकारी साथी किसानों में शामिल हो सकते हैं, यहां तक कि स्वयं ही नेल हाउसहोल्ड बन सकते हैं।

अनुशासनहीन हिंसा गंभीर जनहानि और बुरे प्रचार तक ले जा सकती है। जब ऐसा होता है, कभी–कभी केंद्रीय सरकार को कार्रवाई करने के लिये प्रेरित करते हुये, और स्थानीय नौकरशाहों के कैरियर को खराब करते हुये रणनीति निष्फल हो सकती है। निजी रियल एस्टेट डेवलपर को हिंसा आउटसोर्स करके, स्थानीय सरकार कुशलतापूर्वक बेदखली और ध्वस्तीकरण के किसी दवाब के आरोप से बचना चाहती है। डेवलपर अनुभवी गिरोहों (तथाकथित "विध्वंस टीम") को किराये पर ले सकती है, जिन्होंने पहले से ही अन्य गांवों में "शून्य–जनहानि" बेदखलियों से नेलहाउसेज् को सफलतापूर्वक ध्वस्त करके अपनी प्रतिष्ठा पा ली है।

विध्वंस टीम के सदस्य प्रतिरोधियों को घसीट कर उनके घरों के बाहर निकाल देते हैं, परंतु उन्हें चोट पहुंचाने से बचते हैं; इस प्रक्रिया में ग्रामीणों द्वारा पीटे जाने का जोखिम उठाने के लिये उन्हें बहुत अच्छा पारिश्रमिक दिया जाता है। जैसा कि स्थानीय अधिकारियों और रियल एस्टेट मुखबिरों ने मुझे याद दिलाया, केंद्रीय और प्रांतीय सरकारें तभी हस्तक्षेप करती हैं जब मीडिया प्रतिरोधों की रिपोर्ट करता है .जो कि अधिकतर तब होता है जब बेदखली में गंभीर जनहानि, या एक असामान्य रूप से बहुत सारे प्रतिभागी शामिल होते हैं। शारीरिक चोटें कम करके, ये निजी सुरक्षा बल नेल हाउसहोल्ड प्रतिरोधियों की "शरीर राजनीति" को कमजोर कर देते हैं, और केंद्रीय सरकार के हस्तक्षेप की संभावना को घटा देते हैं।

हाउसहोल्ड प्रतिरोधियों के द्वारा लंबे समय के विरोध इन प्रक्रियाओं को बेशक जटिल बना देते हैं। किसान जो अपने घरों को छोड़ने के लिये इनकार कर देते हैं, लंबा विलम्ब और तेजी से इकठ्ठा होते ब्याज भुगतान पैदा कर, कभी.कभी छोटी गैर जिम्मेदार रियल एस्टेट कंपनियों को दिवालियेपन में धकेल देते हैं।

परंतु जब प्रतिरोधी रियल एस्टेट दैत्यों का सामना करते हैं जो प्रक्रिया में कुछ देरी बर्दाश्त कर सकते हैं, किसान घर मूलभूत रूप से शक्तिहीन हो जाते हैं। रोजमर्रा के विरोध में, नेल हाउसहोल्ड विध्वंस टीम से लगातार उत्पीड़न सहन करते हैंः उनकी खिडकियां बदमाशों द्वारा तोड़ी जा सकती हैं, और स्थानीय नगरपालिका सरकारों द्वारा पानी और बिजली काटी जा सकती है। इनमें से कई प्रतिरोधियों के लिये, लंबी शारीरिक और मनोवैज्ञानिक यातनायें स्ट्रोक्स, दिल के दौरे, चिंता या अवसाद को शुरू कर खतरनाक साबित हो सकती हैं। जब तक बुलडोजर अंतिम छापे में घर को समतल करता है, रियल एस्टेट डेवलपर्स पहले से ही प्रतिरोधियों को मानसिक और शारीरिक तौर पर थका चुके होते हैं।

सभी नेलहाउसहोल्ड उचित मुआवजे के लिये लड़ाई करते हैं, उनके विरोध करने के कारण अलग अलग होते हैं। शहरी क्षेत्रों के पास, कुछ घर भयंकर लड़ाई लडते हैं, क्योंकि स्थानांतरण उनकी आय के प्रमुख स्त्रोत को बंद कर देता हैः कई "शहरी ग्रामीण" प्रवासी श्रमिकों और कार्यालय कर्मचारियों को कमरे किराये पर देते हुये या भूतल पर छोटे व्यवसाय शुरू करते हुये, अपने भूखंड पर बहुमंजिला घर बना लेते हैं। परिधीय ग्रामीण कस्बों में, किसान नेल हाउसहोल्ड बन सकते हैं क्योंकि वे उस अपार्टमेंट को वहन करने में असमर्थ होते हैं, जो उन्हें दिया जा रहा होता है। अपने बच्चों को अपार्टमेंट खरीदने में मदद करने के बाद, पुरानी पीढी प्रायः आधे नष्ट किये घर में पीछे रह जाती है, क्योंकि उनके पास रहने के लिये कोई और जगह नहीं होती है।

चाहे कोई भी बात हो कि क्यों किसान "नेलस्" बन जाते हैं, ये संघर्ष नुकसान पहुचातें है। एक गांव में, मैनें एक बुर्जुग प्रतिरोधी को गुस्से मे यह शपथ लेते हुये कि वह बदला लेगा, स्वयं को रियल एस्टेट कर्मचारी सदस्य के खडी कार के नीचे गिरता देखा। एक लंबी लकड़ी की छड़ी लहराते हुये, प्रतिरोधी ने, अपनी पत्नी सहित जो भी उसके पास आयेगा, को चोट पहुंचाने की धमकी दी, जो उसको शांत करने की कोशिश कर रहे थे। प्रतिरोधी का चेहरा लाल हो गया और उसकी सांसे फूलने लगी, और उसकी पत्नी के आंसू बह निकले। उसकी पत्नी चिल्लाई "यह उसका दिल है। मैं जानती हूं, अगर हम इसी तरह रहते रहे तो एक दिन दिल का दौरा इनकी जान ले लेगा।" परंतु कोई सुनता हुआ नहीं दिखायी दिया। ■

सभी पत्राचार युए दु को <yue.du@wisc.edu> पर प्रेषित करें।

> वैश्विक संवाद का रोमानियाई दल

| राइसा गेब्रियेला जमीफिरेस्कू

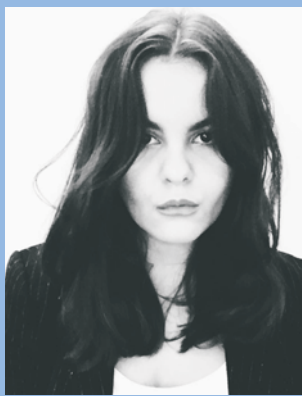

| डायना–एलेक्जेंड्रा दुमित्रेस्कू

| जूलियन गेबोर

| रोडिका लिसेनू

| मदालिना मानेआ

| बियांका मिहाइला

| एंड्रिया मोल्दोवियानू

| ओना–एलेना नेग्रिया

| मोयोरा पारस्चिव

GLOBAL DIALOGUE

> >

राइसा गेब्रियेला जमीफिरेस्कू, अभी बुखारेस्ट विश्वविद्यालय में पीएच.डी. की विद्यार्थी हैं। उन्होंने समाजशास्त्र में स्नातक की उपाधि समाजशास्त्र एवं समाज कार्य संकाय (बुखारेस्ट विश्वविद्यालय) से ली है। उनके पास दो स्नात्कोत्तर उपाधि हैं, एक आंतकवाद से मुकाबला करने में सूचना प्रबंधन ("मिहायी विटियजुल" नेशनल इन्टेलिजेंस अकादमी, रोमानिया) में एवं दूसरी, सूचना विश्लेषण एवं सुरक्षा अध्ययन में (बुखारेस्ट विश्वविद्यालय एवं रोमानियन इन्टेलिजेस सर्विस का संयुक्त प्रोग्राम)।उनकी रूचि बहुल विषयों में सुरक्षा से लैंगिक अध्ययन एवं समूह विश्लेषण। उनका शोध कार्य, टेलिविजन विशेषतः अमेरिकन टी.वी. प्रोग्राम में, इन्ही विषयो पर केन्द्रित है।अभी वो सांख्यकी एवं राजनीतिक समाजशास्त्र में सेमिनार पढाती हैं।

डायना–अलेक्सेन्ड्रा दुमिट्रेसक्यू, बुखारेस्ट विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विषय में पीएच.डी. की विद्यार्थी हैं। उन्होंने समाजशास्त्र एवं समाज कार्य संकाय (बुखारेस्ट विश्वविद्यालय) से समाजशास्त्र में स्नातक की उपाधि ली है। इनके पास दो स्नातकोत्तर उपाधि हैं, एक वैश्विक मीडिया एवं संचार में (वारविक विश्वविद्यालय, यू.के.) एवं दूसरी सूचना विश्लेषण एवं सुरक्षा अध्ययन में (बुखारेस्ट विश्वविद्यालय एवं रोमानिया इन्टेलिजेंस सर्विस का संयुक्त प्रोग्राम)। वर्तमान में वो बुखारेस्ट विश्वविद्यालय के शोध संस्थान के समाजविज्ञान इकाई में सहायक प्रोजेक्ट मैनेजर है (आई.सी.यू.बी.) एवं रिसर्च मैथेडोलॉजी पर सेमिनार पढाती हैं।

यूलियन गेबोर, बुखारेस्ट विश्वविद्यालय में पी.एच.डी. के विद्यार्थी हैं। वो साझा आर्थिकी में रूचि रखते हैं , विशेषतः कार साझा, साझा गतिकी, ऑनलाइन सवारी साझा समुदाय, सतत एवं हिचहाइकिंग। नृवंशविज्ञानशास्त्री के रूप मे उनका शोधकार्य उपभोगताओं के व्यवहार पर केन्द्रित है। वो एक पर्यावरणीय गैर सरकारी संस्थान में भी कार्य करते है एवं सकारात्मक रूप से सोचते है कि शोध, सृजनात्मकता एवं प्रौद्योगिकी के समावेश वाले हमारे ज्ञान से हमारी कई भविष्य की समस्यायो का समाधान हो सकता है।

रोडिका लिसिअनु, बुखारेस्ट विश्वविद्यालय में पी.एच.डी. की विद्यार्थी है। उन्होने समाजशास्त्र एवं समाजकार्य संकाय से सुरक्षा अध्ययनों में एम.ए. किया है एवं बुखारेस्ट विश्वविद्यालय एवं इकोल डेस हुयटस इटूडीस इन साइंसिस् सशिएलेस (ई.एच.ई.एस.एस) पेरिस से एम.ए. किया है। उनकी शोध रूचि शिक्षा का समाजशास्त्र में है।वे अभी रोमानिया के स्कूल छोडने वाले बालकों पर अध्ययन कर रही है। यह अध्ययन स्कूल छोडने के कारण, परिणाम एवं अदृश्य स्कूल छोडने वालो के सामाजिक कर्ताओ पर विशेषतः केन्द्रित है।

मेडालीना मेनिआ ने नौटिंगम ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, यू.के. से राजनीति में स्नातक एवं बुखारेस्ट विश्वविद्यालय से अग्रवर्ती समाजशास्त्रीय शोध में एम.ए. किया है। अपनी पी.एच.डी. के प्रारम्भ से बुखारेसट विश्वविद्यालय के प्रवास अध्ययन केन्द्र की शोध टीम का भाग होने के कारण उन्होने दो अंतराष्ट्रीय प्रोजेक्ट वाई मोबिलिटी एवं टेनपर पर कार्य किया है।

बिआन्का मिहेला, बुखारेस्ट विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र एवं समाजकार्य संकाय में एम.ए. की विद्यार्थी है। उनकी शोध रूचि अंतराष्ट्रीय सह–लेखन नेटवर्क पर केन्द्रित है। इस क्षेत्र में वो शोधकर्ता की वैज्ञानिक उत्पादकता पर अंतराष्ट्रीयवाद के असर का विश्लेषण करती है। अपने कार्य में वो, सामाजिक एवं व्यक्तिगत नेटवर्क विश्लेषण का प्रयोग करती है। वर्तमान में वो वाल्टर डीग्रुएटर इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ सोशल रिसर्च की प्रबंध संपादक है।

ऐन्ड्रिआ मोलडोविआनू वर्तमान में बुखारेस्ट विश्वविद्यालय में पी.एच.डी. की विद्यार्थी है। उन्होने समाजशास्त्र एवं समाजकार्य संकाय से एम.ए. की उपाधि ली है। उनके मुख्य शोध रूचि, शोध–विकास–नवाचार सैक्टर में जन एवं केन्द्र प्रशासन से जुड़ी है। उनकी रूचि बहुआयामी है। जो ग्राफिक उपन्यास एवं कॉमिक्स में लोकप्रशासन से लेकर वृद्धावस्था की समस्याओ तक विस्तृत है। वर्तमान में वो सामाजिक शोध की कार्यप्रणाली पर सेमिनार पढाती हैं।

ओआना–एलीना नेग्रिया वर्तमान में समाजशास्त्र विषय में पी.एच.डी. की विद्यार्थी है।उन्होंने बुखारेस्ट विश्वविद्यालय से स्नातक और स्नातकोत्तर किया है। उनके मुख्य शोध विषय सामाजिक असमानता एवं लैंगिक अध्ययन हैं, जो रोमानियाई श्रम बाजार में आर्थिक लैंगिक असमानता एवं लैंगिक सेक्टर अलगाव पर फोकस करते हैं। वे भी समाजशास्त्रीय शोध पद्धति एवं तकनीक पर पाठ्यक्रम में सहायक शिक्षक है।

मिओआरा पैरासचिव ने समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान में स्नातक किया है। वर्तमान में वे बुखारेस्ट विश्वविद्यालय में पी.एच.डी. की विद्यार्थी है। उनकी डाक्टोरल थीसिस कारावास में या परिवीक्षा सेवा में नामांकित यौन अपराधियों के लिए डिजाइन किये गये प्रोग्राम पर फोकस करती हैं। वर्तमान में वो परीवीक्षा परामर्शदाता की तरह कार्य कर रही हैं। ■